न रा
का स
उपक्रम-1 दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ स्वर

वर्ष 10, अंक 16

जनवरी–दिसम्बर, 2021

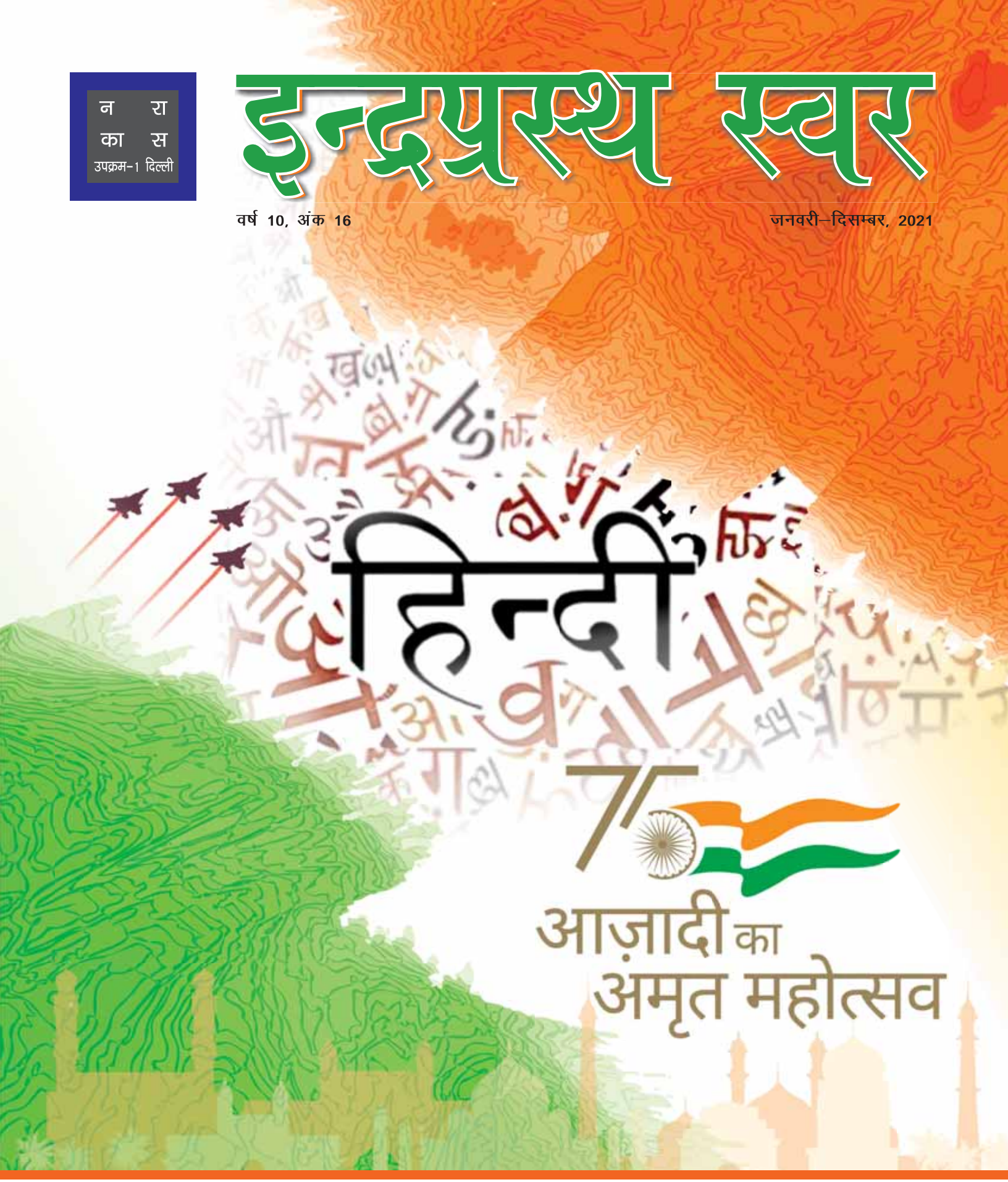

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली
अध्यक्षताः भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित मुख्यालय

पेड़ का दर्द

कितने प्यार से किसी ने
बरसों पहले मुझे बोया था
हवा के मंद–मंद झोंको ने
लोरी गाकर सुलाया था।

कितना विशाल घना वृक्ष
आज मैं हो गया हूँ
फल–फूलों से लदा
पौधे से वृक्ष हो गया हूँ।

कभी–कभी मन में
एकाएक विचार करता हूँ
आप सब मानवों से
एक सवाल करता हूँ।

दूसरे पेड़ों की भांति
क्या मैं भी काटा जाऊँगा
अन्य वृक्षों की भांति
क्या मैं भी वीरगति पाउँगा।

क्यों बेरहमी से मेरे सीने
पर कुल्हाड़ी चलाते हो
क्यों बर्बरता से सीने
को छलनी करते हो।

मैं तो तुम्हारा सुख
दुःख का साथी हूँ
मैं तो तुम्हारे लिए
साँसों की भांति हूँ।

मैं तो तुम लोगों को
देता ही देता हूँ
पर बदले में
कुछ नहीं लेता हूँ।

प्राण वायु देकर तुम पर
कितना उपकार करता हूँ
फल–फूल देकर तुम्हें
भोजन देता हूँ।

दूषित हवा लेकर
स्वच्छ हवा देता हूँ
पर बदले में कुछ नहीं
तुम से लेता हूँ।

ना काटो मुझे
ना काटो मुझे
यही मेरा दर्द है।
यही मेरी गुहार है।

यही हम सब पौधों
और वृक्षों की पुकार
बस यही हमारी पुकार है।
जय हिन्द जय भारत।

गौरव सक्सेना
(उप महाप्रबंधक)
बी.ई.एम एल लिमिटेड

uxj jktHkk"kk dk;kUo;u lfefr ¼miØe&1½] fnYYh

इन्द्रप्रस्थ स्वर

vd% 16 tuojh&fnlcj] 2021 ¼l;Drkd½

e[; lj{kd
ltho dekj
अध्यक्ष

ln'k
v'kyh vk;k
सचिव, राजभाषा विभाग

lj{kd
vfuy dekj ikBd
सदस्य (मानव संसाधन)

ekxn'ku
luhy nÙk
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)

ic/k lkind
ltho dekj
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, नराकास

lg&lkind
pUndyk feJk
वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (राजभाषा)–बी एच ई एल

fo'k"k ;kxnku
jhrk v:.k efyd
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के लिए और
उसकी ओर से आंतरिक वितरण के लिए प्रकाशित

'इंद्रप्रस्थ स्वर' में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की उनसे सहमति हो, अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

इस अंक में

मुख्य संरक्षक की कलम से	02
संदेश	03
संरक्षक की कलम से	04
मार्गदर्शन	05
प्रबंध संपादक की कलम से	06
ग्रीन एज डेटा सेंटर की तैनाती	07
एक दिन इंसान जरुर पछताएगा	10
बेड़मी पूरी	11
माँ को समर्पित	12
इस धरा पर, सब यहीं धरा रह जाएगा।	13
निगेटिव बातें एवं उसके दुष्प्रभाव	14
बॉडी लैंग्वेज झूठ न बोले	15
गजल	15
महिला सशक्तिकरण	16
जीवन का सत्य ....?	17
मानवीय चेतना के स्तर और उत्कृष्ट जीवन	18
किसान जीवन का संघर्ष	23
पिता को समर्पित	24
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष के दौरान आयोजित गतिविधियां	25
संचार गीत	25
भाषा का विकास और उसमें सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान	26
डिजिटल भुगतान	29
खिडकी वाली सीट	34
एक माँ–बाप की कहानी	35
सीढ़ी चाँद तक	36
"यह भी कट जाएगा"... प्रेरणा का स्रोत	37
क्या लिखूं	38
स्वतंत्र भारत@75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता	39
छत्तीसगढ़ के आदिवासी प्रखण्ड बस्तर की सैर	40
"आष्टांग योग"	45
समय की रेत	46
महाकवि कोकिल विद्यापति	47
रक्तदान	48
कूटभेषज	51
देश प्रेम	53
"नर्मदा यात्रा" संस्मरण	54
नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स एंड शेड्यूल्ड ट्राइब्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन	59
पंचतत्व से सब हैं, जन्में ....!!	61
पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड	62
शब्दों के शहर में	63
गेंद	64
सब ठीक है	67
स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद देश की भाषा हिंदी की स्थिति।	68
नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों का विवरण	70
नराकास(उपक्रम–1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों का विवरण	73
नराकास(उपक्रम–1) दिल्ली के सदस्य कार्यालयों द्वारा नराकास के तत्वावधान में वर्ष 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम	76

संजीव कुमार, भा.प्र.से.
SANJEEV KUMAR, IAS
अध्यक्ष
Chairman
दूरभाष / Phone : 011-24632930
24622796
फैक्स / Fax : 011-20818201
ई–मेल / E-mail : chairman@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गाँधी भवन
Rajiv Gandhi Bhawan
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003
Safdarjung Airport, New Delhi-110003

मुख्य संरक्षक की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की गृह पत्रिका **'इंद्रप्रस्थ स्वर'** का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। नराकास द्वारा अपनी गतिविधियों तथा सदस्य कार्यालयों की लेखकीय प्रतिभा के उन्नयन हेतु गृह पत्रिका का प्रकाशन करना एक सराहनीय कार्य है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

गृह पत्रिकाएँ सरकारी कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की हिन्दी के प्रति रुचि और उनके द्वारा हिन्दी में कार्य करने की प्रवृत्ति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। इस प्रकार गृह पत्रिका का प्रकाशन न केवल राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रस्तुत करने के लिए एक सुदृढ़ एवं सबल मंच है।

जैसाकि विदित है कि वर्तमान में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव का उद्देश्य सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए नवभारत का निर्माण करना है। भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के बाद भी स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आइए, इस नवभारत के निर्माण में हम राजभाषा हिन्दी की महत्ता को पहचानें और दिन–प्रतिदिन के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दें।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारे सदस्य कार्यालय आपसी सहयोग और समन्वय से राजभाषा विभाग द्वारा सौंपे गए दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करेंगे, साथ ही गृह पत्रिका **'इंद्रप्रस्थ स्वर'** के प्रकाशन हेतु अपना रचनात्मक सहयोग भविष्य में भी इसी प्रकार प्रदान करते रहेंगे।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

संजीव कुमार

(संजीव कुमार)
अध्यक्ष

अंशुली आर्या, आई.ए.एस.
ANSHULI ARYA, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित मुख्यालय, नई दिल्ली के तत्वावधान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली द्वारा अपनी पत्रिका **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** के जनवरी–दिसंबर, 2021 के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री – नरेन्द्र मोदी जी ने कहा है – ''भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।'' हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी व्यापकता, वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता व सुबोधता रही है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में गृह–पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है और इनके प्रकाशन से अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में मूल लेखन एवं अपने शासकीय कार्यों को हिंदी में करने के लिए प्रेरणा प्राप्त होती है।

मुझे विश्वास है कि नराकास(उपक्रम–1), दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिंदी पत्रिका **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** का 16वां अंक राजभाषा के प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

अंशुली आर्या

ए के पाठक
A K PATHAK
सदस्य (मानव संसाधन)
Member (Human Resource)
कार्यालय/Office : 91-11-24632950
फैक्स/Fax : 91-11-24632990
ई-मेल/E-mail : memberhr@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, 'सी' ब्लॉक
Rajiv Gandhi Bhawan, 'C' Block
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

संरक्षक की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा नराकास उपक्रम–1 की पत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर" पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है। "इंद्रप्रस्थ स्वर" पत्रिका केवल कार्यालयीन हिन्दी के प्रोत्साहन के साथ कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को भी सभी के सामने मुखर करती है।

हिन्दी हमारी केवल राजभाषा ही नहीं है। यह हमारी संपर्क भाषा भी है। आज भारत के हर कोने में हिन्दी बोली जा रही है। हिन्दी ने अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को भी अपने विशाल हृदय में समाहित किया है। इसके साथ ही आज तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी के वर्चस्व में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। यह हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है। हम विश्व के किसी कोने में यूनिकोड फॉन्ट के द्वारा हिन्दी में मेल भेज सकते है, वॉइस टाइपिंग कर सकते है। कंठस्थ टूल के माध्यम से अनुवाद में सहायता ली जा सकती है।

आज कार्यालयी हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग हेतु अनेक साधन उपलब्ध हैं। आज आवश्यकता है कि एक कदम आगे बढ़कर हिन्दी को कूप जल से निकाल बहता नीर बनाने की और यह तब संभव होगा जब हम सभी अपना कार्यालयीन कार्य राजभाषा में काम करेंगे।

मैं यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी नराकास उपक्रम–1 (दिल्ली) के सभी सदस्य पूर्ण निष्ठा के साथ राजभाषा के कार्यान्वयन में अपना योगदान देते रहेंगे।

नव वर्ष 2022 की नराकास के परिवार को हार्दिक बधाई।

आपका

अनिल पाठक

ए के पाठक
सदस्य (मानव संसाधन)

सुनील दत्त
SUNEEL DUTT
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन/प्रशासन)
Executive Director (HR/Administration)
कार्यालय/Office : 91-11-20818221
फैक्स/Fax : 91-9501100068
ई-मेल/E-mail : edadmin@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, ए-ब्लॉक, कमरा न. 22
Rajiv Gandhi Bhawan, A-Block, Room No. 22
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

मार्गदर्शन

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नराकास (उपक्रम–1) की पत्रिका "इंद्रप्रस्थ" स्वर का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को सबके सम्मुख लाती है। साथ ही साथ यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन में भी अपना योगदान देती है।

राजभाषा हिन्दी को अपने दैनिक कार्यक्रम में शामिल करने से न केवल हम अपने कार्यालयीन दायित्व को पूरा करते हैं बल्कि अपनी अस्मिता को भी सुरक्षित करते हैं। हम सभी जानते हैं कि भाषा किसी भी देश की अस्मिता होती है और हमारी अस्मिता हिन्दी से जुड़ी है। अपने अस्तित्व को सुरक्षित करना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि दायित्व भी है। इसलिए हमें अपना कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करना चाहिए।

नराकास (उपक्रम–1) की पत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर'' का भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में काफी योगदान रहता है। नराकास (उपक्रम–1) के सदस्य कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन की गति को बढ़ावा देने के लिए अपना सम्पूर्ण योगदान देते हैं।

मैं यह आशा करता हूँ कि हमें नराकास (उपक्रम–1) के सदस्यों का साथ हमेशा मिलता रहेगा। आप सभी के सहयोग से हम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में सफल होंगे। अंत में नराकास (उपक्रम–1) के सभी सदस्यों एवं उनके परिवार को मेरी ओर से नव वर्ष की हार्दिक बधाई।

आपका

सुनील दत्त
कार्यपालक निदेशक(प्रशासन)

प्रबंध संपादक की कलम से

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम–1, दिल्ली की पत्रिका "इंद्रप्रस्थ स्वर" का नया अंक आप सभी के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

यह पत्रिका पूरे वर्ष के दौरान नराकास द्वारा आयोजित होने वाले विभिन्न गतिविधियों का एक संकलन प्रस्तुत करती है। साथ ही सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को भी सबके सामने लाती है।

कोरोना के इस विषम परिस्थिति के समय में भी राजभाषा कार्यान्वयन की गति को हमारे नराकास परिवार ने कम नहीं होने दिया। इस पत्रिका में हम वर्ष 2021 में होने वाली गतिविधियों को आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

नराकास की छमाही बैठक का सफल आयोजन वर्चुअल माध्यम से फरवरी और अगस्त माह में किया गया। जिसमें सदस्य कार्यालयों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। इस वर्ष नराकास के तत्वावधान में कंठस्थ एवं कंप्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग संबंधी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। साथ ही सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को हिन्दी में प्रोत्साहित करने के लिए नवंबर एवं दिसंबर माह में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पत्रिका के इस अंक में कविता, कहानी तकनीकी लेख आदि प्रकाशित किए गए हैं। पत्रिका में छपने वाले श्रेष्ठ लेखों को पुरस्कृत भी किया जाता है। मैं आशा करता हूँ कि पिछले अंकों की भांति यह अंक भी आप सभी को पसंद आएगा। अंत में आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

संजीव कुमार
संयुक्त महाप्रबन्धक (राजभाषा)
एवं सदस्य–सचिव, नराकास(उपक्रम–1) दिल्ली

ग्रीन एज डेटा सेंटर की तैनाती

एज कंप्यूटिंग से अभिप्राय एंड–यूजर के नजदीकी नेटवर्क एज के लॉजिकल एक्ट्रीम पर कंप्यूटिंग सोल्यूशंस (एप्लीकेशंस और सर्विसेस) की डिलीवरी से है। उदाहरण के लिए, इंटरनेट ऑफ थिंग्स को व्यापक तौर पर अथवा मशीन–से–मशीन के डेटा को एज कंप्यूटिंग के द्वारा प्रोसेस किया जा सकता है और केवल सर्वाधिक अपेक्षित सूचना एक केंद्रीकृत डेटा सेंटर को भेजी जाती है, इस प्रकार दुर्लभ नेटवर्क संसाधनों की बचत होती है।

एज कंप्यूटिंग घटी हुई नेटवर्क लागतों, एप्लीकेशन लेटेंसी के संदर्भ में सेवाएं उपलब्ध कराती है और इस प्रकार बेहतर ग्राहक अनुभव उपलब्ध कराती है।

सेंट्रलाइज डेटा सेंटर अथवा हाइपर स्केल क्लाउड प्रोवाइडर मॉडल बड़ी मात्रा में रिसोर्स डिलीवर करते हैं और स्केल की इकोनॉमी के माध्यम से लाभ प्राप्त करते हैं। पार्टियां अपनी क्षमता, महत्वपूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर, एप्लीकेशंस, क्लाउड सर्विसेस, स्टाफ और एक लोकेशन में पीरिंग को साझा करती हैं।

इस मॉडल में एज डेटा सेंटर द्वारा उन एप्लीकेशन आवश्यकताओं को सहयोग दिया जायेगा जो केंद्रीकृत डेटा सेंटरों से प्राप्त लंबे नेटवर्क लिंक से सहयोग नहीं पा सके। इससे कम्युनिकेशन लेटेंसी और लांग–डिस्टेंस ट्रांसमिशन लागतें जैसी बाधाओं से मुक्ति मिलेगी और इंटरनेट ऑफ थिंग्स तथा नेक्स्ट जनरेशन लेटेंसी सेंसटिव एप्लीकेशंस को सहयोग करना संभव हो सकेगा। यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि एज डेटा सेंटर नेटवर्क तथा कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की भौगोलिक सीमा को रिलोकेट करते है; यह वर्तमान कंप्यूटिंग डिजाइन और नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए सहायक होता है। एज और कोर अपने आप में पूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण करते हैं, जहां एप्लीकेशंस की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं में लेटेंसी, कार्यनिष्पादन, सिक्योरिटी और लागत, संसाधनों की लोकेशन का निर्धारण करते हैं।

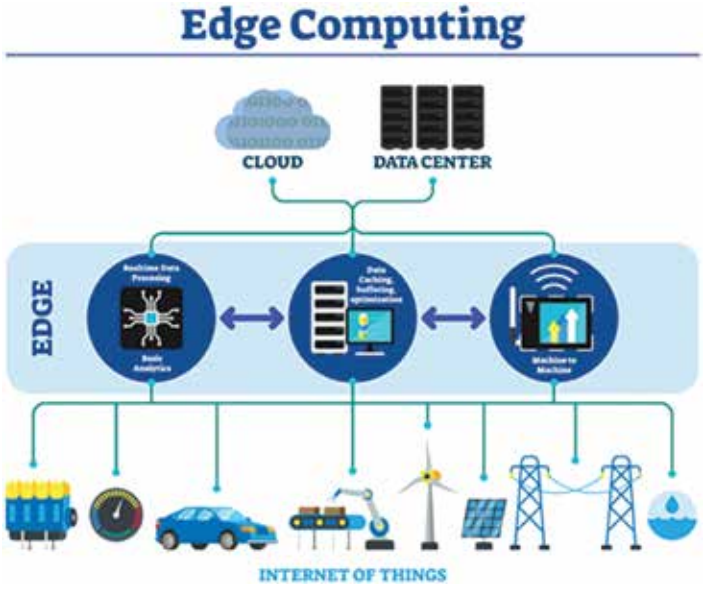

yVi lh dk egRo

आज, अनेक आधुनिक नेटवर्क की गतिविधियां, जैसे कंटेंट स्ट्रीमिंग और इंटरएक्टिव एंटरटेनमेंट, बैंडविड्थ से अधिक लेटेंसी के कारण सीमित हो जाते हैं। नेक्स्ट जनरेशन एप्लीकेशंस जैसे कनेक्टिड कारें, एआर/वीआर और ड्रोन टेक्नोलॉजी एप्लीकेशन लेटेंसी पर अधिक निर्भर होती हैं। उच्च–विश्वसनीयता, कम लेटेंसी वाले नेटवर्क, नेटवर्क विश्वसनीयता पर निर्भर करते हैं ताकि निरंतर लो–लेटेंसी और हाई–कैपेसिटी डिलीवर कर सकें। कई एप्लीकेशंस, जैसे इंडस्ट्री 4.0 स्टेंडर्ड पर आधारित इंडस्ट्रियल इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IIoT), रोलिंग स्टॉक की प्रीडिक्टिव और प्रीवेंटिव मेनटेनेंस, ऑटोनोमस कार, मेडिकल टेक्नोलॉजी, ड्रोन और विभिन्न पब्लिक सेफ्टी सिस्टम गारंटीड रेस्पांस टाइम पर निर्भर करते हैं।

नेटवर्क की दूरी बढ़ने से डेटा ट्रांसमिशन लेटेंसी बढ़ती है। लांग–डिस्टेंस ट्रांसमिशनों में अत्यधिक अंतर्निहित लेटेंसी होती है जो कई उभरती एप्लीकेशंस को सहयोग नहीं करती है।

, t MVk lVj d cuku d e[; fcUn

किसी डेटा सेंटर के विकास और डिलीवरी में महत्वपूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर सेवाएं आधारभूत भूमिका अदा करती हैं। एज डेटा सेंटरों को वितरित सेवाओं की व्यापक वैराइटी को सहयोग करने के साथ साथ उपयुक्त उपलब्धता तथा निवेश की लागतों को ध्यान में रखना अपेक्षित होता है, इसलिए नए डिजाइन और संचालन प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है।

d½ yk d'ku

पारंपरिक डेटा सेंटर साइटों का चयन बड़े तौर पर भौगोलिक रूप से किया जाता है, जिनमें ऊर्जा की उपलब्धता तथा लागत, ग्राहक की मांग, रियल–एस्टेट के मूल्य और फिजीकल तथा सिक्योरिटी रिस्क के कारक को भी शामिल किया जाता है। तथापि, एज डेटा सेंटर के लिए, स्थल का चयन सेवा की लेटेंसी के अनुसार तय

होगा, जो नेटवर्क के संसाधनों को एक्सेस प्रदान करता हो।

,t MVk lVj ykd'ku d mnkgj.kk e 'kkfey g%

- किसी गली के नुक्कड़ पर अथवा किसी अन्य यूटिलिटी उपकरण के समीप स्थित केबिनेट
- विद्यमान मेक्रो सैल साइट शेल्टरों का पुर्नउपयोग
- मेक्रो सैल साइटों पर नए शेल्टर/केबिनेट स्थापित करना
- सेंट्रल ऑफिसिस के भीतर को–लोकेशन
- बिल्डिंग/स्मार्ट बिल्डिंग में
- इंडस्ट्रियल इंटरनेट ऑफ थिंग्स को सपोर्ट करने के लिए फैक्ट्रियों/उत्पादन इकाइयों में
- गैस स्टेशनों, दवा की दुकानों और अन्य बिजनेस के पीछे अथवा उनके साथ स्थित।

फलस्वरूप, एज डेटा सेंटर साइट के चयन के लिए ऐसे स्थलों को चुनने की आवश्यकता होगी जिनकी आदर्श से कम मौसमी अनुकूलता हो, जनसंख्या घनत्व (शहरी) और मेक्रो ऑपरेशनल रिस्क फैक्टर कम हों, साथ ही बाढ़ वाले क्षेत्रों, भूकंप बाहुल्य क्षेत्रो और हवाई अड्डों के आसपास न हों। एज डेटा सेंटर लोकेशन का मापदंड नए एवं अभिनव डिजाइन के माध्यम से सुरक्षा और उपलब्ध आवश्यकताओं पर भी खरा उतरता हो।

[k½ lpkyu lc/kh tkf[ke vkj mudk egRo

एज डेटा सेंटरों में उपलब्धता और रिपेयर के लिए मीन टाइम (MTTR) महत्वपूर्ण कारक होते हैं। यह देखते हुए कि एज डेटा सेंटर साइट दूरस्थ तथा मानवरहित होते हैं, सर्विस आउटेज तथा अधिक परिचालनिक व्यय को न्यूनतम करने की रणनीति महत्वपूर्ण डिजाइन मापदंड होते हैं।

x½ i;koj.kh; lpkyu dkjd

पारंपरिक डेटा सेंटर संचालक, डेटा सेंटर के संचलन वातावरण पर कड़ा नियंत्रण रखता है, जबकि एक एज डेटा सेंटर छोटा, मानवरहित हो सकता है तथा तेल पाइपों के बीच रेगिस्तान में भी स्थित हो सकता है– वस्तुतः यह पारंपरिक डेटा सेंटर की नियंत्रित मॉनिटरिंग तथा सीमित वातावरण संचालन से भिन्न होता है। आधुनिक कनेक्टिविटी, स्टोरेज और कंप्यूटर हार्डवेयर को नियमित तौर पर विपरीत परिस्थितियों में भी ऑपरेट किया जा सकता है। संचालन वातावरण में छूट मिलने पर मैकेनिकल कूलिंग की आवश्यकता में बहुत कमी आ जाती है, साथ ही साथ कूलिंग के लिए पॉवर की आवश्यकता भी कम हो जाती है।

LekVl jk lkY;'ku

रेलटेल ने बेंगलुरू, चेन्नै, मुंबई, कोलकाता और सिकंदराबाद स्थित ग्रीन एज डेटा सेंटरों के लिए स्मार्ट रो सोल्यूशन डिप्लॉय किए हैं। प्रत्येक एंड पर स्मार्ट रो सोल्यूशन के दो रैक हैं जिनके लिए प्रीसिजन एसी यूनिट की व्यवस्था है और इनके लिए रूम एयर कंडीशनर की आवश्यकता नहीं होती। सर्वर रैकों के आगे तथा पीछे की ओर बढ़ा हुई प्लेनम होता है जो क्रमशः कोल्ड एवं हॉट गलियारे के रूप में कार्य करता है ताकि इष्टतम कूलिंग हो सके तथा ऊर्जा की खपत कम हो सके, जिससे वह एक ग्रीन एज डेटा सेंटर के रूप में काम कर सके। इस सिस्टम में फायर सप्रेसन, स्मोक और फ्लेम डिटेक्शन सिस्टम उपलब्ध कराया जाता है तथा सेंट्रलाइज मैनेजमेंट के लिए सीसीटीवी कैमरे तथा इंटरनेट ऑफ थिंग्स की व्यवस्था की जाती है। लंबे समय तक बिजली न रहने के मामले में तथा एक निश्चित तापमान पर रेक स्वतः खुलते हैं और वातावरण को ठंडा रखते है। अतः इससे मेनटेनेंस टीमों को साइट पर पहुंचने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है।

यह सिस्टम आईटी लोड के लिए इंटेलिजेंट पावर मेनेजमेंट का उपयोग करता है। समस्त ग्रीन एज डेटा सेंटरों का प्रबंधन केंद्रीकृत रूप से रेलटेल द्वारा सिकंदराबाद से किया जाता है। एज डेटा सेंटर सेंट्रल डेटा सेंटर से हाई स्पीड सिक्योर एमपीएलएस नेटवर्क के माध्यम से जुड़े होते हैं और इनका प्रबंधन केंद्रीकृत रूप से किया जाता है। स्मार्ट सोल्यूशन एक प्री–इंजीनियर्ड व्यवस्था है, जिसमें मेक इन इंडिया, फैक्ट्री फैब्रिकेटिड सोल्यूशन को इंटरनेट ऑफ थिंग्स के साथ डिप्लॉय किया जाता है, जिससे यह एक ही छत के नीचे सर्वश्रेष्ठ आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर सिस्टम/सब–सिस्टम बन जाता है।

- डेडीकेटिड सर्वर रेक्स।
- ऑपरेशन में अतिरेकता के साथ बिल्ट–इन कूलिंग सिस्टम।

- यूपीएस सिस्टम जो शत–प्रतिशत अपटाइम सुनिश्चित करता है।
- अत्यधिक उन्नत म़निटरिंग एवं कंट्रोल सिस्टम।
- प्रभावी पॉवर प्रबंधन एवं वितरण।
- केबल प्रबंधन।
- संपूर्ण सिस्टम का एक्सेस कंट्रोल।
- फायर सप्रेशन सिस्टम।

jy fuy;e] nf{k.k e/; jyo] fl dnjkckn e xhu , t MVk lVj

स्मार्ट रो इन्फ्रास्ट्रक्चर, डेटा सेंटर की श्रेष्ठ कार्य–प्रक्रियाओं और टेकिनोलॉजी का इस्तेमाल करता है ताकि अनूठे लाभ प्राप्त किए जा सकें।

1) कूलिंग यूनिटों के रिटर्न टेम्परेचर को अधिकतम करता है ताकि कार्य क्षमता और दक्षता में सुधार हो सके।

2) आईटी लोड का कूलिंग क्षमता से मेल करता है।

3) ऐसी कूलिंग डिजाइन का उपयोग करता है जिससे ऊर्जा की कम खपत हो।

4) ऐसी पॉवर मैनेजमेंट सिस्टम का उपयोग करता है जो उपलब्धता और कार्य क्षमता को इष्टतम करता हो।

5) ऐसी डिजाइन का उपयोग करता है जो फ्लेक्सिबिलिटी को बढ़ाता है और फुटप्रिंट को न्यूनतम करने वाले स्केलेबल ऑर्किटेक्चर का इस्तेमाल करते हैं।

6) रियल–टाइम में इन्फ्रास्ट्रक्चर को इष्टतम करता है ताकि संसाधनों का तेजी से प्रावधान हो सके, कार्यदक्षता में बढ़ोतरी हो सके।

7) मार्केट में उपलब्ध डेटा सेंटर डिजाइन विशेषज्ञता और तकनीकी सहायता की उपलब्धता का लाभ उठाना।

LekV jk bUÝkLVDpj lkY;'ku d ykHk

1) उच्च दक्षता वाली ऊर्जा, डेडीकेटिड कूलिंग और प्रबंधन प्रौद्योगिकी के माध्यम से वार्षिक ऊर्जा लागतें 27% तक कम होंगी।

2) अपग्रेड अथवा संशोधित किए गए रूम की लागत को कम करता है। एक पारंपरिक डेटा सेंटर के रूप में किसी रूम को अपग्रेड करने की तुलना में 28% तक की बचत होगी।

3) इंटीग्रेटिड फायर सप्रेशन से रूम–बेस्ड सिस्टम में रूम के अपग्रेडेशन की तुलना में 66% की बचत होती है।

4) कुछ मामलों में एक पारंपरिक डेटा सेंटर की तुलना में प्रीवेंटिव मेनटेनेंस लागतों में कुल मिलाकर 33% की बचत होती है।

5) कंटेएंड एयरफ्लो, डिजिटल स्क्रॉल कम्प्रेशर टेक्नोलॉजी तथा कंट्रोल्स के माध्यम से कूलिंग पावर के उपयोग में कमी आती है। जैसा पारंपरिक डिजाइनों में होता है, किसी संपूर्ण रूम की कूलिंग के बजाय स्मार्ट रो इन्फ्रास्ट्रक्चर केवल रेक स्पेस की कूलिंग करता है।

6) क्रियान्वयन के समय और लागत में कमी लाता है।

7) एक इंटीग्रेटिड सिस्टम के माध्यम से स्पेस का इष्टतम प्रयोग करता है।

8) फिजीकल सिक्योरिटी और उपकरण की सुरक्षा के लिए एक्सेस अलर्ट के साथ तालाबंद केबिनेट संरक्षा को बढ़ावा देता है।

9) इंटीग्रेटिड डेटा सेंटर इन्फ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी के प्रयोग से आईटी कंट्रोल और उत्पादकता को बढ़ावा देता है जिससे लोकेशन बदलना/ कुछ जोड़ना/ परिवर्तन करना आसान होता है और यह रिमोट मॉनिटरिंग तथा मैनेजमेंट को सहयोग देता है।

10) स्थान के उपयोग को इष्टतम करता है। स्मार्ट रो डेटा सेंटर यूनिट में केवल 39 वर्ग फीट का न्यूनतम फुटप्रिंट होता है और यह 10 फीट X 10 फीट के छोटे कक्ष में (3 रेक वाली प्राइमरी कंफीग्रेशन) फिट हो सकता है।

11) सेंट्रलाइज्ड मॉनिटरिंग सॉफ्टवेयर से किसी साधारण नेटवर्क मैनेजमेंट प्रोटेकॉल (SNMP) उपकरण की

रियल–टाइम मॉनिटरिंग हो सकती है जैसे एक्सेस, डोर खुल–बंद, फायर सप्रेसन सिस्टम, यूपीएस सिस्टम, कूलिंग इत्यादि। एडवांस ग्राफिक्स तथा यूजर–फ्रेंडली नेविगेशन से उपयोगिता को बढ़ावा मिलता है।

Hkkjrh; jsyos esa ,Iyhds'ku ,fj;k

ई–ऑफिस के डेटा की तीसरी प्रति रखने के लिए वर्तमान में एज डेटा केंद्रों का उपयोग किया जा रहा है। स्मार्ट रो पर आधारित ग्रीन एज डेटा सेंटर निम्नलिखित स्थानों पर बनाए जा सकते हैं–

1. सर्विलांस के लिए स्टेशनों के समूह से वीडियो निगरानी प्रणाली के लिए आरपीएफ थाना लोकेशनों पर
2. इंडस्ट्री 4.0 मेन्युफैक्चरिंग के इंडस्ट्रियल इंटरनेट ऑफ थिंग्स एप्लीकेशन हेतु शॉप फ्लोर के लिए ताकि मेक इन इंडिया उत्पादों की उत्पादकता में सुधार लाया जा सके।
3. एक ग्रीन एज डेटा सेंटर के सिंगल रेक सोल्यूशन मार्गस्थ स्टेशन में – ट्रेन कोलीजन एवॉइडेन्स प्रणाली, एलटीई–आर, मोबाइल ट्रेन रेडियो संचार प्रणाली के लिए डिप्लॉय किया जा सकता है।
4. जंक्शन/डिवीजनल हैडक्वार्टर स्टेशनों के लिए आईपी टेलीफॉनी, सीसीटीवी, सिगनलिंग के कंडीशन आधारित एवं प्रीडिक्टिव मेनटेनेंस तथा ट्रेन कंट्रोल सिस्टम तथा डिवीजनल कंट्रोल सेंटरों के लिए यात्री सूचना एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स के लिए डिस्पले सिस्टम।
5. सब–स्टेशन स्काडा(SCADA) एप्लीकेशन तथा और अन्य के लिए।

fu"d"kZ

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योगों में विकास से इस नई डिजिटाइज्ड जनरेशन में कई उद्योगों के बारे में हमारे विचार बदल जाएंगे। हमेशा मांग करने वाले, तीव्र कनेक्टिविटी स्पीड चाहने वाले डेटा एडिक्टिड ग्राहकों के लिए आईटी इंडस्ट्री विस्मय में है तथा इस सोच में है कि उन्हें कैसे संतुष्ट किया जाए।

समस्त क्षेत्रों में ऑटोमेशन के स्तर में बढ़ोतरी के साथ, डेटा ट्रांसमिशन में लो लेटेंसी डेटा सेंटरों की आवश्यकता बढ़ेगी, जिससे कंप्यूट पावर उपयोगकर्ता के निकट होने और एज डेटा सेंटरों की आवश्यकता को बढ़ावा मिलेगा।

एज डेटा सेंटर स्वयं अकेले नहीं रहते बल्कि एक इन्टरऑपरेबल फैबरिक तैयार करते हुए डिवाइस से कोर और कोर से क्लाउड में कनेक्ट होते हैं।

भविष्य में सेंट्रलाइज और एज डेटा दोनों सेंटरों का ऑप्टिमल मिक्स प्रयोग होगा।

& lh- ds- çlkn
कार्यपालक निदेशक, रेलटेल

एक दिन इंसान जरुर पछताएगा

एक दिन इंसान जरुर पछताएगा
अगर वो दिन–रात पेड़ों को ऐसे ही काटेगा
तो एक दिन इंसान जरुर पछताएगा
न शुद्ध ऑक्सीजन मिलेगी उसको
नहीं शुद्ध जल उसको मिल पाएगा
अगर इंसान सरेआम पेड़ों को ऐसे ही काट गिराएगा
न वर्षा होगी धरती में तो फिर इंसान क्या खाएगा
सूखी पड़ जाएगी धरती इंसान फसल कैसे उगाएगा
अगर वो दिन–रात पेड़ों को ऐसे ही काटेगा
तो एक दिन इंसान जरुर पछताएगा
जीते जी धरती को इंसान नरक बनाके छोड़ेगा
सरेआम इंसान अगर ऐसे ही पेड़ों को काटते जाएगा
तो एक दिन इंसान जरुर पछताएगा

Jh 'kkUruq j,;
कार्यपालक निदेशक
बी.ई.एम.एल. लिमिटेड

बेड़मी पूरी

दरवाजे की घंटी बजते ही शीना झट से उठी दरवाजा खोलते ही देखा कि ऊपर की मंजिल वाले 408 और 409 फ्लैट में रहने वाली नीता और रंजू सामने खड़ी थी "अरे आप दोनों आईए आईए" कहते हुए शीना उन्हें ड्राईंग रूम में ले आई।

नीता और रंजू ड्राईंग रूम में लगी पेटिंग्स को ध्यान से देखने लगीं। नीता झट से पूछ बैठी "अरे शीना जी ये कौन चित्रकार है।" शीना हंसकर बोली "अरे वो अप्रैल के पूरे महीने में लॉकडाउन था न ऑफिस का काम भी घर से ही कर रही थी बस आने–जाने का बचने वाला काफी समय कुछ घर के कामों में और कुछ पुरानी रूचियों को पूरा करने में बिताया। रोज–रोज आफिस जाते–जाते तो कभी समय ही नहीं मिला।"

"पर यह तो दस से भी ज्यादा है क्या रोज एक बनाती हो नीता बोल उठी। "अरे नहीं अप्रैल में पूरे तीस दिन थे और फिर मई में भी कहां रोज जाना हुआ। पति देव को भी अच्छी लगीं इसलिए उन्होंने इसी हफ्ते सभी फ्रेम करवा डालीं।"

"आप कहो आज मेरी याद कैसे आई"

"अरे लगातार घर रहते रहते बोर भी हो रहे थे सोचा आज आपसे ही मिलते हैं। वैसे भी आप जैसी व्यस्त सखी से मिलना कहां होता है।"

"अच्छा किया" कहते हुए शीना किचन में जाकर चाय बनाने लगी नाश्ते में बिस्किट नकमीन की प्लेटें तुरंत उनके आगे लाकर रख दीं।

रंजू बोली "आप आफिस में अच्छा समय बिता लेती हो हम तो बस घर में ही बोर होते रहते हैं।"

शीना चाय लेकर आते आते बोली "ऐसा कुछ नहीं आप घर परिवार को अच्छा समय दे पाती हो हम तो दोनों तरफ बस भागते दौड़ते रह जाते हैं। मैं तो आजकल घर में काफी सुकून महसूस कर रही हूं।"

चाय पीकर दोनों इधर–उधर की गपशप के बीच–बीच पेंटिग्स की कलात्मकता और पृष्ठभूमि के बारे में भी पूरी जानकारी ले रही थी और भीतर ही भीतर ईर्ष्या की भावना से भी ग्रस्त दिखाई दी। रंजू ने जाते–जाते कहा "अगर तुम्हें ऐतराज न हो तो मैं अपने बच्चों को दिखाने के लिए तुम्हारी दो पेटिंग्स ले जाऊं क्योंकि आप तो अब घर पर रहोगी नहीं वरना बच्चों को भेज देती। यकीन मानों जल्दी लौटा दूंगी।"

"अरे हां हां क्यों नहीं शीना ने हंसकर कहा"

रंजू ने झट से दो पेंटिग्स उठा लीं

और नीता भी बोली

"अरे भई यह उधार तो हम भी करेंगें। "शीना ने कहा" कोई ऐसी बात नहीं बस सिर्फ ध्यान रखना यह मेरी कीमती सम्पति है।"

"वाह ध्यान क्यों नहीं रखेंगें जल्दी ही वापिस करने आएंगी।"

एक सप्ताह से ज्यादा बीत गया था। शीना रोज आफिस जाने लगी थी। आज शाम को जब आफिस से लौटी तो देखा लिफ्ट के बाहर कुछ नोटिस लगा था। बटन दबाने से पूर्व शीना ने उसे पढ़ना जरूरी समझा। पढ़ा तो देखा पेंटिंग प्रतियोगिता के परिणाम थे।

प्रथम पुरस्कार विजेता : नीता

द्वितीय : रंजू

तृतीय : वंदया।

शीना अपनी उत्सुकता रोक नहीं पाई और गार्ड से पूछ बैठी अरे यह प्रतियोगिता कब हुई गार्ड बोला "मैडम 408 और 409 वाली मैडम ने तीन दिन पहले दोपहर में बेसमेंट में प्रदर्शनी लगाई थी। आप तो सुबह ही चली जाती हैं इसलिए आपको पता नहीं लगा होगा। उसी दिन अमजद भाई और निशांत भाई भी आए थे और उन्होंने ही ईनाम दिया मैडम जी पहला ईनाम 5000 दूसरा 3000 और तीसरा 1500 का था।

अमजद और निशांत माने हुए चित्रकार थे और बाजू वाली सोसायटी में उनकी आर्ट गैलरी थी शीना आफिस से आते हुए कई बार उनकी आर्ट गैलरी में गई भी थी। उसने सुन रखा था कि वे दोनों बच्चों के लिए इस तरह की प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। शीना ऑफिस में व्यस्त रहने के कारण

कभी इस ओर ध्यान नहीं दे पाई फिर उसके अपने बच्चे भी हॉस्टल में ही थे नहीं तो बच्चों से ही जानकारी मिल जाती।

शीना ने सोचा चलो कोई बात नहीं घर चलकर इंटरकॉम पर बधाई दे दूंगी लिफ्ट में जाते जाते सोचने लगी शायद ये दोनों खुद भी अच्छी चित्रकार होंगी तभी उसकी पेंटिंग्स की भी बहुत प्रशंसा कर रही थीं।

घर में आते ही देखा उसके पति समीर किचन में पहले से ही चाय बना रहे थे उसे देखते ही बोल उठे "अरे तुम नहीं गई बेड़मी पूरी पार्टी में 410 वाले गुप्ता जी तो कह रहे थे सोसायटी की सभी महिलाओं को निमंत्रण है।"

"अरे कौन सी पार्टी" शीना ने पूछा।

"वो तुम्हारी सहेलियों को कोई ईनाम विनाम मिला है जरा सोसायटी के व्हाटस ऐप ग्रुप में देखो निमंत्रण उसी में है तुम्हारा नाम भी होगा। व्हाटस ऐप ग्रुप शीना के फोन में नहीं थी इसलिए उसने झट से समीर का फोन उठा कर चेक किया तो देखा प्रथम पुरस्कार विजेता नीता और उसकी पुरस्कृत पेंटिग की फोटो ऐसे ही द्वितीय और तृतीय पुरस्कार पाने वाली रंजू और वंदया और उनकी पुरस्कृत पेंटिंग्स की फोटो थीं। उसके बाद ढेरों बधाई संदेश पेंटिग्स की खूबसूरती कलात्मकता के ढेरों कसीदे पढ़े जा रहे थे। शीना को तो मानो काटो तो लहू नहीं अजीब बात यह थी कि प्रथम द्वितीय आने वाली दोनों उसकी बनाई हुई वही पेंटिंग्स थीं जो रंजू और नीता उससे आठ दस दिन पहले मांग कर ले गई थीं। तीसरा पुरस्कार पाने वाली पेंटिंग वंदया की थी या उसने भी किसी को मूर्ख बनाया था उसे नहीं मालूम और तो और बेड़मी पूरी पार्टी के लिए निमंत्रण वाली सूची में भी उसका नाम भी नदारद था।

शीना लगभग सुबकते हुए समीर के पास पहुंची और बोली "देखो पुरस्कार वाली दोनों पेंटिंग मेरी बनाई हुई हैं ये दोनों मुझी से आठ–दस दिन पहले मांग कर ले गईं थीं।"

समीर बोले "तुम्हें इनकी नीयत का पता होना चाहिए था। चलो अब जल्दी से जाओ पार्टी में जाकर इनकी पोल खोलो।" क्यों जाऊं बिन बुलाए निमंत्रण वाली सूची में भी मेरा नाम नहीं है" समीर बोले "कैसे होता इनकी चालाकी पता नहीं चल जाती। तुम भी तो हर पेंटिग के नीचे अपने हस्ताक्षर ठीक से नहीं करतीं अब भुगतो।"

शीना स्वयं पर नियंत्रण नहीं कर पा रही थी झट इंटरकाम उठाया और नीता के घर मिलाया और तंज कसते हुए बोली बड़ी शान से छज्जू हलवाई की बेड़मी पूरी की पार्टी की जा रही है उधर से नीता की बेशर्मी भरी आवाज आई "ओह हो हो अब तो सब खत्म हो गई है देखती हूं मेरे शेयर वाली थोड़ी बची रह गई हो तो तुम्हें भी खिला देती हूं।"

शीना को ऐसा लगा कि उसने अपनी मासूमियत से अपनी मेहनत और प्रतिभा का रहा सहा अपमान भी इंटरकाम करके करवा लिया।

उसने सोचा कि एक बार व्हाट्स ऐप पर ही अपनी सारी सच्चाई लिखे पर देखा तो उस ग्रुप में सोसायटी की महिलाएं अभी भी छज्जू हलवाई की बेड़मी पूरी के चटखारे ले रहीं थीं। पढ़कर उसके हाथ से मोबाईल फिसलकर गिरा और शीना संज्ञाशून्य हो गई।

iue lHkk"k
मुख्य राजभाषा अनुवादक
उत्तरी अंचल, हिंदुस्तान पेट्रोलियम

माँ को समर्पित

टूट रहा था दिल, छूट रहा था लम्हा,
तुमसे दूर हो के, रूठ रहा था लम्हा,
सोचा था कभी तुमने कि अपनी,
गुड़िया को अनाथ छोड़ कर जाओगी,
एक ही तो गुड़िया थी आपकी उसे,
भी अकेला छोड़ जाओगी;
माँ बिन तेरे ये दिल अकेला है,
इस संसार में, ढूंढता दिल एक सहेली,
जो कल भी थी तुम, आज भी हो तुम
और कयामत तक रहोगी तुम!!

fç;dk Hkkxo
ट्रैफिक सुपरवाइज़र (एटीटी)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड

इस धरा पर, सब यहीं धरा रह जाएगा।

मैं कल अपनी पुरानी सोसायटी मैं जहां पहले मैं रहती थी। मैं वहां पर गयी थी। वहां पर मैं जब भी जाती हूं मेरी कोशिश रहती है कि अधिक से अधिक लोगों से मेल मुलाकात हो जाए। जब अपनी पुरानी सोसायटी में पहुंच कर गार्ड से बात कर ही रही थी कि तभी वहां पर एक आदमी आया और उसने मुझे झुक कर प्रणाम किया। ''भाभी प्रणाम''। मैंने पहचानने की कोशिश की बहुत पहचाना–पहचानासा चेहरा तो लग रहा था पर नाम याद नहीं आ रहा था उसी ने कहा था पहचाने नहीं/ हम बाबू हैं। बाबू इधर वाली आंटी के घर पर काम करते थे।

मैंने पहचान लिया। अरे ये तो बाबू है। सी ब्लॉक वाली आंटी का नौकर अरे तुम तो बहुत तंदरूस्त हो गए। आंटी कैसी हैं बाबू हंसने लगा आंटी तो गई, कहाँ गई। उनका बेटा विदेश में था, वहीं चली गई क्या। ठीक ही किया, उन्होंने यहां अकेले रहने का क्या मतलब था अब बाबू थोड़ा गंभीर हुआ उसने हंसना रोक कर कहा आंटी जी भगवान के पास चली गयी भगवान के पास गयी, ओह! कब यह सुनकर मुझे दुख हुआ और पूछा कब बाबू ने धीरे से कहा दो महीने हो गए। क्या हुआ था आंटी को कुछ नहीं भाभी बुढापा की बीमारी बेटे को याद करती रहती थी पर उनका बेटा बहुत दिनों से आया ही नहीं और वह अपना घर छोड़ कर वहां गई नहीं। कहती थी कि यहाँ से चली जाऊंगी तो कोई मकान पर कब्जा कर लेगा बहुत मेहनत से यह मकान बनाया है। आंटी तो चली गई अब तुम क्या करोगे। हाँ वो तो पता है तुमने तो खूब सेवा की अब बाबू फिर हंसा। क्या भाभी पहले अकेला था। अब गांव से परिवार को लेकर आ गया हूं दोनों बच्चे और पत्नी अब यहीं रहते हैं। बच्चों का स्कूल में दाखिला करवा दिया है। क्या मतलब उसी मकान में भाभी आंटी के जाने के बाद उनका बेटा आया था एक हफ्ता रूक कर चले गए मुझसे कह गए हैं कि घर को देखते रहना अब यह चार कमरे का इतना बडा घर अकेला कैसे देखता इसलिए बच्चों को भी ले आया। अब आराम से हूं कुछ –कुछ बाहर काम भी कर लेता हूं। घर का सारा सामान भी भैया यहीं पर छोड़ कर चले गए, कहने लगे इतना सारा सामान कहां विदेश लेकर जाऊगाँ इसे ले जाने का कोई फायदा नहीं, मैं हैरान थी। बाबू पहले साइकिल से चलता था। आंटी थी तो इनकी देखभाल करता था अब जब आंटी चली गई तो वह चार कमरे वाले कमरे वाले मकान में आराम से रह रहा है। आंटी अपने बेटे के पास नहीं गई कि मकान पर कोई कब्जा न कर ले''

बेटे ने मकान नौकर को दे दिया यह सोच कर कि वो रहेगा तो मकान बचा रहेगा। मुझे पता है। मकान बहुत मेहनत से बनते हैं। पर ऐसी मेहनत किस काम कि जिसके आप पहरेदार बन कर रह जाए।

मकान के लिए आंटी के बेटे के पास नहीं गई मकान के लिए बेटे ने मां को पास नहीं बुला पाया सच कहें तो हम लोग मकान के पहरेदार ही हैं। जिसने मकान बनाया वो अब दुनिया में ही नहीं है। जो है वह उसके बारे में तो बाबू भी नहीं जानता है कि वो अब यहां कभी नहीं आएंगे। फिर मैंने बाबू से पूछा क्या तुमने भैया को बता दिया कि तुम्हारा परिवार भी तुम्हारे पास आ गया है। इसमें बताने वाली क्या बात है भैया अब कौन यहां आने वाले हैं और मैं अकेला यहां क्या करता जब आएंगे तो देखेंगे। जब मां थी तो नहीं आए उनके बाद क्या आना मकान की चिंता है, तो मैं कहीं लेकर जा नहीं रहा मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं। बाबू फिर हंसा बाबू से मैंने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और वहाँ से चल दी। मैं समझ नहीं पा रही थी कि बाबू अब नौकर नहीं रहा। वो मकान मालिक बन गया है। हंसते–हंसते मैने बाबू से कहा ''भाई जिसने बात ही है। कि मूर्ख आदमी मकान बनवाता है। बुद्धिमान आदमी उसमें रहता है, उसे जिंदगी का कितना गहरा तजुर्बा रहा होगा बाबू ने धीरे से कहा,'' 'भाभी सब किस्मत की बात है। मैं वहां से चलपड़ी थी ये सोचते हुए कि सचमुच सब किस्मत की बात है। लौटते हुए मेरे कानों में बाबू की हंसी गूंज रही थी।

''मैं मकान लेकर थोड़े ही कहां जाऊंगा मैं तो देखभाल ही कर रहा हूं मैं सोच रहा था मकान लेकर कौन जाता है। सब देखभाल ही तो करते हैं। आज यह हम सभी क्या करते हैं। जिंदगी चार दिन की है। क्यू ना इसको हंसते–हंसते गुजार लें पता नहीं कब बुलावा आ जाये। क्यों कि जो है वह सब यहीं पर धरा का धरा रह जायेगा।

Jherh jkd'k jkuh t;r
राजभाषा अधिकारी
ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

निगेटिव बातें एवं उसके दुष्प्रभाव

निगेटिव बातें कितनी पावरफुल हैं, उसका अनुभव हम सभी अपनी जिन्दगी में करते हैं। यह इतना पावरफुल होता है कि हमारे दिमाग में निगेटिव बातें आती हैं, हम उसपर विश्वास करते हैं एवं सच में सामने उतर आता है। इसलिए लोग हर समय अच्छा एवं सकारात्मक बोलने की सलाह देते हैं। प्रायः यह बोलते हुए लोग पाए जाते हैं।

vc ejk dN ugh gk ldrk g

खुद को कोसने से आप अपने आपको चोट पहुंचाते हैं। इससे ये निगेटिविटी आपके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। आपकी सोच संकुचित होती जाती है। अतः इस तरह की बात बोलने या सोचने से अच्छा है कि आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करें एवं उसे पाने के लिए हर संभव कोशिश करें।

re dHkh ugh l/kjkx

इस तरह की बातें अकसर माता–पिता अपने बच्चों के लिए बोला करते हैं। बार–बार इस तरह की बातें बोलने से यह सामने वाले के जेहन में बैठ जाती हैं। वो खुद को स्वीकार करने लगता है कि वह कभी नहीं सुधरेगा। इसलिए ऐसा कभी नहीं बोलें और प्रोत्साहित करें जिससे उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन हो सके।

gj le; ij'kkuh e f?kjk jgrk g

अक्सर ऐसे लोग से आप मिलते होंगे जो इस तरह की बातें करते होंगे एवं अपना दुखड़ा रोते होंगे। दुख परेशानी से तो लगभग सभी लोग घिरे रहते होंगे लेकिन कुछ लोग समस्या के समाधान में लगे रहते हैं एवं इससे उबर पाते हैं जबकि कुछ सब्र नहीं करते हैं। याद रखें प्रकृति हर समस्या का निदान करती है एवं समय पर ही निदान होता है।

ft Unxh cdkj gk xb g

अक्सर हर किसी को यह जुमला सुनने को मिलता है। इससे पता चलता है कि व्यक्ति कितना हताश और निराश हो गया है। कुछ लोग मजे के लिए ऐसा बोलते हैं। निगेटिव बातें कभी नहीं बोलनी चाहिए। इसे सच होते समय नहीं लगता है।

यह बात अक्षरशः सत्य है कि कोई भी व्यक्ति जन्म से निगेटिव नहीं होता है। यह एक ऐसे व्यवहार है कि व्यक्ति कॉपी करके सीखता है। ऐसा वो सहानुभूति बटोरने के लिए करते हैं एवं इससे उन्हें काम में छूट भी मिल जाती है। यह व्यक्ति की आदत में विकसित होता जाता है एवं वह व्यक्तित्व निगेटीव हो जाता है।

fuxfVfoVh d çHkko

1. निगेटिव बिहेवियर पॉजिटीव बिहेवियर से अधिक ताकतवर होता है।
2. निगेटिव बिहेवियर से किसी की भी याद्दाश्त को नुकसान पहुंचता है।
3. इससे पर्सनल एवं व्यवहारिक जीवन दोनों प्रभावित होती हैं।
4. निगेटीव व्यक्तित्व के लोग किसी भी परिस्थिति का बुरा से बुरा सोचकर रखते हैं।
5. ऐसे व्यक्ति की सोचने एवं समझने की शक्ति कमजोर हो जाती है।

dl l/kkj

1. इसके लिए सर्वप्रथम सोच को बदलना होगा।
2. जीवन के प्रति नजरिया को बदलना होगा। इसके लिए कल्पनाशक्ति को बढ़ाना चाहिए।
3. इसके लिए अपने उद्देश्य को निश्चित करना होगा एवं डर या निगेटिव बिहेवियर को खत्म करना होगा।
4. आपको अपने सोच में यह लाना होगा कि मैं असफल होना नहीं चाहता। हर जगह मैं सफल होना चाहता हूं। ''नहीं'' शब्द को पूरी तरह खत्म करना होगा।
5. हम किसी पॉजिटिव बात को निगेटिव शब्द जैसे, लेकिन, परन्तु से जोड़ देते हैं। जैसे मैं पास तो हो जाऊंगा लेकिन पेपर काफी कठिन होंगे। इसकी जगह यह बोलना सही होगा कि मुझे पूरा भरोसा है कि मैं पास हो जाऊंगा।

Kku çdk'k jtu
मुख्य मानव संसाधन
हिन्दुस्तान प्रीफैब लिमिटेड

बॉडी लैंग्वेज झूठ न बोले

झूठ बोलना एक कला है। जिसमें हर कोई माहिर नहीं हो सकता। कुछ लोग इस कला में पारंगत होते हैं और कुछ नहीं। जो पारंगत होते हैं उनका झूठ नहीं पकड़ा जा सकता लेकिन जो पारंगत नहीं होते हैं उनका झूठ पकड़ना आसान होता है। बॉडी लैंग्वेज एक ऐसा आसान जरिया है जिससे आप आसानी से समझ सकते हैं कि सामने वाला व्यक्ति झूठ बोल रहा है या सच। सच बोलते समय व्यक्ति का अंदाज कुछ और होता है और झूठ बोलते समय कुछ और। लेकिन सच को नीचा दिखाने के लिए बोला गया झूठ ज्यादा देर तक नहीं छिप सकता। अब सवाल ये है कि बॉडी लैंगवेज से कैसे पहचाने कि सामने वाला व्यक्ति आपसे सच बोल रहा है या झूठ।

- vk[k lp c;k djrh g – जब भी किसी से बात करें तो उसकी आंखों में जरूर झांकें। सच बोलने वाला व्यक्ति आपसे नजरें मिला कर बात करेगा। लेकिन झूठ बोलने वाला व्यक्ति कभी आपसे नजरें नहीं मिलाएगा। बात करते समय उसकी नजरें झुकी हुई होंगी।
- yM[kMkrh vkokt – झूठ बोलने वाले व्यक्ति की आवाज उसका साथ नहीं देती। झूठ बोलते समय उसकी आवाज में आत्मविश्वास नहीं होगा और आवाज में घबराहट होगी या आवाज लड़खड़ाने लगेगी।
- gkFk&ij dk eoeV – सामने वाला व्यक्ति जब आपसे बात करते समय हाथ–पैर हिलाने लगे या पैर पीछे की तरफ मोड़ ले या हाथों को बांध ले या हाथों को जेब में डाल ले तब समझ जाएं की वो आपसे झूठ बोल रहा है।
- 'kkjhfjd xfrfof/k;k – बातों के दौरान जब कोई व्यक्ति हाथ–पैर या सिर खुजाने लगे तो समझ जाएं कि वो आपसे झूठ बोल रहा है। बातचीत के दौरान जब वो आपके सवालों का सही जवाब देने की बजाए इधर–उधर की बातें करने लगे तो इसका मतलब है वो व्यक्ति आपको गुमराह करने की कोशिश कर रहा है।
- pgjk i<u dh dkf'k'k dj – झूठ बोलने वाले व्यक्ति के चेहरे पर हवाईयां उड़ती हुई साफ नजर आती हैं जबकि सच बोलने वाले व्यक्ति का चेहरा शांत और चिंतामुक्त दिखता है।

den çlkn
राजभाषा अधिकारी
हिन्दुस्तान प्रीफैब लिमिटेड

गजल

जब तक गमें जहाँ के हवाले हुए नहीं,
हम जिंदगी को जानने वाले हुए नहीं,
कहता है, आफताब, जरा देखना कि हम,
डूबे थे गहरी रात में काले हुए नहीं,
चलते हो सीना तान के धरती पे किस लिए,
तुम आसमां तो सिर पे संभाले हुए नहीं,
अनमोल वह मोती है जहाँ की निगाह में,
दरिया कि जो तहो से निकाले हुए नहीं,
इसलिए तो उनके जहर का आसान है उतार,
ये सांप आस्तीन के पाले हुए नहीं।

bUæ dekj
वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)
हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड

महिला सशक्तिकरण

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य ykxk dk txku d fy, efgykvk dk tkx'r gkuk t:jh gA एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गांव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है।

efgyk l'kfädj.k– महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य किसी महिला की उस क्षमता से है जिससे उसमें ये योग्यता आ जाती है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हो।

Hkkjr e efgyk l'kfädj.k dh D;k t:jr g%– महिला सशक्तिकरण की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि प्राचीन समय में भारत में लैंगिक असमानता थी और पुरूष प्रधान समाज था। महिलाओं को अपने परिवार और समाज द्वारा कई कारणों से दबाया गया तथा उनके साथ कई प्रकार की हिंसा हुई और परिवार और समाज में भेदभाव भी किया गया ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी दिखाई पड़ता है। महिलाओं के लिए प्राचीन काल से समाज में चले आ रहे गलत और पुराने चलन को नए रीति–रिवाजों और परंपरा में ढ़ाल दिया गया था। भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिए माँ, बहन, पुत्री, पत्नी के रूप में देवियों को पूजने की परंपरा है लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि केवल महिलाओं को पूजने भर से देश के विकास की जरूरत पूरी हो जाएगी। आज जरूरत है कि देश की आधी आबादी यानि महिलाओं का हर क्षेत्र में सशक्तिकरण किया जाए जो देश के विकास का आधार बनेंगी।

भारत एक प्रसिद्ध देश है जिसने विविधता में एकता के मुहावरे को साबित किया है, जहाँ भारतीय समाज में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। महिलाओं को हर धर्म में एक अलग स्थान दिया गया है जो लोगों की आँखों को ढके हुए बड़े पर्दे के रूप में और कई वर्षों से आदर्श के रूप में महिलाओं के खिलाफ कई सारे गलत कार्यों (शारिरिक और मानसिक) को जारी रखने में मदद कर रहा है।

पुरूष पारिवारिक सदस्यों द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, अधिकार (काम करने की आजादी, शिक्षा का अधिकार आदि) को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया। महिलाओं के खिलाफ कुछ बुरे चलन को खुले विचारों के लोगों और महान भारतीय लोगों द्वारा हटाया गया जिन्होने महिलाओं के खिलाफ

भेदभाव–पूर्ण कार्यों के लिए अपनी आवाज उठाई। राजा राममोहन राय की लगातार कोशिशों की वजह से ही सती प्रथा को खत्म करने के लिए अंग्रेज सरकार मजबूर हुई बाद में दूसरे भारतीय समाज सुधारकों (ईश्वरचंद्र विद्यासागर, आचार्य विनोबा भावे, स्वामी विवेकानन्द आदि) ने भी स्त्री उत्थान के लिए आवाज उठाई और कड़ा संघर्ष किया। भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिए ईश्वर चंन्द्र विद्यासागर ने अपने लगातार प्रयास से विधवा पुर्नः विवाह अधिनियम 1856 में शुरू करवाया। आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकार को लेकर ज्यादा जागरूक है जिसका परिणाम यह हुआ कि कई सारे स्वयं–सेवी समूह इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। महिलाओं के खिलाफ होने वाले लैंगिक समानता और बुरी प्रथाओं को हटाने के लिए सरकार द्वारा कई सारे सवैंधानिक और कानूनी अधिकार बनाए और लागू किए गए हैं।

Hkkjr e efgyk l'kfädj.k d ekxl e vku okyh ck/kk,%&

1. सामाजिक मापदंड़।
2. कार्यक्षेत्र में शारीरिक शोषण।
3. लैंगिग भेदभाव।
4. भुगतान में असमानता।
5. अशिक्षा।
6. बाल विवाह।
7. महिलाओं के विरूद्ध होने वाले अपराध।
8. कन्या भ्रूण हत्या।

Hkkjr e efgyk l'kfädj.k d fy, ljdkj dh Hkfedk– भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलाई जाती हैं। महिला एवं बाल विकास

कल्याण मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलाई जा रहीं हैं। इन्हीं में से कुछ योजनाएं नीचे दी गईः–

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना।
2. महिला हेल्पलाईन योजना।
3. उज्जवला योजना।
4. सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लॉइमेन्ट प्रोग्राम फॉर वूमेन।
5. महिला शक्ति केन्द्र।
6. पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण।

fu"d"k:– भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा। जिस तरह से भारत सबसे तेजी से आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है और सबको जरूरत है कि महिलाओं के खिलाफ पुरानी सोच बदले और सवैंधानिक और कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाएँ।

lkfu;k xkslkbZ
सहायक प्रबंधक
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड़

जीवन का सत्य .....?

जीवन का सत्य
जब निहित है
चार कंधो में
फिर किसलिए
उलझते हो तुम
इन गोरख धंधों में
क्यूँ देते हो दुःख
किसी को
क्यूँ हरते हो चैन
किसी का
पेट की क्षुधा
जब मिटती है
सिर्फ दो रोटी से
फिर क्यूँ खींचकर
किसी के मुहँ से
निवाले तुम
अपना पेट भरते हो
जीवन का सत्य
जब निहित है
मुक्ति में
क्यूँ ढूढंते हो तुम
इस झूठी तृप्ति को
जब दो गज जमीन
काफी है इस
मिट्टी तन के लिए
फिर क्यूँ किसी की
आँख में आँसू देकर
खड़े करते हो अपने
ये ऊँचे भवन
जब कर्म ही
कारण हैं तुम्हारे
प्रारब्ध का
तो क्यों नहीं
संचित करते
अच्छे कर्मों का खजाना
ताकि तुम्हें याद करे
तुम्हारे बाद भी
ये जमाना.....

fnO;k Hkkj}kt ¼mi çc/kd½
नेशनल इंश्योरेंस कं लि.

मानवीय चेतना के स्तर और उत्कृष्ट जीवन

इस लेख का उद्देश्य वैज्ञानिक आधार पर भारतीय अध्यात्म में वर्णित चेतना और विकास स्तर (जो चक्र पद्धति पर आधारित है) का अनुकरण करके ऐसी व्यक्तिगत उत्कृष्टता की प्राप्ति करना है जो मानवीय समस्याएं हल करने में सहायक हो और जिसमें समावेशी विकास शामिल हो। बौद्धिक संतुष्टि ही हमारा सर्वोच्च लक्ष्य नहीं है। यह सत्य है कि हम स्वयं को कभी सम्पूर्ण नहीं बना सकते, किन्तु पूर्णता की ओर यात्रा करना या कर सकना हमारा स्वयं सिद्ध अधिकार है। चक्र को सक्रिय करके मन और ऊर्जा के साथ शरीर को संश्लेषित करके ही हम श्रेष्ठतम और परम वास्तविकता के रहस्य को जान सकते हैं।

वर्तमान में जो भौतिक सम्पन्नता और सुविधाएं उपलब्ध हैं, वे मानव जीवन के इतिहास में शायद कभी नहीं रही होगीं। ये उपलब्धियां उन मानवीय प्रयासों एवं व्यक्तिगत उत्कृष्टता का परिणाम हैं जिन्होंने स्वप्रेरणा से दूरदर्शिता पूर्वक अपने पूर्ण मनोयोग, अदम्य साहस एवं उत्साह के साथ समर्पण भाव से कार्य को किया है।

संगठन की उत्कृष्टता के निम्न विश्व स्तरीय 3 मॉडल प्रचलित हैं, जिनका अनुपालन करने पर प्रगति मार्ग प्रशस्त होता है:

1) मैल्कॉम बाल्ड्रिज एक्सीलेंस मॉडलः जिसके केंद्र बिन्दु में दूरदर्शी नेतृत्व, संगठनात्मक और व्यक्तिगत शिक्षा एवं ग्राहकों, कर्मचारियों और भागीदारों को महत्व देना शामिल है।

2) ईएफक्यूएम एक्सीलेंस मॉडल के केंद्र बिन्दु में निरंतर सुधार, नेतृत्व कौशल को बढ़ाना, रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करके संसाधनों का अनुकूलन और कर्मचारियों को नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल है।

3) डेमिंग एक्सीलेंस मॉडलः डेमिंग पुरस्कार दुनिया में टीक्यूएम (सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन) पर सर्वोच्च पुरस्कारों में से एक है। कंपनियां टीक्यूएम सिद्धांतों और अवधारणाओं का उपयोग करके प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में वास्तविक प्रदर्शन सुधार की व्यावसायिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए डेमिंग पुरस्कार को चुनौती देती हैं।

सही मायने में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कोई संगठन उत्कृष्टता तक पहुंचने का निर्णय कैसे लेता है, बल्कि मुख्य रूप से शीर्ष प्रबंधन द्वारा व्यक्त की गई प्रतिबद्धता, सुधार संस्कृति, विजन और मिशन के अनुरूप गुणवत्ता प्रबंधन और संगठनात्मक विकास, संगठनात्मक उत्कृष्टता से धारणीयता तक स्थिरता प्राप्त करना उत्कृष्टता के मुख्य आधार हैं। तीनों ही मॉडलों में उत्कृष्ट यात्रा के मुख्य आधार कुशल नेतृत्व एवं प्रतिबद्ध कर्मचारी हैं।

विश्व पटल पर दृष्टि डालने पर इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मानवीय मूल्यों में ह्रास हुआ है। आंतरिक रूप से मन क्षुब्ध है, निराशा एवं अवसाद है, भावात्मक रूप से रिश्तों में ठहराव है, बेचैनी है। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हमसे कहाँ भूल हुई जिससे विश्व में अशांति व्याप्त और हिंसा कम नहीं हो रही है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यूनाइटेड नेशन्स, मानव अधिकार संगठन, धर्मगुरु आदि मानवता अक्षुण्णता के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। जीव वैज्ञानिक भी मानते हैं कि हमारी खुशियां भौतिक संपन्नता से अधिक भावात्मक रूप से मन को बदलने वाले रसायन Dopamine (खुशी), Oxytocin (प्रेम), Serotonin (कल्याण भावना) और Endorphins (निश्चितता) से संबन्धित है, जिसको संक्षेप में डोज़ (DOSE) कहते हैं।

आध्यात्मिकता का अर्थ ईश्वरीय उद्दीपन की अनुभूति प्राप्त करने का दृष्टिकोण है, जो ध्यान, प्रार्थना एवं चिंतन द्वारा एक व्यक्ति के आंतरिक जीवन के विकास के लिए अभिप्रेत है। इसको जीवन में अकसर प्रेरणा या दिशा निर्देश के स्रोत के रूप में अनुभव किया जा सकता है। ईश्वर ब्रह्मांड में नहीं है, बल्कि सृष्टि में सर्वत्र व्याप्त है और प्रकृति में सभी गतिविधियों के लिए प्रेरक शक्ति है।

आध्यात्मिकता, दैनिंदन जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने का सर्व सुलभ मार्ग है, जो सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, नैतिकता जैसे मानव मूल्यों के साथ उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रेरित करता है जिसका किसी धर्म विशेष की मान्यता या आत्मा के विश्वास और अविश्वास से कोई संबंध नहीं है।

विज्ञान का आश्रय सूर्य है एवं सृष्टि, स्थिति, संहार सभी सूर्य के अधीन हैं। इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति का प्रसार सूर्य से ही होता है। अब वैज्ञानिक शोधों से भी सिद्ध हो गया है कि हमारे अस्तित्व की सूक्ष्मतम इकाई(टेकियान एवं लकसान) से लेकर असीम ब्रम्हांण तक सभी ऊर्जा के ही रूप हैं तथा कंपन अवस्था में गतिशील हैं। हम प्रकाश स्वरूप हैं और सभी गतिविधियां दृश्य प्रकाश में सृजित, संचालित और दृष्टिगोचर होती हैं।

मानव जीवन बहुआयामी है, बहुआयामी विजन (दृष्टि) की मांग करता है और दृष्टि प्रेरणा प्रदान करती है। यथास्थिति से प्रगतिशील लोगों के हृदय में दृष्टि बनती है और दृष्टि वह प्रक्रिया है जहां विचार और धारणाएं सारगर्भित होती हैं। तर्कशक्ति अपनी सीमाओं के कारण मनुष्य के परम अस्तित्व पर प्रकाश नहीं डाल सकती है। हम जो कुछ भी बाहर बनाना चाहते हैं, वह पहले सूक्ष्म रूप में मस्तिष्क में बनता है। जितना अधिक हम दूसरों को सक्षम बनाते हैं उतना हमें काम कम करने की आवश्यकता होती है और इसके लिए अधिक संचार की आवश्यकता होती है।

व्यक्तिगत उत्कर्ष के लिए शारीरिक, मानसिक और ऊर्जा स्तर पर अपनी सीमाएं और क्षमता को जानना एवं समझना अति आवश्यक है। अधिकतम थ्रूपुट के लिए कौशल का लाभ कैसे उठाएं और जीवन में खुशी और कृतज्ञता कैसे पैदा करें। आइए, चेतना के स्तर पर सप्त चक्रों के माध्यम से समझते हैं कि व्यक्तिगत उत्कृष्टता कैसे ला सकते हैं –

pØ ,d eyk/kkj ¼**396 Hz**½ ¼iFoh&Bkl rRo½& **Execution with basic instinct**

अधोमुखी चेतना ठोस रूप में शारीरिक भौतिकीकरण सृजन है, जबकि ऊर्ध्वगामी चेतना, शुद्ध ऊर्जा में आनंद और विचार विस्तार के रूप में होती है। चक्र मूलतः सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर के ऊर्जा मिलन का केंद्र है जो एक आयाम से दूसरे आयाम की गति को निर्देशित करता है जैसे कि प्रकाश तरंग, गति में अलग–अलग आवृत्ति पर विद्युत चुम्बकीय विकिरण का रूप है जो ऊर्जा स्तर पर भिन्न आवृत्ति से जुड़ी होती है।

मूलाधार जिसका अर्थ हैः ''जड़।'' हमारी जड़ें अतीत में पाई जाती हैं, जिनमें न तो फैलाव की गति है और न ही बदलाव का प्रयत्न। यह लाल रंग का चार चक्रीय (मन बुद्धि, चित्त, अहंकार युक्त अचेतन मन) बुनियादी रूप से मौलिक क्षमता, मानसिक रूप से स्थायित्व, रचनात्मकता एवं भौतिक उपलब्धियों की चाहत का केंद्र है जो भय से मुक्ति और बुनियादी विश्वास को बढ़ाता है जिसका बीज मंत्र लं है।

चक्र मुख्य रूप से प्रतिध्वनि के माध्यम से अपने स्वयं के कंपन के स्तर से संबंधित हैं, जब किसी विशेष स्तर पर अनुचित निर्धारण होता है, और साधन मौद्रिक साम्राज्य बन जाते हैं – बड़ा घर, बेहतर कार, या उच्च वेतन तो भौतिकवाद हमें अपने मूल स्रोत से और दूर करता है और अंतहीन तृष्णा पैदा करता है। जिस तरह हम अपने शरीर की आवश्यकता से अधिक भोजन लेने पर हम अंततः बीमार हो जाते हैं और सारे क्रिया कलाप हमारे स्वास्थ्य तक सीमित रहते हैं।

प्राकृतिक जीवन, भावात्मक स्थिरता एवं प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का संतुलित दोहन (being with nature) द्वारा मूलाधार को जाग्रत करना उत्कृष्टता की प्रथम सीढी है।

pØ nk Lokf/kLFkku ¼417 Hz½ t y rRo ¼eu ç/kku½ & xfr 'khyrk & Execution with Transformation

यह छः चक्रीय (मनोविकार युक्त अवचेतन मन) मानसिक रूप से नारंगी रंग के कारण रचानत्मकता एवं उत्सुकता और भावात्मक खुशी का केंद्र है जो परिवर्तनों को अपनाने की सुविधा और रचनात्मकता को बढ़ाता है।

स्व स्थित में अपनी कमियों एवं क्षमता का मूल्यांकन और विकसित करने का प्रयत्न करना। हर निर्णय के लिए हमारे पास कई विकल्प होते हैं लेकिन निर्णय भावना आधारित होने के बजाय डेटाबेस द्वारा संचालित होना चाहिए चूंकि आध्यात्मिकता के माध्यम से रिश्ते को मजबूत किया जा सकता है, और हर निर्णय पारदर्शी रूप से लिया जा सकता है जिसका बीज मंत्र वं है।

जैसे हम जानते है कि विचार शक्ति (thought) हमारे शरीर, मन एवं भावना को अत्यधिक प्रभावित कराते है। उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वस्थ शरीर के साथ–साथ स्वस्थ मन का होना नितांत आवश्यक है। हमारी सोच न केवल भावात्मक रूप से हमारे विवेक पूर्ण निर्णय पर असर डालती है अपितु हमारे पारिवारिक रिश्ते, कार्यालीन रिश्ते, सामाजिक रिश्ते और समष्टि रूप से पूरा वातावरण को भी प्रभावित करता है।

सही सोच, समग्र जानकारी और चेतना के स्तर पर निर्भर करती है। परिष्कृत चेतना के द्वारा विचार भावना और बुद्धि से संयुक्त होकर कार्य में परिणत होता है, जो अंततः आदत एवं संस्कार बनकर हमारी कार्यशैली और व्यक्तित्व का परिचायक होता है। अतः सकारात्मक सोच द्वारा स्वाधिस्थान को जागृत करना उत्कृष्टता की द्वितीय सीढ़ी है।

pØ rhu ef.kiqj ¼528 Hz½ vfXu rRo & Åtk ç/kku & Execution with authority & competence

यह दस चक्रीय (दस प्राणों का पोषक– चेतना का केंद्र बिन्दु) सभी प्रक्रियाओं का नियंत्रक है, जो शारीरिक रूप मे भोजन को ऊर्जा मे रूपांतरित करता है एवं मानसिक रूप से व्यक्तिगत स्फूर्ति एवं शक्ति का नियंत्रक केंद्र है।

पीत वर्ण के कारण यही हमारा ऊर्जा शरीर (एथरिक बॉडी) है जो स्पष्ट एवं सही निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास को प्रकट करता है। अत्यधिक क्रियाशीलता, अति आत्मविश्वास एवं व्यग्रता में परिवर्तित होती है जो सत्तावादी दुरुपयोग को बढ़ाती है एवं संगठनात्मक सुदृढ़ता और सकारात्मकता को कम कर देती है जिसका बीज मंत्र रं है।

जहां पृथ्वी और जल गुरुत्वाकर्षण का अनुसरण करते हुए निष्क्रिय रूप से नीचे की ओर प्रवाहित होते हैं, वहीं अग्नि का ऊपर की ओर गति करना, हमें ऊपरी चक्रों तक (सामूहिक रूप से एक विस्तारित वैश्विक चेतना) पहुँचने में सक्षम बनाता है।

जब चेतना द्वारा क्रिया शक्ति जागृत होती है तब व्यक्तिगत स्वायत्तता और व्यक्तिगत इच्छा का विकास होता है। स्वतंत्र इच्छा हमें अलग होने की अनुमति देती है। निष्क्रिय आदतें, अतीत द्वारा निर्देशित, और एक नई दिशा का निर्माण करती हैं। नई जमीन तोड़ने के लिए, नवाचार के लिए स्वतंत्र इच्छा आवश्यक है। यह सभी परिवर्तनों की क्रियाओं का अग्रदूत है जिसमें स्वयं की विशिष्टता एवं गौरव निहित है। इच्छा और क्रिया शक्ति को बढ़ाता है और भौतिक शरीर को विनियमित करके गतिविधि को ऊर्जा देता है।

जोश एवं उत्साह पूर्वक कार्य (passion) द्वारा मणिपुर चक्र को जागृत करना उत्कृष्टता की तृतीय सीढ़ी है।

pØ pkj vukgr ¼639 Hz½ ok;q rRo& Hkko ç/kku & lgHkkfxrk ¼Feeling & Relationship½

यह बारह चक्रीय (हृदय के 12 शाश्वत गुण) संकल्प शक्ति का केंद्र है जो मानसिक रूप से आवेश को नियंत्रित करके ध्यान को बढ़ाता है एवं जटिल भावनाएं, करुणा और समर्पित प्रेम का संतुलन करके सहज ज्ञान की प्राप्ति में सहायक है जिसका बीज मंत्र यं है।

हरे रंग के कारण ताजगी और शांति का प्रतीक यह हमारी भावनाओं का केंद्र हृदय है जिसके विकास से सृजनशीलता, सज्जनता एवं देवत्व का उदय होता है। सकारात्मक प्रतिक्रिया भावात्मक रूप से (feeling) खुशियों, प्रेम, स्नेह, आदर, सम्मान को उत्प्रेरित करती है और तनाव या अवसाद से दूर रखती है। सेवा और प्रेम के मुद्दे के आसपास कम सांस्कृतिक संघर्ष है, क्योंकि आम तौर पर लगभग सभी सहमत होते हैं कि प्रेम जीवन के महत्वपूर्ण तत्व में से सबसे अधिक है। चक्र तीन शक्ति और इच्छा, ऊर्जा के वर्तमान प्रमुख मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है और आक्रामकता, अहंकार और स्वायत्तता, जिसे शामिल किया जाना चाहिए, किन्तु बिना चक्र चार के अगले स्तर शांति, संतुलन के गुणों के साथ, करुणा और प्रेम की प्राप्ति नहीं होगी।

आत्म तत्व मूलतः दैविक गुणों से सम्पन्न है जिसको समष्टि रूप में कल्याणकारी कार्यों से तृप्ति मिलती है। यही कारण है कि विश्व के सभी महान धर्मों में अहिंसा, करुणा, प्रेम, सेवा एवं त्याग को सर्वोपरि बताया गया है। जहां बौद्ध– करुणा, जैन– अहिंसा, सिख– सेवा, ईसाई प्रेम, इस्लाम– समानता का सिद्धान्त प्रतिपादित करता है, वहीं हिन्दू धर्म सनातन काल से मानव जीवन के सम्पूर्ण क्रियाकलाप –काम से अभीष्ट लक्ष्य (मोक्ष प्राप्ति) की यात्रा ख्यापित किया है।

जैसा कि हम जानते हैं श्वास, मन और शरीर का प्रवेश द्वार है, इसको प्राणायाम द्वारा नियंत्रित करके व्यक्तिगत अहंकार से भौतिकवादी और आध्यात्मिक विकास को संतुलित कर सकते हैं। जिसका बीज मंत्र लं है। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान को आत्मसात करके संवेदना की अनुभूति से इसका विकास कर सकते हैं। समष्टि के कल्याणकारी कार्यों (CSR) और रचनात्मक क्रियाओं से संतुष्टि पा सकते हैं। समभाव, सहभागिता एवं संवेदना (empathy and cultural) द्वारा अनाहत चक्र को जागृत करना उत्कृष्टता की चतुर्थ सीढ़ी है।

pØ ikp fo'kf) ¼**741 Hz**½% vkdk'k rRo% /ofu vkj l pkj ¼**Information & Communication**½

यह सोलह चक्रीय (सोलह कलाओं से सम्पन्न), उच्चतम आध्यात्मिक अनुभूति एवं द्वंद से परे, बुद्धता की प्राप्ति का केंद्र है जो कि सांस्कृतिक स्तर पर हममें से प्रत्येक को जोड़ता है। चेतना का क्षेत्र जो स्वयं और एक दूसरे के भीतर संचार को नियंत्रित करता, बनाता, प्रसारित करता और प्राप्त करता है। नीले रंग के कारण शांत और सुखदायक, मानसिक रूप से उन्मुक्त विचार का केंद्र और आत्माभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण को नियंत्रित करता है जिसका बीज मंत्र हं है।

संचार विस्तार के लिए एक आवश्यक वाहन चेतना के रूप में जाना जाता है। इनमें से प्रत्येक संचार में क्वांटम छलांग को एक विकासवादी के रूप में देखा जा सकता है। यह प्रत्येक सूचना की क्षमता एवं गति को बढ़ाता है और प्रत्येक वैश्विक निर्माण में संचार एक कदम है। जैसे–जैसे हम सीखते हैं, बदलते हैं, अनुकूलन करते हैं, अधिक चेतना की ओर पहुँचते हैं, इस वैश्विक मस्तिष्क का इंटरनेट स्पष्ट संकेत है, जिसमें संपूर्ण संचार नेटवर्क शामिल है।

अद्यतन जानकारी एवं जागरूकता ही विकास की संभावनाओं को जन्म देती है, जिससे निरंतर सुधार द्वारा सतत विकास और उतरोत्तर प्रगति द्वारा उत्कृष्टता को पाया जा सकता है। अद्यतन जानकारी सिर्फ सूचनाएँ अकत्र करने का ढेर नहीं है बल्कि जब उसको विश्लेषित करके कार्य रूप में परिणत करते हैं तभी हम संगठन में लोगों के पूर्ण आस्था (conviction) के केंद्र बनते हैं और रोल मॉडल के रूप में प्रभावी होते हैं। अतः सीखना, परिष्कृत करना, पारदर्शी संप्रेषण के द्वारा प्रेरणा स्रोत बनकर विकसित कर सकते हैं। सतत जिज्ञासुशीलता एवं प्रभावी सम्प्रेषण (continous learning & effective communication) द्वारा विशुद्धि चक्र को जागृत करना उत्कृष्टता की पांचवीं सीढ़ी है।

pØ Ng vkKk ¼**852 Hz**½% cf) rRo % çdk'k vkj vrKku ¼**Imagination & Intution**½ **– Vision**

यह द्वि चक्रीय– स्थिरता एवं बुद्धि का केंद्र है। प्रकाश के प्रति संवेदनशील होने के कारण मानसिक रूप से दृश्य चेतना के साथ संबंध है। इंडिगो रंग के कारण अन्तर्ज्ञान, समझ को उपयोग में लाकर विचारों में दृढ़ता एवं और रचनात्मक विजुअलाइज़ेशन का कौशल की प्राप्ति होती है। प्रकाश की गुणवत्ता मात्रा पर न होकर आवृत्ति पर निर्भर करती है जिसका बीज मंत्र ओम है।

सर्वविदित है कि एक तस्वीर एक हजार शब्दों के बराबर होती है। क्रमिक रूप से, एक समय में एक बार मेरे शब्द केवल आपके पास आ सकते हैं, लेकिन समग्र रूप से एक तस्वीर आंखों से प्रवेश करती है। कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के माध्यम से, गणितीय समीकरणों को अब गतिमान चित्रों के रूप में व्यक्त किया जा सकता है, जो जटिलता और सिस्टम व्यवहार की समझ को बढ़ाने में सहायक है। वर्ल्ड वाइड वेब पर अब शब्दों के साथ ग्राफिक्स और एनिमेशन शामिल हो सकते हैं।

सारे आविष्कार, वैज्ञानिक उपलब्धियां इसी तत्व की देन हैं। इसके विकास के लिए हमें सूचनाओं के ढेर एकत्र करने के बजाय, रचनात्मक मानसिक दर्शन (visualisation), अन्तर्ज्ञान की क्षमता का अधिकतम उपयोग करना चाहिए। उपनिषदों एवं वेदों के ज्ञान को आत्मसात करने से समझ की गहराई बढ़ाकर इसका विकास कर सकते हैं। अन्तर्ज्ञान और विवेकपूर्ण निष्पक्ष दृष्टि (intution & wisdom) द्वारा आज्ञा चक्र को जागृत करना उत्कृष्टता की छठवीं सीढ़ी है।

pØ lkr lglkj¼**963 Hz**½% 'k) pruk ,o 'k) fopkj ¼**Pure Thought**½ & **Purpose**

यह सहस्र चक्रीय मेधा शक्ति का केंद्र बिन्दु है, जिसमें बैंगनी रंग के कारण चेतना का विस्तार, ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय विभेदरहित होता है। चेतना की उच्चतम अवस्था में निष्काम

कर्म होना, निविकल्प ध्यान और ब्रह्मांडीय ऊर्जा का तादात्म्य होना इसकी विशेषता है। इस चक्र को हजार पंखुड़ियों वाले कमल द्वारा चिह्नित किया जाता है जो ज्ञान और सूचना का प्रसार, पौराणिक कथाओं पर स्तर, आध्यात्मिकता और चेतना में बढ़ती रुचि विस्तार का प्रतीक है। मैं कौन हूँ का उत्तर यहीं से मिलता है जिसका बीज मंत्र ओम है। इस चक्र के ध्यान से मन, बुद्धि, प्राण जब एक हो जाते हैं, तब बुद्धि के अलगाव न रहने के कारण विचार नहीं रहता, इसलिए उन्हें पाने पर मैं का बोध नहीं रहता अर्थात आत्मबोध प्राप्त हो जाता है।

योग और ध्यान की लोकप्रियता, परामनोवैज्ञानिक अनुसंधान, मन को बदलने वाले रसायन, और चेतना अनुसंधान तेजी से होने वाली चेतना को प्रकट कर रहा है। सूचना सुपरहाइवे दुनिया भर में प्रकाश की गति से हमारी चेतना को स्थानांतरित करने में सक्षम बनाता है। आज के कंप्यूटर, शरीर के बजाय मन का विस्तार करके हमारी चेतना को मानवीय रूप से संभव से परे ले जाना, स्मृति भंडारण, गणना की क्षमता और रचनात्मकता को उच्चतम अवस्था में अति सहायक है।

विश्व के शीर्ष प्रबंधन संस्थान अब चक्र 6 और 7 पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में चक्र छह और सात के विकास की ओर अग्रसर हैं। आध्यात्मिक पुस्तकों का बाजार पहले से कहीं अधिक बड़ा है। लोग अपने अंतर्ज्ञान का उपयोग करना सीख रहे हैं और वे मनोवैज्ञानिक सलाह ले रहे है। इंटरनेट के द्वारा आध्यात्मिक साहित्य सर्व सुलभ होने के कारण बहुतायत लोग अपने व्यक्तिगत व्यवहार में धार्मिक विविधता, योग, अध्यात्म अपना रहे हैं।

अतः शुद्ध एवं अभिनव विचार ही सही सृजन या निर्माण की कुंजी है– आत्मबोध स्वांतः सुखाय (self actualisation) की प्राप्ति उत्कृष्टता की सातवीं एवं अंतिम सीढ़ी है।

सारांशः सभी चक्रों की चेतना परस्पर जुड़ी हुई है। अब देखते हैं कि व्यक्तिगत उत्कृष्टता, संगठन की उत्कृष्टता में कैसे सहायक हैः–

गुणवत्ता वाले उत्पादों या मूल्यों की प्राप्ति के लिए चक्र 1 से चक्र 7 का आरोही क्रम में कितना गहरा संबंध है। हम पाते हैं कि चक्र 1 के द्वारा क्रियान्वित गुणवत्ता वाले उत्पाद (quality product) के लिए सही रवैया और योग्यता (sound mind & right attitude) होना आवश्यक है जो चक्र 2 की ऊर्जा से आता है। वाह्य कारक या पर्यावरण में गतिशील परिवर्तनों के कारण लचीलापन भी चक्र 2 की देन है जिसकी प्राप्ति में चक्र 4 यानि सहभागी प्रबंधन शैली (team work through organisational culture) की आवश्यकता होती है। नवीन उत्पादों के निष्पादन के लिए कार्य योजना को चक्र 3 की ऊर्जा यानि दृढ़ संकल्प एवं जोश (right decision & determination for implementation) के साथ लागू किया जाना चाहिए, जो चक्र 5 की ऊर्जा –अद्यतन सूचना एवं डेटा तथ्यों (digitalisation od latest data & communication) के द्वारा समर्थित हो, चक्र 6 की ऊर्जा से निर्देशित और चक्र 7 की ऊर्जा यानि निर्दिष्ट उद्देश्य (purpose) से संचालित हो।

अब देखते है कि हमारे विचारों से गुणवत्ता वाले उत्पादों या मूल्यों की प्राप्ति में चक्र 7 से चक्र 1 का अवरोही क्रम में कितना गहरा संबंध है। अवरोही क्रम में, सहस्रार चक्र 7 से विचार (Purpose/Thoughts) जब आज्ञा चक्र 6 की रचनात्मक दिशा निर्देश (Vision) के साथ संगठन के लोगो में अनाहत चक्र 4 की प्रतिबद्धता एवं भावनाओं (Commitment) के माध्यम से दृढ़ विश्वास के साथ विशुद्धि चक्र 5 की ऊर्जा से सूचित और संचारित (communication) किया जाता है तो मणिपुर चक्र 3 की ऊर्जा से कोई भी कार्य उत्साह से हो जाता है और उत्साह के साथ किया गया कार्य (work with passion) से मूलाधार चक्र 1 की ऊर्जा से अच्छा कर्म या उत्पाद बन जाता (product) है जो स्वाधिस्थान चक्र 2 की ऊर्जा से संगठन को प्रगतिशील और परिवर्तनकारी बनने में सक्षम बनाता है (dynamic & flexible)।

गुणवत्ता वाला उत्पादों (चक्र 1 की ऊर्जा) से ग्राहकों की खुशी के मूल्यों को बढ़ाना एवं समावेशी विकास (inclusive development) ही (चक्र 7 की ऊर्जा का) आनंदमयी परिणाम (bliss final result) है।

हम पाते हैं कि चक्र प्रणाली सामूहिक यात्रा के लिए एक जीवन का नक्शा प्रदान करता है। चक्र प्रणाली से आज हमारे सामने आने वाली चुनौतियाँ हल हो सकती हैं। कोरोना काल में शारीरिक, मानसिक, भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक हमारे जीवन को संतुलित करने के लिए एवं अतीत से भविष्य के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए आज हमें अध्यात्म दर्शन की अत्यंत आवश्कता है। चारों वेदों का महावाक्य– प्रज्ञानम वृहम (ऋग्वेद), अहम वृहमस्मि (यजुर्वेद), तत्वमसी (सामवेद) एवं आयमात्मनम वृहम (अथर्व वेद) इसी का प्रतिपादन करते हैं। श्रेष्ठम एवं उत्कृष्टम उपलब्धि ही चेतना के विकास की अंतिम यात्रा है।

M,- n|x|'k pUæ x|Ir
अपर महाप्रबंधक (कॉर्पो. गुणवत्ता)
बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय

किसान जीवन का संघर्ष

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत के लगभग सत्तर प्रतिशत लोग कृषि और कृषि आधारित कार्यो पर निर्भर है. किसान, राष्ट्र की रीढ़ हैं। किसान, कृषि उत्पादन द्वारा अपने और पूरे समाज के खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। वे वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन के साथ हमारे उद्योगों जैसे कपड़ा उद्योग, चीनी, इत्यादि के लिए कच्चे माल की पूर्ति भी करते हैं। हमारे देश की अर्थव्यवस्था के संचालन और वृद्दि में कृषि और किसान का वैसे ही महत्व है जैसे हमारी शरीर के लिए रक्त इसलिए किसानों को देश का जीवन–रक्त कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा। मानव सभ्यता की शुरुआत से लेकर आज के आधुनिक युग तक किसान की महत्ता हमेशा बनी रही है हम सभी भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कृषि पर निर्भर हैं। हम अपना भोजन प्राप्त करते हैं क्योंकि किसान फसलों की खेती करता है और कृषि गतिविधियों को चलाता है। यद्यपि, किसान पूरे मानव समाज के पोषण और विकास के लिए काम करता है किन्तु स्वयं किसान की अपनी स्थितियां संतोषजनक नहीं हैं। किसान जीवन के संघर्षो को संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है:–

कठिन जीवन: एक किसान का जीवन बहुत कठिन है। वह सभी मौसमों में बहुत मुश्किल से दिन और रात काम करता है। गर्मियो के मौसम में, वह सूर्य की तपती धूप में काम करता है, सर्दी के मौसम में, हड्डियों को गला देने वाली ठंडक में खेत में काम करता है। बरसात में खुले आसमान में भीगते हुए खेत में काम करता है. गर्मी, सर्दी बरसात चाहे जो मौसम हो किसान अपने काम में लगा रहता है.

मौसम पर निर्भरता: हमारे देश के किसान का जीवन प्रकृति की शक्तियों पर बहुत निर्भर है। कृषि के लिए पर्याप्त मानसून आवश्यक है। मानसून की अनिश्चितता के कारण किसान का जीवन भी अनिश्चितताओं से भरा होता है यदि वर्षा पर्याप्त है, तो फसल अच्छी होती है, वही अपर्याप्त वर्षा और पानी की कमी की लंबी अवधि की वजह से सूखे की स्थिति हो जाती है तो, कृषि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और फसल का उत्पादन कम या बिलकुल नहीं होता, जिससे किसान की आजीविका दुष्प्रभावित होती है। साथ ही भोजन की गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है। दूसरी तरफ अधिक बर्षा से, बाढ़ आने से फसलें बर्बाद हो जाती है साथ ही साथ, जानवर, घर आदि पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इन सब की वजह से किसानों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

आर्थिक समस्याएं: किसान जीवन यापन के लिए अपनी फसलों को बेचकर पैसा कमाता है और खुश रहता है। लेकिन यदि फसल खराब हुए तो उसकी जमा पूजी भी नहीं निकलती और उसका जीवन दुखी हो जाता है। वह कर्ज के चंगुल में फंस जाता है जिससे निकलना बहुत मुश्किल होता है। यदा–कदा किसान आत्महत्या के लिए भी मजबूर हो जाते है।

ऐसा भी देखा जाता है की कभी–कभी फसलों की अच्छी उपज होने पर भी किसानों को कम मूल्य पर अपनी फसलों को बेचना पड़ता है क्योंकि सभी जगहों पर उत्पादन में वृद्धि होने पर, फसलों का बिक्री मूल्य कम हो जाता है। अतिरिक्त उत्पादन का लाभ किसानों को न मिलकर बिचौलियों/व्यापारियों को मिलता है जो किसानों से कम मूल्य पर फसलें खरीद कर बाद में ज्यादा मूल्य पर बेचते हैं।

जागरूकता की कमी: हमारे देश के अधिकांश किसान अधिक पड़े लिखे नहीं हैं। इसलिए वे कृषि में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल न करके पारम्परिक तरीके से कृषि करते हैं जिससे कम उत्पादन होता है और वे कड़ी मेहनत के बाद भी लाभ नहीं कमा पाते। इसके साथ ही अपने वैध अधिकारों से अनजान होने के कारण वे बिचौलियों और सूदखोरों के जाल में फंस जाते है.

स्वस्थ्य और स्वच्छता सम्बन्धी समस्याएं: उनके पास स्वस्थ्य और स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के लाभों के बारे में बहुत कम शिक्षा और जागरूकता है। ज्यादातर किसानों को इस तथ्य का कोई ज्ञान नहीं है कि अशुध पानी पीने से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इसके अलावा, हमारे गांवों में अपर्याप्त मलजल प्रणाली है। ग्रामीण इलाकों में पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं या प्रशिक्षित नर्सों और डॉक्टरों की कमी है। झोलाछाप डॉक्टरों और झाड़फूक के चक्कर में पड़ कर अपनी जिंदगी खो देते हैं।

उपर्युक्त बातें किसानों की समस्याओं की केवल कुछ पहलुओं को दर्शाती हैं। किसानों का जीवन संघर्षो से भरा पड़ा है। किसानों को अन्नदाता कहा जाता है किन्तु किसान स्वयं और परिवार के भरण पोषण के लिए संघर्ष करता दिखता है।

इसलिए भारतीय किसानों की स्थिति में सुधार होनी चाहिए। उन्हें खेती की आधुनिक पद्धति को सिखाया जाना चाहिए. उन्हें साक्षर बनाया जाना चाहिए इसके लिए, रात–विद्यालय खोले जाने चाहिए। उन्हें सरकार द्वारा सभी संभव तरीकों से सहायता मिलनी चाहिए। क्योंकि उनकी भलाई का कारण ही भारतीय कल्याण पर निर्भर करता है। सरकार ने किसानों के लाभ के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। जिनका लाभ सभी किसानों को मिलना चाहिए। सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का ज्ञान सभी किसानों को होना चाहिए। ताकि सही रूप से इन योजनाओं का लाभ किसानों तक पहुंचे और हमारे पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान का सपना पूरा हो सके।

j.kohj flg pkiMk
(महाप्रबंधक)
बी.ई.एम एल लिमिटेड

पिता को समर्पित

टूट गई थी मैं, जिस दिन तुमने कहा, चलता हूँ मैं... छोड़ के यह जहाँ....

नादान दिल सोच बैठा, अब इस रात की सुबह कहाँ....

हर पल सौ बरस–सा लगता...

तुम नहीं हो, ये सच बार–बार दिल को चुभता...

दीवार पे तकिया लगाए हुए, हाथ में किताब थामें...सोचा तुमसे बात करूँ,

तुम ही तो थे मेरे बेस्ट फ्रेंड, मेरे मार्गदर्शक, मेरे गुरु...

कितना आसान होता था, जब दिन में तुमसे दस बार बात होती थी,

पानी पिया, खाना खाया, जैसे तुम्हारे सवालों पर मैं कितना तुम पे झल्लाती थी...

बंद करी अपनी आँखें, आज तुमसे एक नया कनेक्शन जोड़ना था...

पाया तुम तो वहीं थे मेरे दिल में, तुमने तो साथ कभी छोड़ा ही ना था...

बोले तुम, सपने जो मैंने देखे थे, तुम उन्हें पूरा करके दिखाओगी...

मेरी बेटी हो तुम, ऐसे कैसे हिम्मत हार जाओगी?

हर पल मैं तुम्हारे साथ हूँ, तू बस आगे बढ़ती चली जा...

मुश्किलें न हो अगर जिन्दगी में, उस जिन्दगी का फिर क्या ही मजा...

तुम्हारी उन बातों से न जाने कहाँ से मुझमें जान आ गई,

ऊँगली थामे चली थी तुम्हारी, वही हाथ थामे जहाँ पार आ गयी,

डगमगाए जब ये कदम, तुम मेरा साथ देते रहना...

इस जहाँ नहीं, तो उस जहाँ सही, मिलेंगे हम, तुम मेरा इंतजार जरूर करना........

Þgl ih Qknl M ikik!ß

fç;adk Hkkxo
ट्रैफिक सुपरवाइज़र (एटीटी)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष के दौरान आयोजित गतिविधियां

नराकास की दो छमाही बैठक फरवरी, 2021 तथा अगस्त, 2021 में ऑनलाइन आयोजित की गई। बैठक के अतिरिक्त इस वर्ष विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

dBLFk çf'k{k.k& इस वर्ष 22.01.2021 को जनवरी में नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों के राजभाषा संवर्ग के कार्मिकों के लिए ''कंठस्थ'' प्रशिक्षण का आयोजन वर्चुअल माध्यम से किया गया। प्रशिक्षण में प्रमुख वक्ता केवल श्री कृष्ण ने राजभाषा विभाग के "कंठस्थ" ऐप में हिन्दी अनुवाद करना और उसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखने के बारे में जानकारी प्रदान की।

vuokn çf'k{k.k dk;Øe& दिनांक 16.04.2021 को नराकास के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा संवर्ग के कार्मिकों के लिए अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अनुवाद करने में आ रही समस्याओं और उसके समाधान के बारे में बताया गया। इस कार्यक्रम में श्री पूरन चन्द्र टण्डन, व्याख्याता, दिल्ली विश्व विद्यालय एवं श्री के पी शर्मा, उप निदेशक, कार्यान्वयन ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों ने अनुवाद कार्य में आ रही समस्याओं के बारे में व्याख्याताओं से बात की। सदस्य कार्यालयों के योगदान से कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया।

foMkt 10 ,e ,l oM ,o ekckby d vk/kfud Qhp l e fgUnh dk ç;kx &

नराकास के सदस्य कार्मिकों के राजभाषा संवर्ग के कार्मिकों के लिए 09.07.2021 को विंडोज 10 एम एस वर्ड एवं मोबाइल के आधुनिक फीचर्स में हिन्दी का प्रयोग पर वर्चुअल माध्यम से प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण दाता के रूप में श्री राजेन्द्र वर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा)– गृह मंत्रालय–राजभाषा को आमंत्रित किया गया। उन्होंने विंडोज 10 एम एस वर्ड एवं मोबाइल में हिन्दी टाइपिंग एवं उससे जुड़ी जानकारी को साझा किया। सभी सदस्य कार्यालयों ने इस कार्यशाला में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

इसके साथ ही कार्मिकों को हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए नवंबर, दिसंबर माह में विभिन्न सदस्य कार्यालयों द्वारा हिन्दी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

संचार गीत

eg'k dekj Dok=k
mi egkiç/kd

भगवान मेरा जीवन संचार के लिए हो
ग्राहक हमारा हरदम सत्कार के लिए हो
नई नई सेवाएं बाजार में ले आएं
तकनीकी उन्नति के हम साथ बढ़ते जाएँ
संचार के सभी माध्यम उपकार के लिए हों
रूठों को ये मनाएँ बिछड़ों को ये मिलाएँ
संचार की व्यवस्था बस दिल से दिल मिलाए
संचार की हर सीमा विस्तार के लिए हो।

eg'k dekj Dok=k
उप महाप्रबंधक (सतर्कता)
बीएसएनएल मुख्यालय, नई दिल्ली

भाषा का विकास और उसमें सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान

विज्ञान और तकनीकी के वर्तमान युग में हिंदी कंप्यूटिंग की दुनिया तेजी से बदल रही है। आज से कुछ वर्ष पहले जो चीजें देखने और सुनने में असंभव सी लगती थी, आज बदलते तकनीकी परिवेश में हकीकत में बदल रही है। आज के इस युग को 'टेक्नोयुग' भी कहा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर अब कोई भी पहले की तरह अंतर्देशीय पत्र पर चिट्ठियां नहीं लिखता, अपितु आज सभी मोबाइल या ई–मेल पर मेसेज टाइप पर चुटकियों में अपने संदेश को दूसरों तक पहुँचाते हैं। स्कूलों में भी अब पढ़ाई ई–लर्निंग और ई–क्लसेस के माध्यम से की जाने लगी है। आज मानव हर क्षेत्र में नए–नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। संस्थाओं तथा उद्योग धंधों में कंप्यूटर का प्रयोग विशाल पैमाने पर हो रहा है। साथ ही,हर छोटी से छोटी समस्या को सुलझाने के लिए भी कंप्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है, चाहे वो मोबाइल में रिचार्ज करवाना हो या फिर बिजली का बिल भरना हो। कंप्यूटर आज रोजमर्रा की उपयोगी वस्तुओं में से एक बन चुका है। औद्योगिकी क्षेत्र में मशीनों तथा कारखानों का संचालन करने के लिए कंप्यूटर को प्रयोग में लाया जाता है। सूचना एवं समाचार के क्षेत्र में भी कंप्यूटर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। कंप्यूटर नेटवर्क के द्वारा विश्व भर के शहर एक–दूसरे से एक परिवार की भांति जुड़ गए हैं। बैंक भी ग्राहकों की सुविधा के लिए नेट बैकिंग, मोबाइल बैकिंग, एटीएम आदि की सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। कंप्यूटर द्वारा अंतरिक्ष के चित्र भी विशाल पैमाने पर एकत्र किए जा रहे हैं। आज विश्व में सब कुछ इतनी तेजी से बदल रहा है कि कोई भी क्षेत्र तकनीकी से अछूता नहीं रहा है। हम देख रहे हैं कि आज कृषि, शिक्षा व्यवसाय आदि के साथ–साथ भाषाएं भी तकनीक के साथ जुड़ गई है तो हिंदी भाषा इससे इतर क्यों रहे?

आज सभी लोग कंप्यूटर पर ई–मेल भेजने, फेसबुक स्टेटस अपडेट करने या चैटिंग करने आदि के लिए आसानी से टाइपिंग कर लेते हैं। अंग्रेजी टाइपिंग के साथ–साथ हिंदी टाइपिंग भी अब सरल हो गई है और मोबाइल पर भी लोग सरलता से हिंदी टाइपिंग करने लगे हैं। माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल की सहायता से कोई भी व्यक्ति हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में आसानी से काम कर सकता है। यह टूल सभी एप्लिकेशनों पर सफलतापूर्वक कार्य करता है और अंग्रेजी की–बोर्ड का ले–आउट होने के कारण प्रयोग करने में भी सरल है। इसके अतिरिक्त, गूगल हिंदी इनपुट है जो अंग्रेजी की–बोर्ड की सहायता से चलता है। इनके साथ ही इनस्क्रिप्ट आदि से भी कंप्यूटर पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विविध तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त www.bhashaindia.com में भी इंडिक इनपुट टूल को डाउनलोड कर इनस्क्रिप्ट के अतिरिक्त रेमिंग्टन टाइपराइटर को सैलेक्ट करके हिंदी या अन्य प्रांतीय भाषाओं में भी टाइपिंग की जा सकती है।

हिंदी भाषा की विशेषता यह है कि यह अपने अंदर प्रांतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं को भी समाहित करने की क्षमता रखती है। तकनीक के इस युग में हिंदी ने भी अपने आप को समय के अनुरूप ढाल लिया है। टाइपिंग की सुविधा से लेकर वॉइस टाइपिंग की सभी सुविधाएं आज उपलब्ध हैं। आवश्यकता केवल हिंदी भाषा के उपयोगकर्ताओं द्वारा इन नवीनतम तकनीकी सुविधाओं को अपनाने की है। ओसीआर अर्थात् ऑप्टीकल कैरेक्टर रिकग्नीशन अर्थात् प्रकाश पुंज द्वारा वर्णों की पहचान कर पुराने देवनागरी हिंदी टेक्सट को यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित करने की सुविधा से पुरानी किताबों का डिजीटलाइजेशन करने में मदद मिल रही है। इससे संस्कृत भाषा में लिखे गए लेख सामग्री को आसानी से हिंदी के यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित किया जा सकता है। प्राचीन ग्रंथों की दुर्लभ प्रतियों का डिजीटलाइजेशन करने से उनमें उपलब्ध ज्ञान से सभी को लाभ होगा।

भारत की राजभाषा हिंदी को डिजीटल दुनिया में समृद्ध करने और बढ़ावा देने में ऑनलाइन हिंदी पुस्तकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। गूगल बुक्स और किंडल बुक्स आदि ऑनलाइन सुविधाओं की सहायता से आप अपने कंप्यूटर या मोबाइल फोन पर हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं की हजारों पुस्तकों को मुफ्त में अथवा पैसों का भुगतान करके पढ़ सकते हैं। गूगल वॉइस टाइपिंग सेवा की सहायता से आप बोलकर टाइप कर सकते हैं। इस सुविधा से हिंदी टाइपिंग के लिए लगने वाले समय में काफी बचत हुई है। एंड्राइड मोबाइल पर हिंदी में ऑफलाइन शब्दावली सुविधा अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों के हिंदी शब्दार्थ ढूंढने में सहायक है।

हिंदी ऑनलाइन OCR यानी "Optical character recognition" यानी हाथ से लिखे या टाइप कर प्रिंट किए या किसी समाचार पत्र अथवा पुस्तक के किसी भी पेज को स्कैन कर टैक्सट में परिवर्तित करना जिससे उसे दोबारा एडिट किया जा सके। असल में यह सॉफ्टवेयर कुछ–कुछ Artificial intelligence

यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित है। जब आप स्कैनर से कोई भी पेज स्कैन करते हैं तो OCR प्रकाश द्वारा छपे हुए अक्षरों की बनावट से उनकी पहचान करता है और उसे टैक्सट में बदल देता है, अब तो कुछ सॉफ्टवेयर यहाँ तक सक्षम हैं कि आपके हाथों की लिखावट को भी पहचान कर उसे भी टैक्सट में बदल देते हैं साथ ही साथ आपकी वर्तनी को चेक कर लेते हैं।

पहले हिंदी में ई–मेल भेजते समय कुछ समस्याएँ सामने आती थीं। वास्तव में ई–मेल भेजने और प्राप्त करने के लिए प्रमुख रूप से दो तरह के टूल काम आते हैं, एक ई–मेल क्लाइंट तथा दूसरा वेब आधारित ई–मेल सर्वर। आरंभ में क्लाइंट और सर्वर सॉफ्टवेयर की सभी कोडिंग केवल ASCII (American Standard Code for Information Interchange) प्रणाली पर आधारित थी। इस प्रणाली में कंप्यूटर स्क्रीन पर केवल अंग्रेजी भाषा के अक्षरों को ही प्रदर्शित किया जा सकता था। हिंदी में ई–मेल करने के लिए कुछ वर्षों पहले तक हमारे पास एक मात्र विकल्प के रूप में ऑस्की फॉन्ट आधारित सेवाएं ही थीं।

ई–मेल के हैडर तथा विषय को अंग्रेजी में ही लिखना होता था क्योंकि यह हिंदी में लिखना संभव नहीं था। दूसरा, जिसको ई–मेल किया जा रहा है उसके कंप्यूटर में भी वहीं फॉन्ट संस्थापित (Installed) होना अनिवार्य होता था, अन्यथा उस ई–मेल को पढ़ना संभव नहीं था। मूल रूप से अंग्रेजी शब्दों के साथ काम करने के कारण हिंदी शब्दों के आधार पर अपनी आवश्यक ई–मेल को खोजने तथा सहेज कर रखने में भी समस्याएं आतीं थीं। यदि ऑपरेटिंग सिस्टम यूनीकोड का समर्थन करता है तो आपका ई–मेल क्लाइंट तथा ब्राउजर भी यूनीकोड हिंदी समर्थन प्राप्त करने वाला होना चाहिए।

ई–मेल सेवाएं प्रमुख रूप से दो प्रकार की एनकोडिंग प्रणाली पर आधारित होती हैं, एक ASCII और दूसरी यूनिकोड। अब समय के साथ कंपनियों ने यूनीकोड एनकोडिंग प्रणाली को अपनाना शुरू कर दिया है जो ई–मेल सॉफ्टवेयर अर्थात् क्लाइंट और सर्वर, ASCII प्रणाली पर आधारित हैं, उनमें हिंदी या किसी अन्य भाषा में ई–मेल भेजना मुश्किल काम है। किन्तु, जो क्लाइंट और सर्वर यूनिकोड प्रणाली पर आधारित हैं, उनमें हिंदी में सहजता से ई–मेल भेजे जा सकते हैं। वास्तव में यूनिकोड दुनिया भर की सभी भाषाओं के प्रत्येक अक्षर के लिए कंप्यूटर में एक सर्वमान्य कोड उपलब्ध कराने की व्यवस्था है। अतः यूनिकोड प्रणाली में हिंदी (देवनागरी) के किसी भी अक्षर को प्रदर्शित करने के लिए जो कोड उपलब्ध कराया गया है वह पूरे विश्व में अंग्रेजी (ASCII) की तरह मानक और सर्वमान्य है।

वर्तमान में ई–मेल सेवा उपलब्ध कराने वाली सभी प्रमुख कंपनियां जैसे–जी–मेल, याहू–मेल, रेडिफ–मेल, हॉट–मेल आदि यूनिकोड आधारित एनकोडिंग का प्रयोग कर रही हैं। इससे अब हिंदी में ई–मेल भेजना कोई समस्या नहीं रही है। बस आपको अपने कंप्यूटर में यूनिकोड सक्रिय करना है और हिंदी टाइपिंग के लिए किसी इनपुट प्रणाली (Typing method) को सीखना है। विंडोज 2000 एवं इसके बाद के सभी संस्करणों में तथा वर्ष 2002 के बाद जारी लिनक्स के लगभग सभी संस्करणों में ऑपरेटिंग सिस्टम के स्तर पर ही डिफॉल्ट रूप से हिंदी यूनिकोड के समर्थन की सुविधा उपलब्ध रहती है। इन सुविधाओं में ई–मेल क्लाइंट तथा ब्राउजर भी शामिल है। आजकल जावा आधारित कुछ ऐसे टूल्स भी प्रचलित हैं जिनको चलाने के लिए कंप्यूटर पर किसी प्रकार के यूनीकोड समर्थन की आवश्यकता नहीं है परन्तु जावा वर्चुअल मशीन संस्थापित होना आवश्यक है। जी–मेल भी जावा स्क्रिप्ट पर चलता है अर्थात् इसके लिए आपके मशीन में जावा संस्थापित होना तो आवश्यक है ही परंतु साथ ही आपका ब्राउजर भी जावा स्क्रिप्ट चलाने के लायक होना चाहिए। जावास्क्रिप्ट पर आधारित होने के कारण जी–मेल के नए संस्करण को अलग से डाउनलोड करनेकी आवश्यकता नहीं होती है अर्थात् जब भी आप जी–मेल का उपयोग करते हैं यह नवीनतम संस्करण ही रहता है।

हिंदी टाइपिंग के लिए भारत सरकार ने इनस्क्रिप्ट प्रणाली को अधिकारिक रूप से मानक घोषित किया है। यह आपके कंप्यूटर में पहले से ही मौजूद है। यदि आपको इसमें टाइपिंग नहीं भी आती है तो भी आजकल हिंदी टाइपिंग कोई समस्या नहीं रही है, अब आप फोनेटिक टाइपिंग (अंग्रेजी में टाइप करके हिंदी में लिखना) से भी आसानी से लिख सकते हैं। तकनीकी तो एक कदम और आगे बढ़ चुकी है, अब आप बोलकर (वॉइस टाइपिंग) भी हिंदी में टाइप कर सकते हैं। तकनीकी रूप से तो हिंदी ई–मेल भेजने से संबंधित समस्याओं का लगभग समाधान हो चुका है।

कंप्यूटर पर कई अन्य समस्याएं भी आपके समक्ष आती हैं जिनका समाधान एक छोटे से विकल्प का प्रयोग करने से हो जाता है। परन्तु जानकारी के अभाव में हम परेशान होते हैं जैसे–कई बार आप किसी वेबसाइट से कोई टेक्स कॉपी करके लाते हैं और उसे माइक्रोसॉफ्ट वर्ड डॉक्यूमेंट में पेस्ट करते

हैं। पहले तो पेस्ट होने में ही सारा वक्त लग जाता है। दूसरे, जब टैक्सट कॉपी होता भी है तो उसी स्टाइल में जैसे कि वह वेबसाइट में दिख रहा था। अब आपको यह स्टाइल हटाकर अपने डॉक्यूमेंट की स्टाइल (फॉन्ट, साइज, रंग, बुलेट आदि) में बदलने में काफी मेहनत करनी पड़ती है, परंतु यदि आप अपने वेबसाइट टैक्स्ट को डॉक्यूमेंट में पेस्ट करते समय एक छोटी सी सावधानी रख लेंगे तो सारा टैक्स्ट खुद ही आपके डॉक्यूमेंट के स्टाइल में बदलकर पेस्ट हो जाएगा। जब भी कोई टैक्स्ट कॉपी करके लाएं, तब विंडोज के मेन्यू में पेस्ट के लिए दिए गए विकल्पों पर ध्यान दें। इनमें आखिरी विकल्प (जिन पर अंग्रेजी का A लिखा है) पर क्लिक करके पेस्ट करें। यह बटन यह सुनिश्चित करता है कि आपके द्वारा वेबसाइट से कॉपी किए गए टेक्स्ट की सारी फॉरमैटिंग खत्म हो जाए और वह सामान्य टेक्स्ट के रूप में पेस्ट हो। कभी–कभी जल्दबाजी में हम अचानक गलत ई–मेल पते पर ई–मेल भेज देते हैं या बिना File Attachment के ही भेज देते हैं। ऐसी स्थिति में निपटने के लिए कई ई–मेल सेवा प्रदाता Send ई–मेलको Undo करने का Feature भी उपलब्ध कराते हैं। जी–मेल में यूजर्स के लिए ऑफिशियली यह सुविधा उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त, मान लीजिए पावरप्वाइंट पर आपने बहुत सारी इमेज को मिलाकर एक एनिमेशन बनाया गया तमाम तरह के इफेक्ट्स के साथ किसी खास किस्म के लेआउट में कोई इमेज डाली या फिर किसी और की पावरप्वाइंट स्लाइड को इस्तेमाल करते समय लगा कि यह डिजाइन तो बहुत अच्छा लग रहा है लेकिन उसमें इस इमेज को बदलने की जरूरत है। ऐसे में आप पावरप्वाइंट में इमेज को सलेक्ट कर डिलीट करेंगे और फिर दूसरी इमेज को वहीं पर पेस्ट कर देंगे। मगर इससे आपका सारा एनिमेशन हिल जाता है और आपने पहले इमेज के साथ जो फॉरमैटिंग या डिजाइनिंग की थी, वह सब भी चली जाती है। ऐसे में आप जब भी किसी एनिमेशन या विशेष डिजाइन में मौजूद इमेज को बदलना चाहते हैं तो इमेज को सलेक्ट करने के लिए क्लिक कीजिए और Format में जाकर Change Picture पर क्लिक कीजिए। यहां आपको अपनी पीसी में मौजूद दूसरी इमेज सलेक्ट करने या फिर इंटरनेट से कोई इमेज लेने की सुविधा मिलेगी। उसे चुनिए और ओके बटन दबाइए। बस, आपकी नई इमेज पुरानी इमेज में ठीक उसी साइज, रंग–रूप, डिजाइन, इफेक्ट और एनिमेशन के साथ फिट हो जाएगी।

इसी प्रकार यदि आप ऑटो रिकवरी में बदलाव करेंगे तो आपकी ऑफिस फाइलें कभी नहीं खोएंगी। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, एक्सेल, पावरप्वाइंट आदि पर काम करते समय कंप्यूटर आपकी फाइलों को भीतर ही भीतर सेव करता रहता है ताकि अचानक कंप्यूटर बंद हो जाने या बिजली चले जाने जैसी स्थिति में, उन्हें फिर से रिकवर करके आपको दिखाया जा सके। इसे ऑटो रिकवरी कहते हैं। ये फाइलें आपके कंप्यूटर में मौजूद ऑटो रिकवरी फोल्डर में रखी जाती हैं। अगर आप किसी क्लाउड ड्राइव का इस्तेमाल करते हैं और अपने सिस्टम में किसी ड्राइव को क्लाउड के साथ मैप कर चुके हैं (जैसे वन ड्राइव, ड्रॉपबॉक्स, गूगल ड्राइव आदि) तो अपने ऑटो रिकवरी फोल्डर का पता बदलकर इस ड्राइव पर व्यवस्थित कर दीजिए। फिर आपकी कोई फाईल कभी नहीं खोएगी क्योंकि वह सिस्टम के साथ–साथ क्लाउड पर भी सेव होती रहेगी। यह बदलाव करने के लिए file>Option>save पर जाएं और Auto Recovery के साथ दिए Browse बटन को दबाकर नए ऑटो रिकवरी फोल्डर का चुनाव करें।

सूचना प्रौद्योगिकी तथा नित नई विकसित होने वाली तकनीकों से भाषा के विकास को और भी गति मिल रही है। अतः अंत में यह देखा जा सकता है कि न केवल हिंदी भाषा अपितु अन्य भारतीय भाषाओं की प्रगति में भी आई.टी. के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

uerk ctkt
ic/kd ¼jkt Hkk"kk½
dfUn; HkMkj.k fuxe

डिजिटल भुगतान

सरकार का यह उपक्रम, बनाएँ सेवाओं को सुगम।

डिजिटल सेवाएं मिलेंगी, आधारिक संरचना सुधरेगी।

भारत सरकार 'डिजिटल इंडिया' अभियान के हिस्से के रूप में देश में डिजिटल भुगतान देने और प्रोत्साहित करने के लिए कई उपाय कर रही है। डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा आरंभ किया हुआ एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है जिसका मूल उद्देश्य देश के हर विभाग व रेकॉर्ड को एक ही कड़ी से जुड़ना है और वह कड़ी है देश की इलेक्ट्रॉनिक डाटा सिस्टम की कड़ी जो की काम की गति को बढ़ाने में मददगार है।

आजकल देश में सरकार द्वारा विभिन्न स्कीम चलाई जा रहा हैं। इन स्कीमों के तहत गरीब और जरूरत लोगों को विभिन्न मदद प्रदान की जाती हैं, लेकिन असल में ये स्कीमों को सही जन तक पहुंचाया ही नहीं जाता है, और बीच में ही स्कीम के अनुसार अयोग्य लोग इसका फायदा उठा लेते थे। इस तरह की लोभ और अनैतिक कार्यों को रोकने के लिए सरकार ने डिजिटल पैमेंट और डिजिटल प्रोग्राम का आरंभ किया। डिजिटल पैमेंट का उद्देश्य सही लोगों तक उनके हक को पहुँचाना भी है। इस मुहिम का लक्ष्य देश से कागज कार्रवाई को हटाना है जिससे देश की लाखों रूपए खर्च होने के साथ–साथ अनियमितता भी पनपती है।

कैशलेस इकोनोमी का मतलब है कि दो व्यक्तियों के बीच किए गए सभी लेन–देन भुगतान गेटवे के माध्यम से या प्लास्टिक के पैसे के माध्यम से भुगतान करेंगे। इसका प्राथमिक उद्देश्य छिपा के किए जा रहे गैर–पंजीकृत लेनदेन को उजागर करना है।

डिजिटल इंडिया प्रोग्राम से एक स्वच्छ और सत्य भारत का निर्माण हो सकता है।

लोगो का बैंकों में पैंसो के लिए लंबी कतारों में इंतजार करना बहुत कष्टदायक है और यह सामान्य नागरिकों के लिए एक अंतहीन लड़ाई रही है। सरकार का लक्ष्य 'डिजिटल रूप से सशक्त' अर्थव्यवस्था बनाना है जो 'पेपरलेस, कैशलेस' है। डिजिटल भुगतान विधियाँ अकसर आसान होती है, अधिक सुविधाजनक होती है और ग्राहकों को कहीं भी और किसी भी समय भुगतान करने के लिए लचीलापन प्रदान करती हैं। ये भुगतान के पारंपरिक तरीकों के लिए एक अच्छा विकल्प है और लेनदेन चक्र को तेज करते हैं। नोटबंदी के बाद, लोगों ने धीरे–धीरे डिजिटल भुगतान को अपना लिया और यहाँ तक की छोटे समय के व्यापारियों और दुकान मालिकों ने डिजिटल मोड के माध्यम से भुगतान स्वीकार करना शुरू कर दिया। आइए देखें डिजिटल पेमेंट के विकल्प–

1) बैंकिंग कार्ड: कार्ड सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले भुगतान विधियों में से है और भुगतान, सुविधा इत्यादी जैसी विभिन्न सुविधाओं और लाभों के साथ आते है। डेबिट/क्रेडिट या प्रीपेड बैंकिंग कार्ड का मुख्य लाभ यह है कि उनका उपयोग अन्य प्रकार के डिजिटल भुगतान। करने के लिए किया जा सकता है उदाहरण के लिए, ग्राहक नकद रहित भुगतान करने के लिए डिजिटल भुगतान ऐप्स या मोबाइल वॉलेट में कार्ड की जानकारी स्टोर कर सकते हैं। कुछ सबसे प्रतिष्ठित और जाने–माने कार्ड भुगतान प्रणाली वीजा, रूपे और मास्टरकार्ड हैं ऑनलाइन भुगतान के लिए बैंकिंग कार्ड का उपयोग डिजिटल भुगतान ऐप्स, पीओएस मशीनों, ऑनलाइन लेनदेन आदि में किया जा सकता है।

2) यूएसएसडी: एक और प्रकार की डिजिटल भुगतान विधि किसी भी ऐप को डाउनलोड किए बिना मोबाइल लेनदेन करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इन प्रकार के भुगतानों को मोबाइल डेटा सुविधा के साथ भी भुनाया जा सकता है। इस सुविधा का समर्थन यूएसएसडी द्वारा भारत के राष्ट्रीय भुगतान नियम (एनपीसीआई) के साथ किया जाता है। इस प्रकार की डिजिटल भुगतान सेवा का मुख्य उद्देश्य समाज के अवांछित वर्गों के बीच शामिल करने का वातावरण बनाने है और उन्हें मुख्यधारा के बैंकिंग में एकीकृत करना है। इस सेवा का उपयोग फंड ट्रान्सफर शुरू करने, बैंक विवरणों पर नजर डालने और संतुलन बनाने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार की भुगतान प्रणाली का एक अन्य लाभ यह है कि यह हिन्दी में भी उपलब्ध है।

3) एईपीएस: आधार सक्षम भुगतान प्रणाली, एईपीएस के रूप में विस्तारित, सभी बैंकिंग लेनदेन जैसे बैलेंस पूछताछ, नकदी निकासी, नकद जमा, भुगतान लेनदेन, आधार फंड हस्तांतरण आदि के लिए उपयोग किया जा सकता है। सभी लेनदेन बैंकिंग के माध्यम से किए जाते हैं आधार सत्यापन के आधार पर शारीरिक रूप से शाखा में जाने, डेबिट या क्रेडिट कार्ड प्रदान करने, या दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने के कोई आवश्यकता नहीं

है। यह सेवा केवल तभी ली जा सकती है जब आपका आधार नंबर उस बैंक के साथ पंजीकृत हो जहाँ आपके पास खाता है। देश में डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए एनपीसीआई द्वारा यह एक और पहल की गई है।

4. यूपीआई: यूपीआई एक प्रकार का इंटरऑपरेबल पेमेंट सिस्टम है जिसके माध्यम से कोई भी ग्राहक खाता धारण कर सकता है, यूपीआई–आधारित ऐप के माध्यम से पैसा भेज और प्राप्त कर सकता है। यही सेवा किसी उपयोगकर्ता को अपने स्मार्टफोन पर यूपीआई ऐप पर एक से अधिक बैंक खाते को लिंक करने की अनुमति देती है ताकि वह निधि हस्तांतरण शुरू कर सके और सालाना 365 दिनों में और 365 दिनों में एकत्रित अनुरोध कर सके। यूपीआई का मुख्य लाभ यह है कि यह उपयोगकर्ताओं को बैंक खाते या आईएफएससी कोड के बिना पैसे स्थानांतरित करने में सक्षम बनाता है। आपको केवल एक वर्चुअल पेमेंट एड्रेस (वीपीए) चाहिए। बाजार में कई यूपीआई ऐप्स हैं और यह एंड्रॉईड और आईओएस प्लैटफॉर्म दोनों पर उपलब्ध है। सेवा का उपयोग करने के लिए एक वैध बैंक खाता और एक पंजीकृत मोबाइल नंबर होना चाहिए, जो एक ही बैंक खाते से जुड़ा हुआ है। यूपीआई का उपयोग करने के लिए कोई लेनदेन शुल्क नहीं है। इसके माध्यम से, एक ग्राहक पैसा भेज और प्राप्त कर सकता है और संतुलन पूछताछ कर सकता है।

5) मोबाइल वॉलेटट्सः मोबाइल वॉलेट का एक प्रकार ऐप है जिसका उपयोग ऐप डाउनलोड करके किया जा सकता है। डिजिटल या मोबाइल वॉलेट सुरक्षित भुगतान की अनुमति देने के लिए एन्कोडेड प्रारूप में बैंक खाता या डेबिट/क्रेडिट कार्ड की जानकारी या बैंक खाता जानकारी संग्रहीत करता है। कोई भी मोबाइल वॉलेट में पैसा जोड़ सकता है और भुगतान और समान और सेवाओं को खरीदने के लिए इसका उपयोग कर सकता है। देश के कई बैंको ने ई–वॉलेट सेवाएँ लॉन्च की हैं और बैंको के अलावा, कई निजी कम्पनियाँ भी हैं। बाजार में कुछ मोबाइल वॉलेट द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवाओं में पैसा भेजने और प्राप्त करना, व्यापारियों को ऑनलाइन भुगतान करना, ऑनलाइन खरीद आदि शामिल हैं। कुछ मोबाइल वॉलेट एक निश्चित लेने–देने शुल्क ले सकते हैं पेशकश की सेवाओं के लिए।

6) बैंक प्री–पेड कार्डः प्रीपेड कार्ड एक प्रकार का भुगतान साधन है जिस पर आप खरीदारी करने के लिए धन लोड करते हैं। कार्ड के प्रकार को ग्राहक को बैंक खाते से जोड़ा नहीं जा सकता है। हालांकि, बैंक द्वारा जारी एक डेबिट कार्ड ग्राहक के बैंक खाते से जुड़ा हुआ है।

7) पीओएस टर्मिनलोंः परंपरागत रूप से, पीओएस टर्मिनल उन सभी दुकानों पर स्थापित किए गए थे जहां क्रेडिट/डेबिट कार्ड का उपयोग कर ग्राहकों द्वारा खरीद की गई हो। यह आमतौर पर एक हाथ से आयोजित डिवाइस है जो बैंकिंग कार्ड पढ़ता है। हालांकि, डिजिटलीकरण के साथ पीओएस का दायरा बढ़ रहा है और यह सेवा मोबाइल प्लेटफॉर्म पर और इंटरनेट ब्राउजर के माध्यम से भी उपलब्ध है। फिजिकल पीओएस, मोबाइल पीओएस और अभासी पीओएस जैसे विभिन्न प्रकार के पीओएस टर्मिनल हैं। फिजिकल पीओएस टर्मिनल वे हैं जो दुकानों पर रखे जाते हैं। दूसरी तरफ, मोबाइल पीओएस टर्मिनल

टैबलेट या स्मार्टफोन के माध्यम से काम करते हैं। यह छोटे समय के व्यापार मालिकों के लिए फायदेमंद है क्योंकि उन्हें महंगा इलेक्ट्रोनिक रजिस्टरों में निवेश करने की जरूरत नहीं है। वर्चुअल पीओएस सिस्टम भुगतान संसाधित करने के लिए वेब आधारित अनुप्रयोगों का उपयोग करते हैं।

8) इंटरनेट बैंकिंगः इंटरनेट बैंकिंग ऑनलाइन बैंकिंग लेनदेन करने की प्रक्रिया को संदर्भित करती है। इनमें कई सेवाएं शामिल हो सकती हैं जैसे धन हस्तांतरण करना, एक नया तय या आवर्ती जमा खोलना, खाता बंद करना आदि। इंटरनेट बैंकिंग को ई–बैंकिंग भी कहा जाता है। इंटरनेट बैंकिंग आमतौर पर एनईएफटी, आरटीजीएस या आईएमपीएस के माध्यम से ऑनलाइन फंड ट्रान्सफर करने के लिए उपयोग की जाती है। बैंक ग्राहकों को अपनी वेबसाइट के माध्यम से सभी प्रकार की बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं और ग्राहक उपयोगकर्ता नाम और पासवर्ड का उपयोग करके अपने खाते में लॉग–इन कर सकते हैं और उन्हें किसी भी समय और 365 दिनों में एक वर्ष में लाभ उठाया जा सकता है। इंटरनेट बैंकिंग सेवाओं के लिए एक विस्तृत दायरा है।

9) मोबाइल बैंकिंगः मोबाइल बैंकिंग को स्मार्टफोन के माध्यम से वित्तीय लेनदेन/बैंकिंग लेनदेन करने की प्रक्रिया को संदर्भित किया जाता है। मोबाइल बैंकिंग का दायरा केवल कई मोबाइल वोलेट, डिजिटल भुगतान ऐप्स और यूपीआई जैसी अन्य सेवाओं के परिचय के साथ विस्तार कर रहा है। कई बैंको के पास अपने स्वयं के ऐप्स होते हैं और ग्राहक बटन के क्लिक पर बैंकिंग लेनदेन करने के लिए इसे डाउनलोड कर सकते हैं। मोबाइल बैंकिंग व्यापक अवधी या सेवाओं के लिए उपयोग की जाने वाली विस्तृत अवधि है जिसका उपयोग इस प्रकार किया जा सकता है।

10) भारत इंटरफेस फॉर मनी (बीएचआईएम) ऐपः बीएचआईएम ऐप यूपीआई एप्लीकेशन का उपयोग करके भुगतान करने की अनुमति देता है। यह यूपीआई के सहयोग से भी काम करता है और वीपीए का उपयोग करके लेनदेन किया जा सकता है। कोई भी अपने बैंक खाते को बीएचआईएम इंटरफेस से आसानी से जोड़ सकता है। एक से अधिक बैंक खातों को लिंक करना भी संभव है। बीएचआईएम ऐप का इस्तेमाल किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है जिसके पास मोबाइल नंबर, डेबिट कार्ड और वैध बैंक खाता है। पैसा विभिन्न बैंक खातों को लिंक करना भी संभव है। बीएचआईएम ऐप का इस्तेमाल किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है जिसके पास मोबाइल नंबर, डेबिट कार्ड और वैध बैंक खाता है। पैसा विभिन्न बैंक खातों, आभासी पते या आधार संख्या में भेजा जा सकता है। ऐसे कई बैंक भी है जिन्होंने एनपीसीआई और बीएचआईएम के साथ सहयोग किया है ताकि ग्राहकों को इस इंटरफेस का उपयोग करने की अनुमति मिल सके।

fMft Vy Hkqxrku dk ykHk

1) तेज, आसान, अधिक सुविधाजनकः शायद, नकदी रहित भुगतान के सबसे बड़े फायदे में से एक यह है कि यह भुगतान प्रक्रिया को गति देता है और लंबी जानकारी भरने की आवश्यकता नहीं होती है। एटीएम से पैसा निकालने या वोलेट में कोई ले जाने के लिए लाइन में खड़े होने को कोई जरूरत नहीं है। साथ ही डिजिटल जाने के साथ, बैंकिंग सेवाएं ग्राहकों के लिए 24/7 आधार पर और एक वर्ष के सभी दिनों में बैंक छुट्टियों सहित उपलब्ध होगी। डिजिटल वोलेट, यूपीआई, आदि जैसी कई सेवाएं इस आधार पर काम करती है।

2) आर्थिक और कम लेनदेन शुल्कः कई भुगतान ऐप्स और मोबाइल वोलेट है जो प्रदान की जाने वाली सेवा के लिए किसी भी प्रकार का सेवा शुल्क या प्रसंस्करण शुल्क नहीं लेते है। यूपीआई इंटरफेस एक ऐसा उदाहरण है, जहाँ सेवाओं का उपयोग ग्राहक द्वारा निशुल्क किया जा सकता है। विभिन्न डिजिटल भुगतान प्रणाली लागत कम कर रहे हैं।

3) छूट और कैशबैकः डिजिटल भुगतान ऐप्स और मोबाइल वोलेट का उपयोग कर ग्राहकों को कई पुरस्कार और छूट प्रदान की जाती है। कई डिजिटल भुगतान बैंकों द्वारा दिए गए आकर्षक नकद वापस ऑफर हैं। यह ग्राहकों के लिए वरदान के रूप में आता है और नकद रहित जाने के लिए प्रेरक कार्य भी करता है।

4) लेनदेन का डिजिटल रेकॉर्डः डिजिटल रिकार्ड के अन्य लाभों में से एक यह है कि सभी लेनदेन को ट्रैक कर सकते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लेनदेन कितना छोटा है।

5) बिलों का भुगतान करने के लिए एक स्टॉप समाधानः कई डिजिटल वोलेट और भुगतान ऐप्स उपयोगिता बिलों का भुगतान करने के लिए एक सुविधाजनक मंच बन गए हैं। चाहे वह मोबाइल, फोन बिल, इंटरनेट या बिजली का बिल

हों, ऐसे सभी उपयोगिता बिलों को बिना किसी परेशानी के एक ऐप के माध्यम से भुगतान किया जा सकता है।

6) काले धन को नियंत्रण में रखने में मदद करता है: डिजिटल लेनदेन चीजों का ट्रैक रखने में मदद करेगा और इससे लंबे समय तक काले धन और नकली नोटों के संचालन को खत्म करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, यह अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा दे सकता है क्योंकि खनन मुद्रा की लागत भी कम हो जाती है।

pukfr ;k

1) साइबर सुरक्षा: अक्तूबर 2016 में, एटीएम में 30 लाख से अधिक डेबिट कार्ड का विवरण सामने आया था। ऐसा माना जाता था की कार्ड और पिन विवरण लीक हो गए थे। जिसके कारण ग्राहकों को सलाह दी गई थी की वे अपने एटीएम–सह–डेबिट कार्ड के पिन बदल दें। नए कार्ड जारी करने के कठोर कदम भी उठाए गए थे। सिर्फ एक महीने बाद, प्रधान मंत्री लोगों को नकद रहित समाज के लिए प्रेरित कर रहे हैं। क्या साइबर सुरक्षा जगह पर है? जबकि एक कार्ड क्लोन किया जाता है, बैंको से किसी की कड़ी मेहनत के पैसों को ठीक करने में कई महीने लगते हैं। लोगों को आश्वासन दिया जा सकता है छोटी दुकानों और विक्रेताओं पर कार्ड स्वाईप करने से हमारे कार्ड के विवरण को प्रकट करने का जोखिम नहीं होगा।

2) पर्याप्त बैंकिंग बुनियादी ढांचे की कमी – भारत में, हर 100,000 वयस्कों के लिए 10.5 बैंक शाखाएँ है। हालांकि नवीनतम अनुमानों के मुताबिक जन धन बैंक खातों की संख्या 220 मिलियन है, जबकि अंतिम उपयोगकर्ता तक पहुँचने में समस्या बनी हुई है और निष्क्रिय खातों की संख्या में योगदान दिया गया है। उदाहरण के लिए पेंशन या छात्रवृत्ति भुगतान का मामला लें, जहाँ डाक सेवाओं के माध्यम से अपने दरवाजे पर नकद प्राप्त करने की बजाय, लाभार्थियों को अब बैंक तक पहुँचने और उनके भुगतान वापस लेने के लिए यात्रा करना है। यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट हो जाता है की डिजिटलीकरण स्थानांतरण हमेशा गरीबों के पक्ष में काम नहीं करता है, जब तक कि इसके उपयोग को सुविधाजनक बनाने के अभिनव तरीकों से पूरक न हों। जबकि डीबीटी का सिद्धांत जादू की तरह काम करता है, वर्तमान बैंकिंग आधारभूत संरचना इन बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार नहीं है, खासतौर से ग्रामीण गरीबों के लिए।

3) आधार रजिस्ट्री में नामांकन: डीबीटी के लिए अपनी पूरी क्षमता पर काम करने के लिए, इसे आधार रजिस्ट्री, संपूर्ण पहचान कार्यक्रम में संपूर्ण वयस्क आबादी के साथ नामांकन की आवश्यकता होगी। हालांकि, 75% आबादी अब तक नामांकित की गई है, आधार संख्या को बैंक खाता संख्या से जोड़ने की प्रक्रिया धीमी रही है। नवीनतम अनुमानों के मुताबिक, सरकार के प्रधान मंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) के वित्तीय समावेशन कार्यक्रम के माध्यम से केवल 48% बैंक खाते आधार से लिंक हैं।

4) खराब नेटवर्क कनेक्टिविटी: डीबीटी मंच के लिए मोबाइल फोन का उपयोग महत्वपूर्ण है, क्योकि प्राप्तकर्ता मोबाइल अलर्ट के माध्यम से अपने भुगतान के बारे में जानेंगे। हालांकि, खराब नेटवर्क कनेक्टिविटी एक बाधा है। इसके अलावा, डिजिटल लेनदेन करने के लिए स्मार्टफोन और मोबाइल मनी वोलेट का अधिक उपयोग करने की आवश्यकता होती है, जिससे अच्छी नेटवर्क कनेक्टिविटी के महत्व पर जोर दिया जाता है।

5) शिकायत निवारण तंत्र की कमी: चिंता का एक प्रमुख क्षेत्र असंदिग्धता शिकायतों को दूर करने के तरीकों को लेकर है। उदाहरण के लिए, यदि प्राप्तकर्ताओं को किसी भी देरी का सामना करना पड़ता है, या यदि भुगतान राशि में विसंगतिया है, तो कौन जिम्मेदार है?

6) ग्रामीण भारत: ग्रामीण इलाकों में कुछ समस्याएँ हो सकती हैं। जैसे–

* सभी गावों को बिजली प्रदान नहीं की जाती है।

* डिजिटल केबल पूरे भारत में शामिल नहीं है।

* ग्रामीण स्मार्टफोन या लैपटॉप खरीद नहीं पाएँगे।

* खातों के संचालन, मोबाइल के माध्यम से लेनदेन आयोजित करना और ऑनलाइन भुगतान करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

* आसान पहुँच के लिए कम से कम 3 कि.मी. की दूरी पर एटीएम केंद्र प्रदान किए जाएंगे।

* वर्तमान में प्रत्येक 1000 वयस्कों के लिए 480 खाते है। इसे सुधार की जरूरत है और पूरी वयस्क आबादी को शामिल किया गया जाना चाहिए।

* छह लाख गावों के लिए केवल 40000 बैंक है। प्रत्येक

5000 वयस्कों के लिए कम से कम एक बैंक प्रदान किया गया है।

* परिसंचरण में 712 मिलियन डेबिट कार्ड है। वर्तमान में इन कार्डों का उपयोग एटीएम काउंटर में सालाना केवल 12 बार और सालाना दो बार बिक्री के बिन्दु पर किया जाता है। यह बहुत कम है और सुधार की जरूरत है।

* गुणवत्ता बिजली के प्रावधान के उपर्युक्त कारक, डिजिटल कनेक्शन, बैंकिंग सुविधा, स्मार्ट फोन संचालित करने के लिए शिक्षा आदि प्रदान करना, नकद रहित लेनदेन या डिजिटल भुगतान प्रणाली के कार्यान्वयन से पहले प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

l|>ko

1) ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल बैंकिंग सिस्टम के प्रचार में लोगों को स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) बहुत मददगार हो सकते हैं। अधिक से अधिक एसएचजी को बैंक मित्र का प्रभार दिया जाना चाहिए जो डिजिटल अर्थव्यवस्था के प्रसार के लिए बैंक, डाकघर और बैंक में अपनी सहायता बढ़ा सकते हैं।

2) युवा ग्रामीण बुनियादी ढांचे जैसे ग्रामीण क्लबों और महिला और पंचायती राज संस्थानों को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रसार के लिए सक्रिय किया जाना चाहिए।

3) स्कूल के शिक्षकों, स्वास्थ्य कर्मियों, गाँव विकास अधिकारियों, आंगनवाड़ी श्रमिकों आदि जैसे सभी लाइन विभाग कार्यकर्ताओं को लोगों को वित्तीय समावेश और डिजिटल अर्थव्यवस्था के बारे में शिक्षित करना चाहिए।

4) पल्स पोलियो अभियान की तरह, डिजिटल इंडिया अभियान साल में दो बार या तीन बार बड़े पैमाने पर देश में आयोजित किया जा सकता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों दोनों में डिजिटल इंडिया अभियान का प्रचार करने का यह एक उचित तरीका है।

1) प्रबंधकीय प्रभाव के लिए किसी भी देश की भुगतान प्रणाली को सुरक्षा, सुरक्षा ध्वनि, दक्षता और अभिगम्यता के लिटमस परीक्षण को पास करने की आवश्यकता है। इन सभी को संबोधित करने के लिए, भुगतान प्रणाली वस्तु (बार्टर) से मुद्रा तक और वहाँ से डिजिटल सिस्टम तक विकसित हुई है। हम इलेक्ट्रोनिक सिस्टम द्वारा भौतिक/कागज आधारित प्रणाली के एकाधिकार को बाधित करते हुए, भुगतान प्रणाली में भारी परिवर्तन देख रहे हैं। अवसरों पर पूंजीकरण के मामले में, यह बहुत जरूरी है कि समाधानों को और अधिक मजबूत होना चाहिए।

डिजिटल भुगतान धीरे–धीरे भारत में लोकप्रियता प्राप्त कर रहें है और इस क्षेत्र में कई ऐप्स लॉंच किए जा रहे हैं। यह भुगतान करने के लिए एक परेशानी मुक्त और सुरक्षित तरीका बन गया है। कैशलेस इंडिया का भविष्य देश की प्रतिक्रिया के रूप में काफी आशाजनक दिखता है। अर्थव्यवस्था में पारदर्शिता ई–कॉमर्स लेनदेन और डिजिटल भुगतान गेटवे के माध्यम से बढ़ेगी जो अर्थव्यवस्था के जीडीपी में वृद्धि करेगी। इससे देश की विश्वसनीयता में वृद्धि होगी और निवेश में वृद्धि होगी।

एक नकद रहित समाज, अब के लिए एक दूर सपने की तरह लगता है, लेकिन कम नकदी समाज की सराहना की जा सकती है।

सरकार को आवश्यक कदम उठाने और नकद रहित अर्थव्यवस्था की तैयारी करते समय कुछ नीतिगत विचार करने की जरूरत है। किन्तु सिर्फ सरकार के प्रयास काफी नहीं। समाज को नकदी रहित अर्थव्यवस्था के महत्व को समझना है और सरकार द्वारा उठाए गए उपायों की सराहना करनी है। एक निष्कर्ष के रूप से लोगों, व्यवसायों और सरकार की सुविधा के मुकाबले बहुत अधिक लाभ मिलते हैं। तो चलिए मिलके भारत की अर्थव्यवस्था को एक नए सुनहरे दौर की और लेकर चलें।

कैशलेस भुगतान, सुरक्षित व आसान।

l|t; orh
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, ओएनजीसी, दिल्ली

खिडकी वाली सीट

बात उस समय की है, जब में 7 साल का था। एक दिन मेरे पापा, अपने काम से लौटे तो उन्होंने बताया, हम सब एल.टी.सी. पर घूमने जा रहे हैं, बम्बई और गोवा। मैं और मेरे दोनों बड़े भाई खुशी से उछल पड़े। हम इतने खुश थे कि हमारे पाँव जमीन पर नहीं थे। मैं यह बात सबसे पहले अपने दोस्तों को बताना चाहता था, मैं सुबह का इंतजार कर रहा था, अपने दोस्त को यह खुशखबरी बताने के लिए। मैं जैसे ही स्कूल पहुँचा मैंने उछल–उछल कर अपने दोस्तों को घूमने की बात बताई।

फिर मैं सपने बुनने लगा ट्रेन के, बम्बई और गोवा के। उन सपनों की वजह से मैं 2–3 दिन ठीक से सो भी नहीं पाया। मुझे पापा से पता लगा कि हम डीलक्स ट्रैन से बम्बई जाएँगे, जो उस समय बहुत महंगी ट्रेन होती थी। मेरी तो कोई खुशी की सीमा ही नहीं थी। बचपन की यह बात मैं आज भी याद करता हूँ तो रोमांचित हो उठता हूँ।

मैं एक–एक दिन गिन कर काट रहा था कि किस दिन बम्बई जाएँगे, मैंने मन ही मन बहुत कहाँनियाँ गढ ली थी कि मुझे क्या–क्या करना है सफर में। मैंने सोचा कि मै एक खिलौना ट्रेन में अपने साथ ले जाऊँगा जो देखने में बहुत हल्की थी और उसे ट्रेन की खिड़की से बाँध कर बाहर लटका दूगाँ और वह मेरी ट्रेन के साथ–साथ चलेगी। मैंने यह भी सोचा हुआ था कि मैं अपने भाईयों को खिड़की वाली सीट पर नहीं बैठने दूगाँ चाहे उनसे मुझे लड़ना पड़े। आखिर वह दिन आया जिसदिन हमें ट्रेन में जाना था। मेरे प्लान के मुताबिक मैं खिड़की वाली सीट पर बैठा और जब ट्रेन चलने लगी तो मैंने अपनी धागे से बँधी खिलौना ट्रेन को बाहर लटका दिया, सबसे नजर चुरा कर। मैं यह बात अपने भाईयों को बताना नहीं चाहता था, मुझे लगा कि वो लोग मुझ पर हँसेगे।

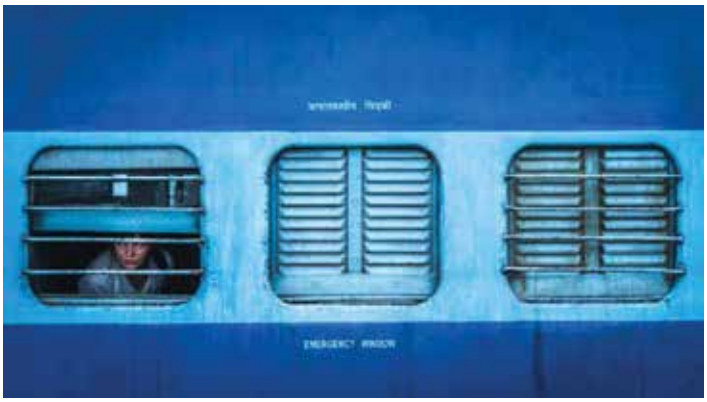

थोड़ी देर तक धागे से बंधा खिलौना चलता रहा साथ–साथ ट्रेन के। जैसे ही ट्रेन ने रफतार पकडी कि धागा टूट गया और मेरी धागे वाली खिलौना ट्रेन से गिर गई। मेरे अरमान मिट्टी में मिल गए, मैंने घूम कर सबकी तरफ देखा कि कोई मुझे देख तो नहीं रहा है। कोई नहीं देख रहा था। मेरा मन बहुत भारी था।

यह घटना मैं आज भी याद करता हूँ तो मन में गुदगुदी होती है। कितना अच्छा होता है बचपन।

t lor d|ekj jktkjk
सहायक महाप्रबंधक(रसायन)/प्रभारी(प्रशासन)
हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड, दिल्ली कार्यालय

एक माँ-बाप की कहानी

जीवन के बीस साल हवा की तरह उड़ गए। फिर शुरू हुई नौकरी की खोज। ये नौकरी नहीं, वो नहीं, यह नौकरी दूर है, वह नौकरी पास है। ऐसा करते–करते दो–तीन नौकरी छोड़ने के बाद एक नौकरी तय हुई। थोड़ी स्थिरता की शुरुआत हुई।

फिर हाथ में आया पहली तंख्वाह का चैक। चैक बैंक में जमा हुआ और शुरू हुआ अकाउंट में जमा होने वाले शून्यों का अंतहीन खेल। दो–तीन वर्ष और निकल गए, बैंक में थोड़े और शून्य बढ़ गए। उम्र सत्ताईस साल हो गई और फिर विवाह हो गया, विवाह होते ही जीवन की राम कहानी शुरू हो गई। शुरू के दो–तीन साल नर्म, गुलाबी, रंग–बिरंगे, रसीले, सपनीले गुजरे। हाथों में हाथ डाल कर घूमना–फिरना, रंग–बिरंगे सपने देखना। परंतु ये दिन जल्दी ही उड़ गए और बच्चे की आने की आहट हुई, वर्ष भर में बच्चा पालना झुलने लगा। अब सारा ध्यान बच्चे पर केंद्रित हो गया और शुरू हुआ बच्चे का उठना, बैठना, खाना–पीना, लाड़–दुलार आदि।

इसी बीच समय कैसे फटाफट निकल गया हम दोनों को ही पता नहीं चला। इस बीच कब मेरा हाथ उसके हाथ से निकल गया, दोनो का साथ–साथ घूमना–फिरना कब बंद हो गया दोनों को ही पता नहीं चला। बच्चा बड़ा होता गया वो बच्चों में व्यस्त हो गई और मैं अपने काम में वयस्त हो गया। घर और गाड़ी की किस्त, बच्चे की जिम्मेदारी, शिक्षा और भविष्य की सुविधा और बैंक में शून्य बढ़ाने की चिन्ता। पत्नी और मैंने दोनों ने ही अपने आपको अपने–अपने कार्य एवं जिम्मेदारियों में झोंक दिया। इतने मैं में अड़तीस साल का हो गया। परिवार में गाड़ी, बैंक शून्य सब हैं फिर भी कुछ कमी महसूस होती है कुछ भी समझ में नहीं आया। पत्नी की चिड़–चिड़ बढती गई, मैं भी उदासीन होने लगा। समय गुजरता गया बच्चा बड़ा होता गया उसका खुद का संसार तैयार होता गया। कब दसवीं, बारहवीं और यूनीवर्सिटी आई और चली गई पता ही नहीं चला, तब तक हम दोनो चालीस–पैंतालीस साल के हो गए और बैंक में शून्य बढ़ता ही गया।

एक नितांत एकांत क्षण में मुझे वो गुजरे दिन याद आए और मौका देख कर उससे कहा "अरे जरा सुनो, जरा यहाँ आओ, पास बैठो चलो दोनों हाथ में हाथ डाल कर कहीं घूम कर आते हैं।'' उसने अजीब नजरों से मुझे देखा और कहा कि तुम्हें कुछ भी सूझता है। यहाँ ढेर सारा काम पड़ा है तुम्हें बातों की सूझ रही है। कमर में पल्लू खोंस कर निकल गई और फिर अपने घर के काम में लग गई। फिर आया पैंतालिसवाँ साल,

आँखो पर चश्मा लग गया, बाल काला रंग छोड़ने लगे, दिमाग में कुछ उलझनें पैदा हो गई। बेटा उधर कालेज में था और इधर बैंक में शून्य बढ़ रहे थे। देखते–देखते उसका कालेज खत्म हो गया और वह अपने पाँव पर खड़ा हो गया। पत्नी के बालों का रंग भी सफेद हो गया, दिमाग भी साथ छोड़ने लगा और उसे चश्मा भी लग गया। मैं खुद बूढ़ा हो गया और वो भी उम्रदराज लगने लगी। दोनों ही साठ साल की ओर बढने लगे। बैंक में शून्य की कोई खबर नहीं और इन सबके साथ ही बाहर आने–जाने के कार्यक्रम भी बंद होने लगे। अब तो दवाई के दिन और समय निश्चित होने लगे। सोचा था कि बच्चे बड़े होंगे तो तब हम सब साथ रहेंगे। घर अब बोझ लगने लगा। बच्चे कब वापिस आएंगे यही सोचते–सोचते बाकी के दिन गुजरने लगे।

एक दिन मैं यूँ ही सोफे पर बैठ कर ठंडी हवा ले रहा था और वो दिया–बाती कर रही थी तभी फोन की घंटी बजी तुरंत लपक कर फोन उठाया। फोन पर दूसरी तरफ बेटा था जिसने कहा कि उसने शादी कर ली और अब वह वही रहेगा। उसने यह भी कहा कि पिता जी आप अपने बैंक के शून्य को किसी वृद्धा आश्रम में दे देना और आप भी वही रह लेना कुछ और औपचारिक बात करके बेटे ने फोन काट दिया। मैं पुनः सोफे पर आकर बैठ गया और पत्नी की भी पूजा–बाती हो गयी थी। मैंने उसे आवाज दी और प्यार भरे शब्दों में कहा कि चलो आज फिर हम हाथों में हाथ डालकर बातें करते हैं पत्नी तुरंत बोली ''अभी आई''। मुझे विश्वास नहीं हुआ और चेहरा खुशी से चमक गया और मैं सारी पुरानी बातें भूल गया, आँखे भर आई, आँखो से आँसू गिरने लगे और गाल भीग गए। अचानक आँखो की चमक फीकी पड़ गई और निस्तेज हो गया। हमेशा की तरह उसने शेष पूजा की और मेरे पास आकर बैठ गई

और बोली "बोलो क्या बोल रहे थे" लेकिन मैंने कुछ भी नहीं कहा। उसने मेरे शरीर को छू कर देखा शरीर बिलकुल ठंडा पड़ गया था। मैं उसकी ओर एक टक देख रहा था। क्षण भर को वो शून्य हो गई "क्या करूँ" उसे कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन एक–दो मिनट में वो चेतन्य हो गयी, धीरे से उठ कर पूजा घर में गई, एक अगरबत्ती की, भगवान को प्रणाम किया और फिर से सोफे पर आकर बैठ गयी।

मेरा ठंडा हाथ अपने हाथों में लिया और बोली "चलो कहाँ घूमने चलना है तुम्हें ? क्या बातें करनी हैं तुम्हें ? " बोलो !! ऐसा कहते हुए उसकी आँखे भर आयी। वो एक टक मुझे देखती रही और उसकी आँखों से आँसू की धारा बह निकली। मेरा सर उसके कंधो पर गिर गया। ठंडी हवा का झोंका अब भी चल रहा था। क्या ये ही जिन्दगी है ?

सब अपना–अपना नसीब लेकर आते हैं। इसलिए कुछ समय अपने लिए भी निकालो। जीवन अपना है तो जीने के तरीके भी अपने रखो। शुरुआत आज से ही करो क्योंकि कल कभी नहीं आएगा। मित्रों आँसू जरूर बहने देना, रोकना नहीं, बोझ कुछ कम हो जाएगा।

bUnj jkt
उप–प्रबंधक(प्रशासन)
हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड, दिल्ली कार्यालय

सीढ़ी चाँद तक

दुनिया की इस भागम–भाग से
दुखों की इस जलती आग से
जब मैं साथ चल न पाई
मैंने चांद तक एक सीढ़ी बनाई
सोचा धरती पर रहना नहीं अब
कोई नहीं है अपना यहाँ जब
पैसे की जय – जयकार है
गरीबों की सिर्फ हार है।
मिलती भी नहीं दो वक्त की रोटी
आँखों में बेबसी दिल में हा–हा कार है
चढ़ने लगी सीढ़ी पर जब मैं
देखा फिर दुनिया की ओर
और चली मैं चाँद की ओर
चारों तरफ अंधकार है, दूर तक पत्थर थे फैले हुए
घुटन ही घुटन
शायद यही चांद था।
हरा–भरा हिमालय भी नहीं
सोचा पल–भर आराम कर लूं
पर यहाँ तो तारों से भरा आसमान भी नहीं
प्यास लगी तो पता चला, यहाँ तो गंगा की धारा भी नहीं
डरने लगी चांद पर मैं अब

माँ को लगी बुलाने
पर यहाँ तो माँ भी नहीं, पापा का दुलार भी नहीं
न भाई न बहन न गंगा
ये कैसा है चंदा
मेरी धरती सब से प्यारी है
दुख है तो सुख भी है
टूटे सपने तो नए मिले
रोज नए–नए फूल खिले
अचानक नींद से जगा दिया
माँ ने चंदा से धरती पर ला दिया!

l|Jh liuk HkkfV;k
(एटीटी कनिष्ठ कम्प्यूटर सहायक)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड

''यह भी कट जाएगा''... प्रेरणा का स्रोत

जिंदगी है तो संघर्ष हैं, तनाव है, काम का दबाव है, खुशी है, डर है! लेकिन अच्छी बात यह है कि ये सभी स्थायी नहीं हैं! समय रूपी नदी के प्रवाह में सब प्रवाहमान हैं! कोई भी परिस्थिति चाहे खुशी की हो या गम की, कभी स्थाई नहीं होती, समय के अविरल प्रवाह में विलीन हो जाती है!

ऐसा अधिकतर होता है कि जीवन की यात्रा के दौरान हम अपने आपको कई बार दुःख, तनाव, चिंता, डर, हताशा, निराशा, भय, रोग इत्यादि के मकड़जाल में फंसा हुआ पाते हैं। हम तत्कालिक परिस्थितियों के इतने वशीभूत हो जाते हैं कि दूर–दूर तक देखने पर भी हमें कोई प्रकाशकी किरण लेशमात्र भी दिखाई नहीं देती, दूर से चींटी की तरह महसूस होनेवाली परेशानी हमारे नजदीक आते–आते हाथी के जैसा विशालकायरूप धारण कर लेती है और हम उसकी विशालता और भयावहता के आगे समर्पण कर परिस्थितियों को अपने ऊपर हावी हो जाने देते हैं, वो परिस्थिति हमारे पूरे वजूद को हिला डालती है, हमें हताशा, निराशा के भंवर में उलझा जाती है.. एक–एक क्षण पहाड़ सा प्रतीत होता है और हम सबमें से ज्यादातर लोग आशा की कोई किरण न देख पाने के कारण, हताश होकर परिस्थिति के आगे अपने हथियार डाल देते हैं!

अगर आप किसी अनजान, निर्जन रेगिस्तान में फंस जाएँ तो उससे निकलने का सिर्फ एक ही उपाय है, बस–चलते रहें! अगर आप नदी के बीच जाकर हाथ पैर नहीं चलाएंगे तो निश्चित ही डूब जाएंगे। जीवन में कभी ऐसा क्षण भी आता है, जब लगता है कि बस अब कुछ भी बाकी नहीं है, ऐसी परिस्थिति में अपने आत्मविश्वास और साहस के साथ सिर्फ डटे रहें क्योंकि–

"हर चीज का हल होता है, आज नहीं तो कल होता है!''

एक बार एक राजा की सेवा से प्रसन्न होकर एक साधू ने उसे एक ताबीज दिया और कहा कि राजन इसे अपने गले में डाल लो और जिंदगी में कभी भी ऐसी परिस्थिति आये कि जब तुम्हें लगे कि बस अब तो सब खत्म होने वाला है, परेशानी के भंवर में अपने को फंसा पाओ कोई प्रकाश की किरण नजर न आ रही हो, हर तरफ निराशा और हताशा हो, तब तुम इस ताबीज को खोलकर इसमें रखे कागज को पढ़ना, उससे पहले नहीं!

राजा ने वह ताबीज अपने गले में पहन लिया! एक बार राजा अपने सैनिकों के साथ शिकार करने घने जंगल में गया! एक शेर का पीछा करते करते राजा अपने सैनिकों से अलग हो

गया और दुश्मन राजा की सीमा में प्रवेश कर गया। घना जंगल और सांझ का समय तभी कुछ दुश्मन सैनिकों के घोड़ों की टापों की आवाज राजा को आई और उसने भी अपने घोड़े को एड लगाई। राजा आगे–आगे दुश्मन सैनिक पीछे–पीछे। बहुत दूर तक भागने पर भी राजा उन सैनिकों से पीछा नहीं छुड़ा पाया। भूख प्यास से बेहाल राजा को तभी घने पेड़ों के बीच में एक गुफा सी दिखी। उसने तुरंत स्वयं और घोड़े को उस गुफा की आड़ में छुपा लिया! और सांस रोक कर बैठ गया। दुश्मन के घोड़ों के पैरों की आवाज धीरे–धीरे पास आने लगी! दुश्मनों से घिरे हुए अकेले राजा को अपना अंत नजर आने लगा। उसे लगा की बस कुछ ही क्षणों में दुश्मन उसे पकड़कर मौत के घाट उतार देंगे! वो जिंदगी से निराश हो ही गया था कि अचानक उसका हाथ अपने ताबीज पर गया और उसे साधू की बात याद आ गई! उसने तुरंत ताबीज को खोल कर कागज को बाहर निकाला और पढ़ा! उस पर्ची पर लिखा था–"यह भी कट जाएगा''

राजा को अचानक ही जैसे घोर अन्धकार में एक ज्योति की किरण दिखी। डूबते को जैसे कोई तिनके का सहारा मिल गया हो! उसे अचानक अपनी आत्मा में एक अकथनीय शान्ति का अनुभव हुआ! उसे लगा कि सचमुच यह भयावह समय भी कट ही जाएगा, फिर मैं क्यों चिंतित होऊं! अपने प्रभु और अपने पर विश्वास रख उसने स्वयं से कहा कि हाँ, यह भी कट जाएगा और हुआ भी यहीं। दुश्मन के घोड़ों के पैरों की आवाज पास आते–आते दूर जाने लगी, कुछ समय बाद वहां शांति सी छा गई! राजा रात में गुफा से निकला और किसी तरह अपने राज्य में वापस आ गया!

मित्रों यह सिर्फ किसी राजा की कहानी नहीं है यह हम सब की कहानी है! हम सभी परिस्थिति, काम, तनाव के दबाव में इतने जकड़ जाते हैं कि हमें कुछ सूझता ही नहीं है। हमारा डर हम पर हावी होने लगता है। कोई रास्ता, समाधान दूर–दूर

तक नजर नहीं आता। लगने लगता है कि बस, अब सब कुछ खत्म है?

जब भी ऐसा हो तो केवल 2 मिनट शांति से बैठिए, थोड़ी गहरी–गहरी साँसे लीजिये। अपने आराध्य को याद कीजिये और स्वयं से जोर से कहिए यह भी कट जाएगा! आप देखेंगे कि एकदम से जादू सा महसूस होगा और आप उस परिस्थिति से उबरने की शक्ति अपने अन्दर महसूस करेंगे! यह आजमाया हुआ है और बहुत कारगर है!

आशा है जैसे यह सूत्र मेरे जीवन में मुझे प्रेरणा देता है, आपके जीवन में भी प्रेरणादायक सिद्ध होगा!

vujk/kk f}onh
उपप्रबंधक, युनाइटेड इंडिया इंश्यूरेस कंपनी लिमिटेड

क्या लिखूं

कलम को हाथ में लेकर,
सोचता हूँ कुछ लिखूं,
पर कुछ लिख नहीं पाता हूँ।
ऐसा नहीं है कि,
भाव नहीं है कुछ
लिखने के लिए।
पर भावों की बाढ़ में,
कुछ पकड़ नहीं पाता हूँ।
बेरोजगारी महामारी या,
महंगाई की मार हो।
रिश्तों की कड़वाहट या,
अशिक्षा का अंधकार हो।
पर्यावरण का संकट या,
बढ़ता तापमान हो।
पहाड़ों की पिघलती बर्फ या,
नदियों की बाढ़ हो।
सड़क किनारे सोता आदमी या,
भूख से चिल्लाते बच्चे हों।
घरों की चार दिवारी या,
बाहर की मजबूरी हो।

महिलाओं का उत्पीड़न या,
बच्चों का शोषण हो।
घर के बुजुर्गों या,
अनाथालयों के असहायों
की कहानी हो।
राजनेताओं की अवसरवादिता या
नौकरशाहों की असंवेदनशीलता हो।
सभी भाव आते है मन में,
और इन्हीं में घूमता हूँ।
पर किसी एक भाव को,
लेखनी से कागज पर
नहीं उकेर पाता हूँ
सोचता हूँ कुछ लिखूं
पर कुछ लिख नहीं पाता हूँ।

je'k pUæ 'kDy
(वरिष्ठ प्रबंधक)
बी.ई.एम एल लिमिटेड

स्वतंत्र भारत@75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्षों में भारत की विकास यात्रा गौरवमयी रही है। आजादी के बाद हमने विभिन्न क्षेत्रों में अपने स्वयं के मानक स्थापित किए हैं। कृषि क्षेत्र से लेकर अंतरिक्ष तक, संचार क्रांति से लेकर ट्रेन बनाने तक हर कार्य में भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। दिन प्रतिदिन नए–नए आविष्कारों से भारत उन्नत बन रहा है, परिणामस्वरूप हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यह सब सत्यनिष्ठा से ही संभव हो पाया है। सत्यनिष्ठा कोई वस्तु नहीं है जिसे खरीदा या बेचा जा सके सत्यनिष्ठा के मात्र कुछ नियम हैं जिनको सच्चाई एवं ईमानदारी से निभाने पर व्यक्ति तथा राष्ट्र समृद्ध बन सकते हैं।

किसी भी देश या संगठन की प्रगति के लिए सत्यनिष्ठा का होना नितांत आवश्यक है। सत्यनिष्ठा हर संगठन को आर्थिक हानियों से तथा देश एवं समाज को पतन से बचाकर समृद्धि एवं आत्मनिर्भरता की ओर ले जाती है। हमें प्रारंभिक स्तर पर अपने कार्यों में उच्च नैतिक आदर्श रखते हुए तथा बुद्धि संगत निर्णय लेते हुए अपने कर्तव्यों का पालन सत्यनिष्ठा से करना होगा। सत्यनिष्ठा तथा समृद्धि एक गाड़ी के दो पहिए हैं यदि एक में खराबी आ गई तो दूसरा भी दूर तक गाड़ी खींचने में सक्षम नहीं रहता है। अतः दोनों का चलते रहना आत्मनिर्भर भारत की प्रगति के लिए आवश्यक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्ष बाद आत्मनिर्भर भारत की राह में भ्रष्टाचार सबसे बड़ी बाधा है जिसे समाप्त करने के लिए एकीकृत प्रयासों की आवश्यकता है। यह प्रयास व्यक्ति, घर एवं समाज में एकजुटता से किए जाएं तभी आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सिद्ध किया जा सकेगा। हालांकि सतर्कता एवं सत्यनिष्ठा अपनाने की दिशा में संगठनात्मक दक्षता सुधार हेतु ईगवर्नेस, ई प्रोक्योरमेंट, डिजिटल भुगतान तथा जेम पोर्टल से खरीद आदि जैसे स्वदेशी एवं संस्थागत सुधार अमल में लाए जा रहे हैं। सरकारी कार्यालयों की विभिन्न प्रक्रियाओं में स्वदेशी प्रौद्योगिकी का प्रयोग बढ़ रहा है।

वैश्विक महामारी कोविड–19 के दौर में आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए हम सबकी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई है जिसके परिणामस्वरूप भारत की विकास दर में गिरावट आई है। अतः प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि वे अपनी कार्यप्रणाली में सत्यनिष्ठा को अपनाकर भ्रष्टाचार रूपी दानव का दमन करें तथा नए भारत के विकास में अग्रणी भूमिका निभाते हुए आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सिद्ध करें। आत्मनिर्भर भारत हमारे प्राचीन नैतिक आदर्शों अर्थात सत्यनिष्ठा की नींव पर ही खड़ा होगा। हमारे देश के राज्य चिन्ह पर भी सत्यमेव जयते अंकित है जिसका अर्थ है सत्य की ही विजय होती है।

o:.k Hkkj}kt
सहायक प्रबंधक (राजभाषा एवं प्रशासन)
केन्द्रीय भडारण निगम, कार्मिक विभाग
निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

छत्तीसगढ़ के आदिवासी प्रखण्ड बस्तर की सैर

दोस्तों आज आपको बस्तर ले चलते हैं मैंने परिवार सहित छत्तीसगढ़ के बस्तर की सैर करने की योजना बनाई और रवाना हो गए, दिल्ली से सुबह 7:40 की इंडिगो से विवेकानंद एयरपोर्ट, रायपुर सुबह 9 बजे पहुँचें। एयरपोर्ट पर रिसिव के लिए दो मित्र मौजूद थे। एयरपोर्ट से हम विश्राम करने के लिए विधुत विभाग, छत्तीसगढ़ गए। यहाँ विश्राम करके लंच किया और हम रवाना हो गए जिला बालोद के ठैमाबुजुर्ग के लिए। ठैमाबुजुर्ग में हल्बा–हल्बी आदिवासी समाज के द्वारा आयोजित 'शहीद गैंदसिंह शाहदत दिवस' पर महासम्मेलन में डॉ. हीरा मीणा जी को मुख्यमंत्री छत्तीसगढ माननीय भूपेश बाघेल जी ने स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। सम्मेलन के बाद रात हम जिला बालोद के सर्किट हाउस में रूके।

अगले दिन सुबह का एसएसपी सर के परिवार के साथ यहाँ के प्रसिद्ध तॉदुला डेम की सैर की और नास्ता डेम पर ही किया। तांदुला डैम तीनों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। तांदुला डैम की प्राकृतिक सुंदरता को देखने के लिए यहाँ 40 फीट ऊँचे टावर है। बांध के साथ–साथ यह एक अच्छा पिकनिक

स्पॉट है। बरसात के दिनों में यहाँ का नजारा देखने लायक रहता है। बांध का भ्रमण कर के बस्तर की यात्रा के लिए एसएसपी सर ने पुष्कर जी और पवन जी के साथ बस्तर की यात्रा प्रारम्भ की।

cLrj dh ;k=k dk çkjEHk

तॉदुला डेम से 15 किलोमीटर की दूरी पर पुरापाषाण काल (Palaeolithic) प्रागैतिहासिक युग का वह समय है जब मानव ने पत्थर के औजार बनाना सबसे पहले आरम्भ किया। यह काल आधुनिक काल से 15 लाख साल पूर्व से लेकर

12000 साल पूर्व तक माना जाता है। इस दौरान मानव इतिहास का विकास हुआ। इस काल के बाद मध्यपाषाण युग का प्रारंभ हुआ जब मानव ने खेती करना शुरु किया था। प्रस्तर युग के अवशेष जो भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित क्षेत्र था यहाँ प्राचीन समय के बड़े–बड़े पत्थर विभिन्न रूप में थे यहाँ आप हजारों साल पूर्व के पत्थर विभिन्न आकृतियों में देख सकते है।

इसके आगे अब हम कांकेर जिला से होते हुए केशकाल घाटी में आ पहुँचे। कांकेर घाटी में 12 मोड हैं । टाटामारी केशकाल का प्राकृतिक सुंदरता अद्भुत नजारा देखने योग्य है। टाटामारी पिकनिक के लिए बहुत ही अच्छी जगह है चारो तरफ से पहाड़ों तथा हरियाली से घिरा हुआ मन को शांत करने वाली जगह है।

केशकाल घाटी पौराणिक मान्यताओं पर अखण्ड ऋषि के तपोवन पर स्थापित है। बारह भंवर केशकाल घाटी के ऊपरी पठार हैं। प्राकृतिक सौंदर्य से आच्छादित स्थल मनोरम छटा सौदंर्यमयी अनुपम स्थल जो ऐतिहासिक धरोहर हैं। डेढ़ सौ एकड़ में फैली यह घाटी अद्भुत मनोरम नजारों के लिए जानी जाती है। उंची चोटियों का विहंगम दृश्य और नैसर्गिक सुंदरता। ऊपर से देखने पर केशकाल घाटी के मोड देख सकते हैं। यहाँ पर्यटकों के रूकने, खान–पान आदि की व्यवस्था है।

केशकाल के बाद हम पहुँचे... बस्तर संभाग का एक शहर कोण्डागाँव इसका प्राचीन नाम कोण्डानार था। कोण्डागाँव जिला में भारत सरकार द्वारा नारियल बोर्ड स्थापित किया गया है। जो छत्तीसगढ़ में एक मात्र नारियल बोर्ड है। यह नारियल उगने से लेकर नारियल वक्ष से विभिन्न वस्तुए बनाने का प्रशिक्षण देने का भी प्रावधान है। कोण्डागाँव में वन विभाग का एक काष्ठागार है जो एशिया में सबसे बड़ा है जिसका क्षेत्रफल 200 एकड से भी अधिक है। यह शहर नारंगी नदी पर हैं। यहाँ हम हमारी मित्र प्रो. किरन निरूटी जो यहाँ के कॉलेज की प्राचार्या हैं उनके यहाँ रूकें और आस–पास का भ्रमण किया। कोण्डागाँव में अद्भुत कलाकृतियों का निर्माण होता है यहाँ आदिवासियों द्वारा लोहे, पीतल और घातुओं के विभिन्न कलाकृतियों तीरकमान, तुरई, पेड, कलात्मक आकृतियां आदि बनायी जाती हैं इनका देश–विदेश में निर्यात होता है। हमने भी यह बनते देखा और कुछ कलाकृतियां खरीद ली।

fp=dkV tyçikr

चित्रकोट जलप्रपात भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में इन्द्रावती नदी पर स्थित एक सुंदर जलप्रपात है। इस जल प्रपात की ऊँचाई 90 फीट है। चित्रकोट जलप्रपात की विशेषता यह है कि वर्षा के दिनों में यह रक्त लालिमा लिए हुए होता है, तो गर्मियों की चाँदनी रात में यह बिल्कुल सफेद दिखाई देता है।

जगदलपुर से 40 कि.मी. और रायपुर से 273 कि.मी. की दूरी पर स्थित यह जलप्रपात छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा, सबसे चौड़ा और सबसे ज्यादा जल की मात्रा प्रवाहित करने वाला जलप्रपात है। यह बस्तर संभाग का सबसे प्रमुख जलप्रपात माना जाता है। जगदलपुर से समीप होने के कारण यह एक प्रमुख पिकनिक स्पाट है। अपने घोड़े की नाल

समान मुख के कारण इस जाल प्रपात को भारत का निआग्रा भी कहा जाता है। चित्रकोट जलप्रपात बहुत खूबसूरत हैं और पर्यटकों को बहुत पसंद आता है। सधन वृक्षों एवं विंध्य पर्वतमालाओं के मध्य स्थित इस जल प्रपात से गिरने वाली विशाल जलराशि पर्यटकों का मन मोह लेती है।

'भारतीय नियाग्रा' के नाम से प्रसिद्ध चित्रकोट प्रपात वैसे तो प्रत्येक मौसम में दर्शनीय है, परंतु वर्षा ऋतु में इसे देखना अधिक रोमांचकारी अनुभव होता है। वर्षा में ऊंचाई से विशाल जलराशि की गर्जना रोमांच और सिहरन पैदा कर देती है। वर्षा ऋतु में इन झरनों की खूबसूरती अत्यधिक बढ़ जाती है। जुलाई–अक्टूबर का समय पर्यटकों के यहाँ आने के लिए उचित है। चित्रकोट जलप्रपात के आसपास घने वन विराजमान हैं, जो कि उसकी प्राकृतिक सौंदर्यता को और बढ़ा देती है। रात में इस जगह को पूरा रोशनी के साथ प्रबुद्ध किया गया है। यहाँ के झरने से गिरते पानी के सौंदर्य को पर्यटक रोशनी के साथ देख सकते हैं। अलग–अलग अवसरों पर इस जलप्रपात से कम से कम तीन और अधिकतम सात धाराएँ गिरती हैं।

छत्तीसगढ़ सरकार ने यहाँ पर्यटकों के विश्राम के लिए गेस्ट हाउस भी बनाए है। हमने भी तीसरी मंजिल पर एक स्वीट रूम लिया। यहाँ से स्पष्ट रूप से विहंगम दृश्य देख सकते हैं।

rhjFkx< tyçikr

तीरथगढ़ के झरने छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में कांगेर घाटी पर स्थित हैं। ये झरने जगदलपुर की दक्षिण–पश्चिम दिशा में 35 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं। ''कांगेर घाटी के जादूगर'' के नाम से मशहूर तीरथगढ़ झरने भारत के सबसे ऊँचे झरनों में से हैं। छत्तीसगढ़ के सबसे ऊंचे जलप्रपात में इसे गिना जाता है।

यहां 300 फुट ऊपर से पानी नीचे गिरता है। कांगेर और उसकी सहायक नदियां 'मनुगा' और 'बहार' मिलकर इस

सुंदर जलप्रपात का निर्माण करती हैं। विशाल जलराशि के साथ इतनी ऊंचाई से भीषण गर्जना के साथ गिरती सफेद रंग की जलधारा यहां आए पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव प्रदान करती है। तीरथगढ़ जलप्रपात को देखने का सबसे अच्छा समय वर्षा के मौसम के साथ–साथ अक्टूबर से अप्रैल तक का है।

छत्तीसगढ़ सरकार और वन विभाग का यहाँ पर्यटकों के विश्राम के लिए गेस्ट हाउस है। हमने वन विभाग के गेस्ट हाउस में विश्राम करके यहाँ से अद्भूत दृश्य देखे और यहाँ पर लंच किया।

nrs'ojh ekrk efnj

दंतेश्वरी माँ मंदिर बस्तर की सबसे सम्मानित देवी को समर्पित मंदिर, 52 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। माना जाता है कि देवी सती का दांत यहां गिरा था, इसलिए दंतेवाड़ा नाम दिया गया। हम रात को दर्शन के लिए पहुँचे। मंदिर में जाने के लिए पुरूषों को धोती पहननी जरूरी है। यहाँ के सुरक्षाकर्मी ने हमें धोती उपलब्ध करवाई। मंदिर में हमारे अतिरिक्त कोई नहीं था। माता के दर्शन किए। मंदिर डंकनी नदी पर स्थित है। एक घण्टे मंदिर में बिताया मन को अद्भूत शांति मिली।

रात हमने यहाँ सीआरपीएफ के गेस्ट हाउस में विश्राम किया।

dkxj ?kkVh jk"Vh; m|ku

कांगेर घाटी नेशनल पार्क छत्तीसगढ़ कांगेर घाटी की 34 किलोमीटर लंबी तराई में स्थित है। यह एक 'बायोस्फीयर रिजर्व' है। कांगेर घाटी नेशनल पार्क भारत के सर्वाधिक सुंदर और मनोहारी नेशनल पार्कों में से एक है। यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता और अनोखी समृद्ध जैव विविधता के कारण प्रसिद्ध है। कांगेर घाटी को 1982 में नेशनल पार्क' का दर्जा दिया गया।

वन्य जीवन और पेड़ पौधों के अलावा पार्क के अंदर पर्यटकों के लिए अनेक आकर्षण हैं। जैसे –कुटुमसार की गुफाएं, कैलाश गुफाए, डंडक की गुफाए और तीर्थगढ़ जलप्रपात हैं। इस पार्क में बड़ी संख्या में जनजातीय आबादी भी रहती है और प्रकृति प्रेमियों, अनुसंधानकर्ताओं, वैज्ञानिकों के अलावा छत्तीसगढ़ के सर्वोत्तम वन्य जीवन का दर्शन करने का इच्छुक लोगों के लिए यह एक आदर्श पर्यटन स्थल है।

पार्क की वनस्पतियों में मिश्रित नम पतझड़ी प्रकार के वन हैं, जिसमें मुख्यतः साल, टीक और बांस के पेड़ हैं। कांगेर धाटी वास्तव में भारतीय उपमहाद्वीप में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ अब तक इन अछूते और पहुँच से दूर वनों का एक हिस्सा बचा हुआ है। कांगेर घाटी नेशनल पार्क में पाए जाने वाले प्रमुख जीव जंतु हैं – बाघ, चीते, माउस डियर, जंगली बिल्ली, चीतल, सांभर, बार्किंग डियर, भेडिए, लंगूर, रिसस मेकाका, स्लॉथ बीयर, उड़ने वाली गिलहरी, जंगली सुअर, पट्टीदार हाइना, खरगोश, अजगर, कोबरा, घडियाल, मॉनिटर छिपकली तथा सांप हैं। कांगेर घाटी नेशनल पार्क में मुख्य रूप से पहाड़ी मैना, चित्तीदार उल्लू, लाल जंगली बाज, रैकिट टेल्ड ड्रोंगो, मोर, तोते, स्टैपी इगल, लाल फर वाला फाल, फटकार, भूरा तीतर, ट्री पाइ और हेरॉन पक्षी पाए जाते हैं।

dVEclj xQk

कुटुम्बसर गुफा छत्तीसगढ़ में जगदलपुर के निकट स्थित है। यह गुफा मानव द्वारा निर्मित है, जिसे 'केम्पीओला शंकराई गुफा' भी कहा जाता है। इस गुफा के अंधेरे में कई रहस्य छुपे हुए हैं, जिनका पता आज भी लगाया जा रहा है। यह माना जाता है कि कभी कुटुम्बसर गुफा में आदिमानवों का बसेरा था। कुटुम्बसर गुफा में अंधी मछलियाँ पाई जाती हैं जिसे हमनें

देखा। कई वैज्ञानिकों तथा जन्तु विज्ञान शास्त्रियों ने यहाँ पर अपना शोध कार्य किया है, जिसे लेकर पूरे विश्व में इस गुफा की प्रसिद्धि है। इस गुफा की खोज यहाँ के मूल आदिवासियों ने की और 1951 में प्रसिद्ध भूगोल वैज्ञानिक डॉ. शंकर तिवारी ने सरकार की जानकारी में लाया। स्थानीय भाषा में 'कोटमसर' का अर्थ "पानी से घिरा किला" है। भू–गर्भ शास्त्रियों ने इस गुफा में प्रागैतिहासिक मनुष्यों के रहने के अवशेष भी पाए हैं। उनके अध्ययन के अनुसार पूर्व में यह समूचा इलाका पानी में डूबा हुआ था और कोटमसर की गुफाओं के बाहरी और आंतरिक हिस्से के वैज्ञानिक अध्ययन से इसकी पुष्टि भी होती है।

गुफा का निर्माण भी प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण पानी के बहाव के कारण ही हुआ है। लाइम स्टोन से बनी इस गुफा की बाहरी और आन्तरिक सतह का अध्ययन बताता है कि इसका निर्माण लगभग 250 करोड़ वर्ष पूर्व का हुआ है। भू–गर्भ वैज्ञानिकों ने अपने रिसर्च में 'कार्बन डेटिंग प्रणाली' से अध्ययन कर इस गुफा में प्रागैतिहासिक मानवों के रहने की भी बात की है।

कुटुम्बसर गुफा जाने के लिए आपको यहाँ से टिकट लेना होता है उसके वन विभाग की जिप्सी में ही जाया जा सकता हैं प्रवेश द्वारा से 5 किलोमीटर जिप्सी से ही कुटुम्बसर गुफा तक जाया जाता है।

गुफा में प्रवेश का छोटा मार्ग है। इसमें केवल एक ही व्यक्ति बड़ी मुश्किल के बाद प्रवेश कर पाता है। 10 मीटर नीचे की ओर सीढियां हैं सीढियों से होता हुआ आते हैं। यहाँ पर पर्यटकों के लिए रास्ते के एक ओर पाइप की रेलिंग लगी है इससे नीचे उतरने के बाद लगभग साढे तीन इंच चौड़ा, पैंतालीस इंच उँचा व 65 इंच लंबा एक अंधकारमय गलियारा मिलता है। इसके दाहिनी ओर चूने की चट्टाने हैं, जिन पर जल के बहने के निशान तथा बांयी ओर बंद छत पर लटकते हुए स्तंभों के दर्शन होते हैं। इस गुफा की सबसे ख़ास बात यह है कि यहाँ जो स्तंभ बने हैं, वह अपने आप प्राकृतिक तरीके से बने हैं। पानी की बूंदों के साथ जो कैल्सियम गिरता गया, उसने धीरे–धीरे स्तंभों का रूप ग्रहण कर लिया और अब गुफा में चमकते हुए स्तम्भ दिखाई देते हैं। पर्यटकों के लिए यह एक अनोखा अनुभव होगा आप इस जरूर देखें।

cLrj n'kgjk

बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर अंचल में आयोजित होने वाले पारंपरिक पर्वों में से सर्वश्रेष्ठ पर्व है। बस्तर दशहरा पर्व का सम्बन्ध महाकाव्य रामायण के रावण वध से नहीं है, अपितु इसका संबंध सीधे महिषासुर मर्दिनी माँ दुर्गा से जुड़ा है। पौराणिक वर्णन के अनुसार अश्विन शुक्ल दशमी को माँ दुर्गा ने अत्याचारी महिषासुर को शिरोच्छेदन किया था। यह पर्व निरंतर 65 दिन तक चलता है। पर्व की शुरुआत हरेली अमावस्या से होती है। बस्तर दशहरा में राज्य के दूसरे जिलों के देवी–देवताओं को भी आमंत्रित किया जाता है। दशहरा में लकड़ी के बने विशाल रथ को भी देखा।

ckj lqj

बारसूर प्राचीन युग में यह नगर बेहद समृद्ध व वैभवशाली था यहाँ चारों दिशाओं में 10 मील दूर तक कई मंदिर और तालाब बनवाए गए हैं जिनमें से कुछ भग्नावशेष आज भी मौजूद हैं। नागवंश राजा बानासुर की राजधानी, बारसुर एक ऐसा गंतव्य है जो इतिहास और प्राचीन मूर्तियों से प्यार करता है। यह छोटा शहर पुरातात्विक खजाने से भरा है।

ekek&Hkkatk efnj

मामा–भांजा मंदिर दो गर्भगृह युक्त मंदिर है इसक मंडप आपस में जुड़े हुए हैं बारसूर के इतिहास की खेल कहानियों को संजोए हुए मामा–भांजा के साहस की दास्ता बयां करता है। किंवदन्ती के अनुसार एक गंग वंश के राजा के बुद्धिमान भांजे ने उत्कल देश से शिल्पकारों को बुलाकर इस भव्य मंदिर का निर्माण करवाया था लेकिन राजा इस मंदिर के साथ अपनी भी ख्याति चाहते थे उसने ख्याति के लिए भांजे से युद्ध किया युद्ध में मामा ने भांजे का सर धड़ से अलग कर दिया और कटे हुए सर की प्रतिकृति मंदिर के शीर्ष पर स्थापित करवा दिया तब से यह मंदिर मामा भांजा मंदिर के नाम से जाना जाता है।

pækfnR; efnj

चंद्रादित्य मंदिर 11 वीं शाताब्दी का मंदिर है इसका निर्माण सामंती सरदार चंद्रादित्य द्वारा करवाया गया था उसके नाम पर ही इसका नाम पड़ा। यहाँ पर पाए गए बारसूर शैली की अनेक मूर्तियों में गर्भगृह के दरवाजे पर विष्णु और शिव हैं।

बत्तीसा मंदिर प्राचीन वास्तुकला की नायाब मिसाल है। बत्तीसा मंदिर 32 पाषण स्तंभों पर टिका ऐतिहासिक बत्तीसा मंदिर 11वीं–12वीं सदी ईस्वी में तत्कालीन चिंतक नागवंशी नरेश सोमेश्वर देव की रानी गंगा देवी की इच्छा के चलते इस मंदिर का निर्माण करवाया गया। इस मंदिर में दूसरे और दो शिवालय हैं दोनों शिवालयों के सामने नंदी की कलात्मक प्रतिमाएं स्थापित हैं। शिवलिंग प्रतिमा को घुमाया जा सकता है। बताते हैं नक्षत्र और गृहों की अनुकुल स्थिति में प्रतिमा को घुमाए तो कई रहस्य उजागार होगें। हमने इस शिवलिंग प्रतिमा को घुमाते हुए देखा है।

x.k'k efnj

गणेश मंदिर यहाँ भगवान गणेश की दो विशाल बलुआ पत्थर से बनी प्रतिमाएं हैं। दुनिया का एकमात्र ऐसा मंदिर जहाँ भगवान गणेश की दो विशालकाय मूर्ति विराजित हैं। एक की ऊंचाई सात फीट दूसरी की पांच फीट है।

lkr/kkjk

सातधारा जलप्रपात दंतेवाड़ा जिले के बारसूर से 6 कि मी की दूरी पर स्थित है यह वह स्थान है जहाँ इंद्रवती नदी सात भागों में विभाजित होती हैं। सात धाराएँ एक साथ कलकल करती प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण खूबसूरत स्थान है। सातधारा के सड़क पुल के एक तरफ बारसूर कस्बा है तो एक तरफ अबुझमांड का क्षेत्र प्रारम्भ हो जाता है।

हम अबुझमांड के क्षेत्र तक पहुँचें।

अब हम बापस बालोत के लिए रवाना हो गए। रात आठ बजे तक चारमा पहुँचे। यहाँ पर हमने डिनर किया। 11 बजे तक बालोत पहँचे यहाँ सर्किट हाउस में हमारा रूम बुक था।

सबुह एसएसपी साहब के यहाँ आए बस्तर की सुंदर, सुखद यात्रा का विस्तार से चर्चा की। यहाँ पर लंच किया और इनसे विदा लेकर अब विवकानंद एयरपोर्ट रायपुर के लिए रवाना हो गए। रात 8 बजे हम दिल्ली आ पहुँचे। अब भी छत्तीसगढ़ की सुंदर याद और वहाँ के अद्भूत दृश्य, पूरी यात्रा के दौरान विभिन्न घटनाएँ और जानकारियाँ लिपिबद्ध करना संभव नही है। 15 दिन की बस्तर यात्रा दोनों साथियों ने चार दिन में पूरी करवाई। इसका वृर्तान्त बहुत बड़ा है। यह यात्रा मेरे जीवन की अब तक की सबसे बेहतरीन यात्रा रही। इस कारण एसएसपी सर को ह्दय से धन्यवाद और आभार करता हूँ।

NÙkhlx< e ulfxd lnjrk vkj çk—frd llk/kuk dk dkj.k g ;gk d ey fuoklh vkfnoklh ftUgkus db ihf<;k l bl link dk ekuotkfr d fy, lj{k.k fd;k gA ge Hkh vku okyh ihf<;k d fy, bl cpk; j[kuk gA nkLrk vki Hkh vk, NÙkhlx< vkj yu ulfxd lnjrk d utkjA çk—frd link l ifjiw.k çn'k dk vkuUn] igkM+k] ufn;k] tyçikrk] xQkvk] >juk tl [k'kuek utkjk dk vkun y---

xkre dekj eh.kk
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय–II, स्कोप मीनार, कोर–I, प्रथम तल

''आष्टांग योग''

भारतवर्ष में योग साधना की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान शंकर योग के आदि आचार्य माने जाते हैं, तो भगवान श्रीकृष्ण योगीराज। वेदों में तो योग का गंभीर विवेचन किया है। योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि पहले ही सूत्र में लिख देते है कि ''अर्थयोगानुसासनम'' अर्थात जीवन में अनुशासन लाने वाली क्रियाएं ही योग है। योग हमारे ऋषि–मुनियों एवं सनातन संस्कृति की देन है। योग का उल्लेख ऋग्वेद में भी किया गया है। 7000–1309 ईसा पूर्व मोहनजोदड़ों में मिली मोहरों में योग मुद्रा में बैठी एक आकृति देखी गई है। इसी प्रकार गुरु गोरखनाथ, गुरु नानक देव, परमहंस योगानंद, लक्ष्मी नाथ गोसाईं आदि संत योग की सिद्धि के लिए समाज में आदरणीय है।

योग को वैश्विक ख्याति दिलाने का श्रेय भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को जाता है जिन्होंने 27 सितंबर 2014 को 21 जून का दिन अंतराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा के समक्ष पेश किया गया था, जिसे 175 सदस्य राष्ट्रों द्वारा 11 दिसंबर को पारित किया गया। योग की नजर से 21 जून, 2015 का दिन न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक महत्वपूर्ण दिन था। उस दिन लगभग 192 देशों में जगह जगह योगासनों और प्राणायाम का अभ्यास किया गया था। 21 जून का दिन हर वर्ष अंतराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जा रहा है, ताकि सारी मानव जाति को यह संदेश दिया जा सके कि योग सबके जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

योग का अर्थ है आत्मा एवं परमात्मा का मिलन, जीव का ईश्वर से जुड़ना। योग के द्वारा शरीर, मन तथा आत्मा का एकाकार होता है, जिससे आत्म– ज्ञान की प्राप्ति होती है। योग भारत की बहुत ही प्राचीन विद्या है। महर्षि पतंजलि ने लगभग 2000 वर्षों पूर्व इसके सिद्धांतो को अपनी पुस्तक ''योग सूत्र ''में समाहित किया। उन्होंने पूरे योग के प्रणाली को आठ भागों में बांटा जिसके कारण इस योग का नाम 'अष्टांग योग' पड़ा। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान तथा समाधि ये सभी आठ अष्टांग योग के अंग है। इन सभी अंगो का पालन किए बिना कोई भी व्यक्ति योगी नहीं हो सकता है। अष्टांग योग केवल योगियों के लिए नहीं है, जो भी व्यक्ति जीवन में पूर्ण सुखी होना चाहता है उसे अष्टांग योग का पालन करना चाहिए, जिनका संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जा रहा है –

(1) ;e अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः नमाः ये पांच नियम है। किसी भी प्राणी को मन, वचन तथा कर्म द्वारा कष्ट न देना। सत्य अर्थात जैसा देखा, सुना तथा जाना वैसा ही शुद्ध भाव मन, वाणी और कार्य में दिखे। अस्तेय का अर्थ चोरी न करना, दूसरों के वस्तु को बिना पूछे अथवा गैर कानूनी ढंग से अपनाना चोरी है। ब्रह्मचर्य अर्थात उत्तेजित करने वाले खान–पान, दृश्य–श्रव्य जे अपने को परे रखना। अपरिग्रह का अर्थ न्यूनतम धन एवं नैतिक पदार्थों से संतुष्ट होकर अपने जीवन यापन करने से है।

(2) योग का दूसरा आधारभूत अंग है fu;e। पतंजलि के अनुसार अष्टांग योग के पांच नियमों में शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान प्रमुख है। शौच अर्थात शुद्धि जो बाहरी तथा आंतरिक दोनों प्रकार की होनी चाहिए। संतोष का अर्थ संतुष्ट रहना जो है उसी में तृप्त होना। तप अर्थात अपने उद्देश्य की सिद्धि में जो भी कष्ट–बाधाएं आएं उन्हें सहजता से स्वीकार करते हुए निरंतर लक्ष्य की ओर बढ़ना। स्वाध्याय का मतलब जीवन दर्शन के योग्य शास्त्रों का नियमित अध्ययन। ईश्वर प्रणिधान का अर्थ परमगुरु परमात्मा के चरणों में समर्पित होना।

(3) पतंजलि योग का तीसरा अंग है vklu। महर्षि पतंजलि कहते हैं– स्थिरसुखमासन। पदमासन, भद्रासन या सुखासन किसी भी आसन में सुखपूर्वक बैठना ही आसन है। व्यक्ति को जप, उपासना व ध्यान आदि करते समय किसी भी आसन में स्थिरता और सुखपूर्वक बैठने का लंबा अभ्यास करना चाहिए। यह हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

(4) çk.kk;ke:– प्राणों का आयाम अर्थात श्वास की गति

का नियंत्रण प्राणायाम है। प्राणायाम चार प्रकार के होते है बाह्य वृति, आभ्यंतरवृति, स्तम्भ वृति एवं बाह्याभ्यांतर प्राणायम। मनुष्य के अंदर ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित करने का सबसे सरल तरीका है– प्राणायाम।

(5) çR;kgkj:– अपने मन पर विजय अथवा भौतिकता से विमुख होकर अपने मन तथा पांचों ज्ञाननेंद्रिया को अंतर्मुखी करना और मन को ईश्वर की ओर लगाना ही प्रत्याहार है।

;e l; ydj çR;kgkj rd cfgjx ;kx gA b l d ckn /kkj.kk] /;ku rFkk lekf/k vrjx ;kx d fgLl gA

(6) /kkj.kk:– मन की एकाग्रता ही धारणा है। प्रत्याहार के द्वारा हम इन्द्रियों एवं मन को अंतर्मुखी करते हैं तथा धारणा के द्वारा हम मन को एक विशेष स्थान पर केंद्रित करते हैं। धारणा अपनी अगली कड़ी के रूप में ध्यान में परिवर्तित होता है।

(7) /;ku: यह एक यौगिक प्रक्रिया है। ध्यान के बिना किसी भी भौतिक और अध्यात्मिक लक्ष्य में सफल नहीं हो सकते। धारणा में जब किसी बिंदु पर, ईश्वर पर मन एकाग्र किया जाय तो यह ध्यान की अवस्था है।

(8) lekf/k: व्यक्ति जब आनंदमय, ज्योतिर्मय व शान्तिम परमेश्वर का ध्यान करता हुआ इतना तल्लीन हो जाता है कि अपने स्वरूप को भूल जाता है तो यह समाधि की अवस्था है।

अष्टांग योग प्राचीन काल के हमारे ऋषियों एवं मुनियों के उच्चतम स्तर के चिंतन का प्रतीक है। यह केवल योगियों के लिए ही नहीं, अपितु जो भी व्यक्ति जीवन में सम्पूर्ण रूप से सुखी होना चाहता है तथा समस्त विश्व को सुखी देखना चाहता है उन सबके पालन करने योग्य है।

अंतराष्ट्रीय योग दिवस की ढेर सारी सुभकामनाओं के संग.।

çoh.k dekj >k

समय की रेत

समय की रेत नंगे पाँव चले जा रहे हैं,
रेत पर लिखे नाम, समय के साथ मिटते जा रहे हैं।

मैं ठहरा किसी मोड़ पर ये सोचने को
कि अन्जाम मेरा भी होगा भुला दिया जाने का।

मन में अजीब सी हलचल हुई,
समय की रेत को अपने ऊपर न चढ़ने दूँगा।

औरों की यादों में अपना नाम न मिटने दूंगा
फिर रेत भी मेरा नाम न हटा पाएगी और
न समय भी मुझे भुला पाएगा।

विचारों के भंडार में, इस सोच में बैठा हुआ
क्या करूँ कि औरों की याद से नाम न मिटने पाए।

यही सोचते हुए नींद की चादर ओढ़ लेता हूँ,
सपने में देखता हूँ समय को रोते हुए।

क्या समय को भी नाम की दरकार है,
नींद में ही हस रहा मैं, क्या कहूँ, अब तो समय से भी टकराव है।

vuqt dekj frokjh
(प्रबंधक)
बी.ई.एम एल लिमिटेड

महाकवि कोकिल विद्यापति

हिन्दी साहित्य के अभिनव, जयदेव के नाम से विद्यापति प्रख्यात है। बिहार में मिथिला क्षेत्र के होने के कारण इनकी भाषा मैथिली थी। इनकी भाषा मैथिली होने के बावजूद सर्वाधिक रचनाएं संस्कृत भाषा में थी। इसके अतिरिक्त अवहट्टा भाषा में रचना करते थे। विद्यापति भारतीय साहित्य की भक्ति परंपरा के प्रमुख कवियों में से एक और मैथिली के सर्वोपरि कवि के रूप में भारतवर्ष में जाने जाते है। इनके काव्यों में मध्यकालीन मैथिली भाषा के स्वरूप का दर्शन किया जा सकता है। इन्हें वैष्णव और शैव भकति के सेतु के रूप में भी स्वीकार किया गया है। मिथिला के लोगों को ^nfly c;uk lc tu feëk^ का सूत्र दे कर इन्होंने उत्तरी बिहार मैथिली भाषा की जनचेतना को जीवित करने का प्रयास किया है। मिथिलांचल के लोकव्यवहार में प्रयोग किए जानेवाले गीतों में आज भी विधापति की श्रृंगार और भक्ति रस में पगी रचनाएं जीवित हैं। पदावली और कीर्तिलता इनकी अमर रचनाएं हैं।

महाकवि विद्यापति का जन्म सन 1325 ई. में वर्तमान मधुबनी जनपद के बिसपू नामक गाँव में एक संभ्रान्त ब्राह्मण गणपति ठाकुर ¼bud firk dk uke½ के घर हुआ था। बाद में यसश्वी राजा शिवसिंह को दानस्वरूप दे दिया था। दानपत्र की प्रतिलिपि आज भी विघापति के वंशजों के पास है जो आजकल सौराठ नामक गांव में रहते हैं। उपलब्ध दस्तावेजों एवं पंजी–प्रबंध की सूचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि महाकवि अभिनव जयदेव विद्यापति का जन्म ऐसे यशस्वी मैथिली ब्राह्मण परिवार में हुआ था, जिस पर विद्या की देवी सरस्वती के साथ लक्ष्मी की भी असीम कृपा थी। इस विख्यात वंश में एक से एक विद्वान, शासक, धर्मशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ हुए। इनके पितामह जयदत्त ठाकुर एवं पिता गणपति ठाकुर राजपण्डित थे। इनका विवाह चम्पा देवी से हुआ। इस तरह पाण्डित्य एवं शास्त्रज्ञान कवि विद्यापति को सहज उत्तराधिकार में मिला था। इनके शास्त्रीय विषयों पर कालजयी रचना का निर्माण करके विद्यापति ने अपने पूर्वजों की परम्परा को ही आगे बढ़ाया।

बहुमुखी प्रतिमा समपन्न इस महाकवि के व्यक्तित्व में एक साथ चिन्तक, शास्त्रकार तथा साहित्य रसिक का अद्भुत समन्वय था। इनकी पदावली मिथिला के कवियों का आदर्श तो है ही, शासक, सामंत, कवि एवं नाटकार भी उनसे मैथिली में रचना करवाने लगे। बाद में बंगाल, असम तथा उड़ीसा के वैष्णभक्तों में भी नवीन प्रेरणा एवं नवभावधारा अपने मन में संचालित कर विद्यापति के अंदाज में ही पदावलियों का रचना करते रहे और विद्यापति के पदावलियों को मौखिक परम्परा से एक से दूसरे लोगों में प्रवाहित करते रहे।

महाकवि की काव्य प्रतिभा की गूंज मात्र मिथिलांचल का नहीं अपितु समस्त पूर्वांचल में, समस्त भारतवर्ष में, अखिल विश्व में व्याप्त है। राजमहल से लेकर पर्णकुटी तक में गुंजायमान विद्यापति का कोमलकान्त पदावली वस्तुतः भारतीय साहित्य की अनुपम वैभव है।

विद्यापति शिव एवं शक्ति दोनों के प्रबल भक्त थे। शक्ति के रूप में उन्होंने दुर्गा, काली, भैरवि, गंगा आदि का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। महाकवि विघापति का मृत्यु सन 1448 ई. में कार्तिक त्रयोदशी को हुई थी।

महाकवि विद्यापति अपने जिन्दगी के अंतिम काल में भी गंगा के सानिध्य में अपनी रचना प्रस्तुत कर महाप्रयाण को प्रस्थान कर गए।

cM l[klkj ikvky rv rhjA
NkMbr fudV u;u cg uhjAA
djukfj fcyevk fcey rjxA
ifu njlu gk, iuefr xxAA

इस तरह से महाकवि विद्यापति के नाम पर आज भी भारत के राजधानी दिल्ली एवं पूरे भारतवर्ष में जहाँ मिथिलांचल के लोग रहते है, हर वर्ष विद्यापति समारोह मनाया जाता है और महाकवि विद्यापति को याद किया जाता है।

çlu dekj >k
वरि. सहायक (राजभाषा)
सेल, स्कोप मीनार, दिल्ली–92

रक्तदान

जनवरी का महीना था, ठंड अपने पूरे शबाब पर थी, युवाओं के लिए बेशक ये मौसम मौज–मस्ती का सबब बना हुआ था। वातावरण में शीतल कोहरे की स्निग्धता ने चारों ओर अपना साम्राज्य फैला रखा था। बस स्टॉप पर काफी भीड़ थी। सब अपने अपने गंतव्य के लिए कैब और बसों की इंतजार में थे। कोहरे में लिपटी सुबह में कुछ संभ्रांत युवक युवतियां लॉन्ग कोट पहने हुए थे। लॉन्ग कोट का ऐसे मौसम में अपना अलग ही रौब जमता है। मीम भाई ने केवल एक मोटा स्वेटर डाल रखा था, और गले में पुराना–सा एक मफलर। उसकी ये वेशभूषा उसके पिछड़ेपन का अहसास करा रही थी। सुंदर और स्मार्ट लड़के–लड़कियों को देखकर उसे मन ही मन ईर्ष्या हो रही थी। उसका मन किया कि वह भी लॉन्ग कोट पहना करे। किन्तु इसके लिए शायद अपने घर और आसपास के उचित माहौल के न रहते वह कुछ असहज महसूस कर रहा था। वह खिन्न–सी मुद्रा में बस का इंतजार कर ही रहा था, तभी एक कार उसके पास आकर रुक गई। कार में बेहद सुंदर युवती थी, जो स्वयं कार ड्राइव कर रही थी। कार का शीशा गिराते हुए उसने बड़े ही नरम अंदाज में पूछा–

'सर मुझे लोदी रोड जाना है कौन–सा रूट लूँ।'

'आप सीधे जाकर बाएँ मुड़ना...करीब तीन किलोमीटर है, यहाँ से लोदी रोड।'

'थेंक्यू।' एक मोहिनी–सी मुस्कान से उस युवती ने आभार जताया।

मीम भाई को न जाने क्यों ये युवती पहली ही नजर में एकदम जंच गई। उसके नरमों नाजुक मिजाज से, उसकी मिठास–भरी बोली से, उसके उजले चिकने चेहरे से मुग्ध हो उसके मोहपाश में वह इस तरह फंस गया, जैसे तपती दोपहरी में वायु का भंवर चक्रवात में फंस जाता है। देर तक वह उस रास्ते को देखता रहा, जिससे वह युवती कभी की जा चुकी थी। एक अजीब–सी धड़धड़ाहट और गुदगुदी से उसकी छाती में कंपन पैदा होने लगी थी। उसके गंतव्य के लिए बस आ चुकी थी। वह उस युवती के खयालों से लदा बस में चढ़ गया। अबसे पहले उसने कभी इस तरह महसूस नहीं किया था। परिवर्तन की जिन तरंगों को वह महसूस कर रहा था, वह किसी खजाने से कम न थीं। वह इस अक्षुण्ण खजाने को किसी से बाँट नहीं सकता था। करीब आधे घंटे के सफर के बाद वह अपने ऑफिस पहुँच गया, जोकि लोदी रोड पर स्थित था। उसके होठों पर हल्की सरूर भरी मुस्कान तैर रही थी। उसकी ये वस्तु–स्थिति पूरे सप्ताह बनी रही। उसकी चाहत दुनिया से बेखबर दीवानगी की एक अलग दुनिया में प्रवेश कर रही थी।

मीम भाई का ऑफिस बिल्डिंग के पाँचवें फ्लोर पर था। अगले ही रोज जब ऑफिस के काम से वह चौथे फ्लोर पर गया तो वहाँ उसी युवती को देखकर इतना हैरान हुआ कि उसे आश्चर्य के सात अजूबे भी कम लग रहे थे। उसके पाँव जमीन पर नहीं टिक रहे थे।... यह युवती यहाँ क्या कर रही है?... कहीं वह हमारे ऑफिस के लिए नई भर्ती तो नहीं है? क्या वह ऑफिस की क्लाइंट है?... वह इस जानकारी का पता लगाने के लिए अप्रत्याशित रूप से पूरी कोशिश से जुट गया। अपने सहकर्मियों से अलग–अलग जानकारी ले रहा था, और उसने जल्द ही पता लगा लिया कि वह युवती इसी ऑफिस में अकाउंटेंट नियुक्त हुई है। उसे बातों ही बातों में यह भी पता चला कि युवती स्थानीय नहीं है, विशाखापट्टनम से आई है। पहले तो उसे इस बात पर हैरानगी हुई कि इतनी हाई प्रोफाइल दिखने वाली युवती अकाउंटेंट नियुक्त हुई है। फिर यह सोचकर जल्द ही शांत हो गया कि बेरोजगारी के आलम की मारी हुई होगी। देश में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ रही है। उच्च शिक्षा प्राप्त युवा बेरोजगारी का बोझ ढो रहे हैं। सरकारें कुछ करती क्यों नहीं। कब तक युवाओं को कुंठा का कसैला विष पिलाएगी ये सरकार....।

मीम भाई का अगले दिन मन किया कि वह चौथे फ्लोर पर फिर जाए.... क्या पता आज फिर कल जैसे सुदर्शन हो जाएं। वह उसकी कल्पनाओं में खोया सीढ़ियाँ उतर रहा था और सपने खयालों के रथ पर आरूढ़ थे। जैसे ही वह चौथी मंजिल की लॉबी में पंहुचा उसे वह युवती टकरा गई। उसने एक नजर उस युवती पर डाली। युवती एक बार को सकपका गई... उसने नजरें नीची कर लीं। उसे एहसास हुआ ये युवक तो वही है, जिससे उसने यहाँ आने का पहले दिन रास्ता पूछा था। उस युवती ने सर झुकाकर मीम का अभिवादन किया और पूछा–

'सर आप यहीं जॉब करते हैं?'

'जी' धड़कते हुए दिल से बस यही छोटी–सी आवाज निकली। चार नजरें कुछ पलों के लिए एकाकार हुईं और फ्लोर की दीवारें गुलाबी रंग से जगमगा उठीं। दो लब क्षण–भर को मुस्काए और पूरा फ्लोर नशे में झूम उठा। युवती सकुचाती–सी अपने कैबिन में चली गई और मीम धड़धड़ाती धड़कनों के

साथ सीढ़ियां उतरने लगा। मीम इस छोटी सी मुलाकात से अभिभूत हो गया। अपनी टेबल पर आकर बड़े खुशनुमा अंदाज में अपने काम में व्यस्त हो गया। मीम भाई अपने काम का धुनी था। कभी कोई काम लंबित नहीं छोड़ता था। कभी अपनी सीट से गायब नहीं होता था। अधिकतर कर्मचारी अकसर देर से आते और सीट से गायब रहते थे, किन्तु मीम पर इन कर्मचारियों की सोहबत का कोई असर नहीं पड़ा। वह अपने कार्य के प्रति हमेशा प्रतिबद्ध रहता। आजकल उसमे परिवर्तन आ गया था, वह अकसर चौथे फ्लोर पर मंडराने लगा था। उस युवती का आकर्षण उसे बरबस खींच रहा था। इस आकर्षण के पीछे युवती की इच्छा–शक्ति कितनी छुपी थी.... इसे न तो मीम भाई पहचान पाया और न ही वह युवती जान पाई। किन्तु दोनों के बीच भावनाओं का, कल्पनाओं का विराट संसार रच रहा था। मीम भाई की सुबह में रवानी आ गई थी और शाम की आँखों में सुरमा डलने लगा था। रातें लंबी लगने लगी थी। दिनों मे बसंती महक रमकने लगी थी। मीम पहले के मुताबिक अधिक खुश रहने लगा था। वह किसी न किसी बहाने चौथे फ्लोर पर जाकर उस युवती से नजरें चार कर लेता था, और उसकी आँखें महकती खुशबू से सराबोर हो जाती। प्रतिक्रियात्मक रूप से युवती एक मीठी–सी मुस्कान उसकी हथेली पर रख देती थी। इस प्रकार दिन बीतते गए और मीम भाई दीवानगी की सरहदों को छूने लगा। मीम सब समझता था, सब जानता था, सब महसूस करता था। उसमे एक विशेष बल आ गया था, ऐसा बल जो दुनिया की तमाम विपरीत ताकतों से मुकाबला कर सके। बस एक ही बल के बिना अपने आपको क्षीण महसूस करता था। वह बल था... अपने प्रेम को प्रकट करने का बल।

सरकारी दफ्तरों की अपनी संस्कृति होती है, वहाँ के सहकर्मी इस प्रकार के घटना–चक्र को आपस में खुसर–पुसर करके निंदा–रस का आस्वादन किया करते है। चौथे फ्लोर के सहकर्मियों ने भली–भांति ताड़ लिया था और अब तकरीबन सबको पता चल चुका था कि मीम इस नई युवती के मोहपाश में बंधा हुआ है। कुछ शुभेच्छु ऐसे भी थे, जिनकी सदिच्छा थी कि दोनों की शादी हो जाए। कुछ ईर्ष्यालु भी थे, जो उस पर बुरी नजर रखते थे, जो सोचते थे मुसलमान लड़का हिंदु लड़की से मोहब्बत की हिमाकत क्यों कर रहा है। एक रोज जब मीम दो चक्कर लगाने के बाद भी उस युवती को न देख पाया तो बड़ा असहज महसूस करने लगा। तभी एक आवाज उसके कानों तक आई...ऑफिस की दो औरतें आपस में बात कर रहीं थीं...

'अरे तुम्हें पता चला.. आज उस नई लड़की का लोदी रोड पर एक्सीडेंट हो गया, बेचारी दूसरे शहर से आई है, पता नहीं उसके साथ कोई है भी कि नहीं।'

ये वाक्य मीम भाई को बेहद अचंभित और कष्टकारी लगे।

'अरे हाँ, मुझे मंजु ने बताया... उसके एक्सीडेंट के बारे में कह रही थी... खून चढ़ेगा' ...दूसरी औरत ने प्रत्युत्तर में कहा।

'अरे ये तो बहुत बुरा हुआ, बेचारी को खून कौन देगा।'

'सफदरजंग अस्पताल में है.... वहाँ तो वैसे ही मरीज का बुरा हाल रहता है....सरकारी डॉक्टर हैं, मरीज तड़पता रहता है... पर नर्स और डॉक्टर अपने ही हिसाब से उपचार करते हैं... घंटों मरीज के नजदीक नहीं आते ..... भगवान किसी को न दिखाए... अस्पताल का मुँह।।'

मीम शायद पहली बार इतना दुखी हुआ, उस युवती के एक्सीडेंट की बात सुनकर। खून देने के सवाल पर अचानक उसका खून उबाल लेने लगा। वह तुरंत खून देना चाहता था। उसे खून देने में बेशक सुकून मिलता, किन्तु वह खुद कैसे पेशकश करे खून देने की। बड़ी असमंजस की स्थिति थी। तभी एक मैडम ने मीम को पुकारा–

'अरे मीम सर क्या हाल है तुम्हारे.... कहाँ खोए–खोए रहते हो... कुछ पता चला तुम्हें वह नई लड़की है न... बेचारी का लोदी रोड पर एक्सीडेंट हो गया ... डॉक्टर ने खून की माँग की है..'

'अरे खून कौन बड़ी बात है, मैं दे दूंगा खून...रक्तदान महादान।'

मैडम का तीर निशाने पर लगा, उसने बिना किसी लाग–लपेट के सीधे मतलब की बात की...

'ऐसी बात है तो अभी चल मेरे साथ, वह सफदरजंग अस्पताल में एड्मिट है... उसे खून की सख्त जरूरत है, तुम कर देना रक्तदान'

मीम ने झट से हाँ कर दी और उस मैडम के साथ ऑटो करके सफदरजंग अस्पताल में चला गया। सफदरजंग अस्पताल एशिया का सबसे बड़ा अस्पताल है, जितना बड़ा अस्पताल है उतनी ही बड़ी अव्यवस्था भी चारों ओर दिखाई पड़ती है। मरीज भी अनगिनत। एक–एक विभाग की लंबी कतारें... इस

बात का खुला बयान दे रहीं थीं कि हर गाँव में मोहल्ला क्लिनिक की बहुत जरूरत है। कम से कम भीड़ का दबाव कुछ तो कम हो। जिन मरीजों के पाँव घायल थे, वही अपने–अपने स्थान पर अडिग खड़े थे। घंटों बाद कहीं लाइन खिसकती थी। ये नजारा कुछ देर मीम ने देखा और मन ही मन अफसोस जताया। ईमरजेंसी वार्ड खचाखच भरा था। कोई रो रहा था, कोई सुबक रहा था, कोई मायूस खड़ा था तो कोई दहाड़े मारकर रुदन कर रहा था। उस मैडम ने नर्स से पूछा, 'सिस्टर, रूपगर्विता कौन–से बैड पर है उसका एक्सीडेंट हुआ है..'

'बैड नंबर आठ कमरा नंबर 9 में है, उसे खून की जरूरत है'। नर्स ने निर्विकार भाव से जवाब दिया।

मीम का दिल धक–सा रह गया। वह तेजी से कमरे की तरफ मुड़ा, जहाँ वह युवती अचेत पड़ी थी। दो डॉक्टर उसके पास खड़े थे। आपस में बातें कर रहे थे 'इसके खून का क्या हुआ... कोई डोनर आया कि नहीं।'

तभी नर्स ने आकर बताया, 'एक डोनर आया है, लेकिन सर उसको पीलिया हो रखा है हम उसका खून नहीं ले सकते।'

तभी मैडम ने डॉक्टर से आग्रह किया– 'सर ये लड़का इस लड़की को खून देना चाहता है।'

'तुम कौन हो इस लड़की के?'

'हम इसके ऑफिस के कुलीग हैं।'

'ठीक है, ऐसा करो ब्लड बैंक में चले जाओ... वहाँ रक्तदान कर दो।'

ब्लड बैंक करीब पाँच सौ मीटर की दूरी पर दूसरी बिल्डिंग में था। जब वह पहुँचा तो वहाँ एक लड़का नर्स से रो–रोकर मिन्नत कर रहा था– सिस्टर उसे बचा लो प्लीज, मेरे अंदर जितना खून है... सारा निकाल लो पर उसे बचा लो'

'अरे बाबा तुम यहाँ भी आ गए, तुम्हें मना किया था कि तुम्हारा खून नहीं ले सकते... तुम्हें पीलिया है। कोई और डोनर लाओ'।

'मैं कहाँ से लाऊँ डोनर... मैं इस शहर में नया हूँ और अकेला हूँ ....मैं तो इन्हे ढूँढते हुए यहाँ आया हूँ'... मैं इनके बिना जिंदा नहीं रह पाऊँगा... सिस्टर, प्लीज मेरा खून ले लो'

वह इतने कातर स्वर में निवेदन कर रहा था कि सुनने वालों का दिल भी दहल जाए। नर्स का दिल पसीज गया... वह डॉक्टर को बताने लगी– 'सर यह लड़का एक ही जिद पर अड़ा हुआ है अपना रक्तदान करना चाहता है, लगता है यह उस लड़की से प्यार करता है।'

'कौन से पेशेंट के लिए कह रहा है' डॉक्टर ने अचंभित–सा होकर नर्स से पूछा।

'सर, वह जिसका एक्सीडेंट हुआ है... रूपगर्विता'

मीम ने ये सब बातें अपने कानों से सुनीं। दिल जैसे टुकड़े–टुकड़े हो गया था। हाय री किस्मत दिल लगा भी, तो कहाँ। वह कुछ भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर रहा था। वह असीम मौन को पी रहा था। तभी उस मैडम ने नर्स की ओर जाकर निवेदन किया, 'सिस्टर ये मीम जी हैं, रूपगर्विता के ऑफिस कुलीग उनके लिए रक्तदान करना चाहते है।'

'ठीक है.. आइए कुछ टेस्ट करवाने होंगे, फिर आप रक्तदान कर सकते है,' नर्स ने अनौपचारिकता से जवाब दिया। मीम ने रक्तदान से पहले अपने खून–ए–जिगर के आँसू पिए और कभी किसी को कोई भनक नहीं लगने दी। मीम ने रक्तदान करने के बाद अपने घर की राह ली। अपनी तीन साल की नौकरी में वह चौथे फ्लोर पर केवल पाँच बार ही गया होगा, किन्तु पिछले तीन महीनों में पचास बार गया। चौथे फ्लोर पर मीम भाई ने जाना अचानक बंद कर दिया किन्तु किसी ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की, न ही उसके रक्तदान पर कोई चर्चा ही हुई।

eke pn lkxj
बिक्री पर्यवेक्षक (प्रशा)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड

कूटभेषज

वर्ष 2020 से अब तक का समय कोविड–19 महामारी के लिए जाना जाएगा जिससे आज पूरी दुनिया जूझ रही है। कोई नहीं जानता कि यह अवधि और कितना खिंचेगी। हम सभी को बड़ी बेसब्री से इसके टीके का इंतजार था ताकि इस महामारी से मुक्ति मिल सके। इसका टीका भी अब आ चुका है। अनेक कंपनियों ने सफलतापूर्वक विभिन्न टीकों को बाजार में उतार दिया है। इनमें भारत में लगने वाले टीके कोवैक्सीन और कोवीशील्ड हैं और अब रूस से स्पूतनिक का आयात भी हो रहा है। कुछ समय पूर्व जब वैक्सीन के परीक्षणों का दौर चल रहा था तब हरियाणा राज्य के स्वास्थ्य एवं गृह मंत्री श्री अनिल विज कोविड–19 संक्रमण को लेकर समाचारों की सुर्खियों में रहे। दरअसल कोरोना का टीका लगवाने के बावजूद वे कोरोना से संक्रमित हो गए और लोग टीके के प्रभाव पर सवालिया निशान लगाने लगे।

हुआ यों कि कोरोना से लड़ने के लिए भारत बायोटेक ने कोवैक्सीन नाम का टीका विकसित किया है। इसका तीसरा परीक्षण 20 नवंबर 2020 को शुरू हुआ था। इस फाइनल फेज के ट्रायल के लिए मंत्री महोदय ने खुद वॉलेंटियर बनने की पहल की थी। इसी दौरान उनको टीके की पहली डोज दी गई। कंपनी के अनुसार कोवैक्सीन का दो डोज का शेड्यूल है। शेड्यूल के अनुसार 28 दिनों में दो डोज दिए जाने का प्रावधान था। दूसरी डोज पहली डोज के 14 दिनों के बाद दी जानी थी। इसके बाद ही वैक्सीन के वास्तविक प्रभाव (एफीकेसी) का पता चल पाता। लेकिन मंत्री महोदय के मामले में इससे पहले कि दूसरी डोज दी जाती वे कोरोना संक्रमित हो गए।

कोई भी वैक्सीन कितना प्रभावी होता है इसे समझने के लिए आइए समझते हैं कि इसके परीक्षण की प्रक्रिया क्या होती है।

वर्ष 1749 में इंग्लैंड में जन्में एडवार्ड जेनर मेडिकल के इतिहास में सर्वाधिक प्रसिद्ध फिजीशियनों में से एक हैं। जेनर ने एक अवधारणा का परीक्षण किया कि काउपॉक्स का संक्रमण किसी व्यक्ति को चेचक के संक्रमण से बचा सकता है। जेनर के समय से लेकर अब तक के सभी टीके उनकी खोजों पर आधारित हैं।

काउपॉक्स एक असामान्य बीमारी है जो मवेशियों में होती है जो गाय के थनों या खुरों पर हुए घावों के जरिए मनुष्य में फैल सकती है। इसके विपरीत, चेचक मनुष्य के लिए एक जानलेवा बीमारी थी। चेचक से संक्रमित लगभग 30% की मौंत हुई थी। इससे बचने वाले लोगों के चेहरे पर और तेज बीमारी से प्रभावित शरीर के अन्य हिस्सों में प्रायः गहरे गड्ढ़ों के निशान होते हैं। चेचक अंधेपन का एक प्रमुख कारण था।

जेनर के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने डेयरी–मेड (डेयरी में काम करने वाली महिला) द्वारा किए गए निरीक्षण में रुचि दिखाई थी। उस महिला ने उनसे कहा "मुझे कभी चेचक नहीं होगा, क्योंकि मुझे काउपॉक्स हुआ था। मेरे चेहरे पर कभी फुंसियों के निशान नहीं होंगे।" और अनेक डेयरी कामगार यह मानते थे कि काउपॉक्स के संक्रमण से चेचक से सुरक्षा मिलती है।

यह देखते हुए कि काउपॉक्स संक्रमण के सुरक्षात्मक प्रभाव के बारे में स्थानीय जानकारी थी, जेनर का योगदान क्यों महत्वपूर्ण था? दरअसल जेनर ने व्यवस्थित जांच और निरीक्षण करने का फैसला किया, जिसके बाद काउपॉक्स संक्रमण उसके फायदे के व्यावहारिक अनुप्रयोग का आधार बना।

जेनर ने काउपॉक्स के घाव से एक पदार्थ लेकर आठ वर्षीय एक बच्चे जेम्स फिप्स के हाथ की त्वचा के अंदर डाल दिया, यह बच्चा जेनर के माली का पुत्र था। फिप्स को कई दिनों तक कमजोरी महसूस हुई लेकिन बाद में पूरी तरह से ठीक हो गया।

कुछ समय बाद, जेनर ने नए ह्यूमन चेचक के घाव से एक पदार्थ लेकर फिप्स की त्वचा में डाल दिया ताकि वह चेचक से संक्रमित हो जाए। लेकिन, फिप्स को चेचक नहीं हुआ। जेनर ने अन्य लोगों पर यह जांच की और अपनी खोजों को प्रकाशित किया।

हम जानते हैं कि काउपॉक्स वायरस ऑर्थोपॉक्स परिवार का वायरस होता है। ऑर्थोपॉक्स वायरस में चेचक वायरस शामिल होते हैं जिनसे चेचक होता है।

चेचक के खिलाफ टीकाकरण की जेनर की विधि लोकप्रिय हुई और अंततोगत्वा दुनिया भर में फैल गई। वर्ष 1823 में जेनर की मृत्यु के 150 साल बाद, चेचक ने अपनी अंतिम सांसें ली। व्यापक चौकसी टीकाकरण कार्यक्रम के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आखिरकार 1980 में पृथ्वी ग्रह से चेचक के उन्मूलन की घोषणा की।

जेनर के वैज्ञानिक विधि के निम्नलिखित चरण हैं–

fujh{k.k% जिस व्यक्ति को कभी काउपॉक्स हुआ होता है उसे

चेचक नहीं होता।

ifjdYiuk% यदि किसी व्यक्ति को जानबूझकर काउपॉक्स से संक्रमित किया गया है, तो उस व्यक्ति को जानबूझकर चेचक के संपर्क में लाने पर भी वह सुरक्षित बना रहेगा।

tkap% किसी व्यक्ति को काउपॉक्स से संक्रमिक करना। इसके बाद व्यक्ति को चेचक से संक्रमित करने की कोशिश करना।

fu"d"kZ% किसी व्यक्ति को काउपॉक्स से संक्रमित करने से वह चेचक से सुरक्षित रहता है।

tkuSl l,Yd% Mcy&Cykb.M jSaMekbTM Vªk;y ¼f}d&vU/k ;k nksgjk –f"Vghu½ ;k–fPNd ijh{k.k &

1954 में जोनैस सॉल्क के निष्क्रिय पोलियोवायरस वैक्सिन (IPV) का परीक्षण किसी टीके के परीक्षण के लिए वैज्ञानिक विधि के प्रयोग में दूसरा महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। इस परीक्षण में बड़ी संख्या में रोगियों को शामिल किया गया था – कुल मिलाकर 13 लाख बच्चे – मेडिकल क्षेत्र का अब तक का सबसे बड़ा परीक्षण। सॉल्क के टीका परीक्षण ने सफलतापूर्वक दिखाया कि टीके से पैरालिटिक पोलियो से सुरक्षा मिली, और उसके बाद जल्द ही टीके को लाइसेंस मिल गया। वह रोग जिसने कभी हजारों लोगों को विकलांग किया था, अब उस रोग का पश्चिमी गोलार्ध से सफाया हो चुका था।

सॉल्क परीक्षण सावधानीपूर्वक डिजाइन किया हुआ एक डबल–ब्लाइंड रैंडमाइज्ड प्रयोग था।

यह परीक्षण अथवा अध्ययन का एक ऐसा तरीका है जिसमें न तो प्रतिभागियों के समूहों को (जिन्हें परीक्षण का विषय कहा जाता है) और न ही परीक्षण करने वाले अध्येताओं को यह पता होता है कि किस समूह को किस प्रकार का परीक्षणाधीन इलाज दिया जा रहा है या परीक्षणाधीन दवा दी जा रही है। bl çdkj ds ijh{k.kksa esa çk;% oSKkfud ,d fo'ks"k çdkj ds çHkko dh Hkh tkap djrs gSa ftls dgrs gSa ^^dSVHks"kt çHkko^^A fgnh esa ;g 'kCn vtuch gS ij bl ds vxzsth led{k 'kCn ls vki esa ls dbZ yksx vo'; ifjfpr gksaxsA og 'kCn gS ^^Iyslcks bQsDV^^A

आइए समझते हैं कि कूटभेषज या प्लैसिबो किसे कहते है। प्लेसिबो एक लैटिन शब्द है। पांचवी सदी में बाइबल के एक अंश में भी 'प्लेसीबो डॉमिनोज' शब्द का इस्तेमाल किया गया था, जिसका अर्थ है– ''मैं ईश्वर को प्रसन्न करूंगा।'' 18वीं सदी में पहली बार इसे एक चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रयोग किया गया था। प्लेसिबो चिकित्सा में मरीज को ठीक करने के लिए उसके विश्वास के आधार पर उसका इलाज किया जाता है। प्लेसीबो या कूटभेषज एक ऐसी चिकित्सा है जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता। ऐसी चिकित्सा पद्धति या तो प्रभावहीन होती है, या यदि कोई सुधार दिखता भी है तो उसका कारण कोई अन्य चीज ही होती है और इस पूरे कांसेप्ट या इफेक्ट को कहते हैं– कूटभेषज प्रभाव या प्लेसीबो प्रभाव।

इसे एक उदाहरण से समझते हैं। आप एक डॉक्टर के पास जाते हैं, क्योंकि आपको बहुत दिनों से सिर में दर्द हो रहा है। डॉक्टर आपके सारे टेस्ट करवाता है और फिर आपको केवल एक गोली देता है, दिन में दो बार – खाना खाने के बाद।

आप हफ्ते भर गोली खाते हैं और ठीक हो जाते हैं। आप डॉक्टर को शुक्रिया करने जाते हैं, साथ ही पूछते हैं कि वो दवा कौन सी थी, जिससे महीनों से चला आ रहा सिरदर्द महज एक हफ्ते में छू–मंतर हो गया। डॉक्टर आपको बताता है कि वो कोई दवा थी ही नहीं, वो तो एक मीठी गोली थी, जिसे उसने दूसरे डब्बे में भरकर आपको दे दिया था।

अब आप समझ नहीं पाते कि डॉक्टर को शुक्रिया कहें या उसे इस धोखे के लिए कोसें। लेकिन आप उससे कुछ कहें उससे पहले ही डॉक्टर आपको समझाना शुरू कर देता है कि आपके सारे टेस्ट करवाए, सिर तो छोड़िए, शरीर के किसी कोने में कोई दिक्कत नहीं मिली। दरअसल ये सिरदर्द आपके सिर की ही उपज था यानी आपके दिमाग की। और फिर वह बताता है कि कैसे प्लैसिबो या कूटभेषज प्रभाव से ऐसे रोगों को या कहें कि भ्रम की स्थिति को ठीक किया जा सकता है।

टीके के अनुसंधान में इस वैज्ञानिक विधि के कारण ही आज की सावधानीपूर्वक विनियमित टीका विकास की प्रक्रिया अस्तित्व में है। कई वर्षों में, टीके के अध्ययन के मानक धीरे–धीरे कठोर होते गए। कंट्रोल, ब्लाइंडिंग, और रैंडमाइजेशन के सिद्धांत टीकों की जांच की विधियों में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

किसी ड्रग ट्रायल में, प्रायः एक नियंत्रण समूह को प्लैसिबो दिया जाता है जबकि दूसरे समूह को दवा (या अन्य उपचार)। इस तरह, शोधकर्ता प्लैसिबो की प्रभावशीलता के खिलाफ दवा की प्रभावशीलता की तुलना कर सकते हैं। यदि शोधकर्ताओं को पता है कि इलाज कौन करवा रहा है और किसे कूटभेषज दिया जा रहा है लेकिन प्रतिभागियों को इसका पता नहीं होता, तो इसे एकल–नेत्र परीक्षण कहा जाता है। लेकिन अनेक मामलों में वैज्ञानिक दोहरे नेत्रहीन या द्विक अंध परीक्षण (डबल ब्लाइंड ट्रायल) को बेहतर मानते हैं जिसमें न

तो प्रतिभागियों को (जिन्हें परीक्षण का विषय कहा जाता है) और न ही परीक्षण करने वाले वैज्ञानिकों को यह पता होता है कि किस समूह को वास्तविक परीक्षणाधीन दवा दी जा रही है और किस समूह को कूटभेषज। इसका मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना होता है कि जो दवा या टीका विकसित किया जा रहा है वह कितना कारगर है। दरअसल मनुष्य का मस्तिष्क एवं शरीर अत्यंत जटिल है। वास्तविक दवा का प्रभाव कूटभेषज जैसा और कूटभेषज का वास्तविक दवा जैसा हो सकता है। इसी फर्क को जानने के लिए ही डबल ब्लाइंड परीक्षण विधि अपनाई जाती है। oKkfud 'kr çfr'kr vk'oLr gksuk pkgrs gSa fd tks nok fodflr dh xbZ gS vkSj mlls tks ifj.kke çkIr gksa jgs gSa og dgha Iyflcks çHkko ds dkj.k rks ugha gSA blhfy, vud pj.kksa esa ¼de ls de rhu pj.kksa esa½ ;g ijh{k.k fd, tkrs gSa] ftuesa ,d pj.k nksgjk –f"Vghu ijh{k.k dk pj.k Hkh gksrk gSA ;g fodflr dh xbZ nok ;k Vhds dk vf/kd fo'oluh;rk çnku djrk gSA

मंत्री महोदय के मामले में भी यह तीसरा चरण था। यद्यपि कंपनी ने अपना पक्ष रखते हुए स्पष्ट किया कि असली प्रभाव दूसरी डोज के बाद ही पड़ता, मगर वास्तव में यह कहना भी कठिन है कि मंत्री महोदय को जो दवा दी गई वह वास्तविक दवा ही थी या कूटभेषज। dguk u gksxk fd bruh xgu ekudksa ds vuq:i ijh{k.kksa ds i'pkr fodflr Vhds dh fo'oluh;rk ij lansg ugha fd;k tk ldrkA

HkkisUæ dqekj
प्रबंधक
दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कपनी लिमिटेड
दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय–1

देश प्रेम

तैरना है तो समंदर में तैरो
नदी नालों में क्या रखा है
प्यार करना है तो वतन से करो
इन बेवफा लोगों में क्या रखा है

ये बात हवाओं को बताये रखना
रौशनी होगी चिरागों को जलाए रखना
लहू देकर जिसकी हिफाजत हमने की
ऐसे तिरंगे को सदा दिल में बसाए रखना

खूब बहती है अमन की गंगा बहने दो
मत फैलाओ देश में दंगा रहने दो
लाल हरे रंग में ना बाटों हमको
मेरे छत एक तिरंगा रहने दो

आन देश शान देश की
देश की हम संतान है
तीन रंगों से रंगा तिरंगा
अपनी ये पहचान है

किसी को लगता हिन्दू खतरे में है
किसी को लगता मुसलमान खतरे में है
धर्म का चश्मा उतार कर देखो यारों पता
चलेगा हमारा हिंदुस्तान खतरे में है

आजादी की कभी शाम नहीं होने देंगे
शहीदों कि कुर्बानी बदनाम नहीं होने देंगे
बची हो जो एक बूंद भी गरम लहू की
तब तक भारत माता का आँचल नीलाम नहीं होने देंगे

चलो आज फिर से वो नजारा याद कर लें
शहीदों के दिल में थी वो ज्वाला याद कर लें
जिसमें बहकर आजादी पहुंची थी किनारे
देशभक्तों के खून की वो धारा याद कर लें
जय हिन्द जय भारत।

dqekj vfHk"ksd
(मानव संसाधन)
बी.ई.एम एल लिमिटेड

''नर्मदा यात्रा'' संस्मरण

अमृतलाल वेगड जी की पुस्तक 'नर्मदा परिक्रमा' एवं 'अमृतस्य नर्मदा' पढ़कर मैं नर्मदा तट के जंगलों का, नर्मदा के प्राकृतिक घाटों एवं ग्रामीण जीवन के सौंदर्य को अनुभव करने की मुमुक्षा से भर गया एवं नर्मदा यात्रा पर जाने की तैयारी में लग गया।

नर्मदा के बारे में आपको थोड़ी जानकारी दे दूँ, फिर यात्रा शुरू करें। नर्मदा, जिसे रेवा के नाम से भी जाना जाता है, एक पावन, पवित्र नदी मानी जाती है। यह मध्य भारत की और भारतीय उपमहाद्वीप की पांचवीं सबसे लंबी नदी है। यह गोदावरी नदी और कृष्णा नदी के बाद भारत के अंदर बहने वाली तीसरी सबसे लंबी नदी है। मध्य प्रदेश राज्य में इसके विशाल योगदान के कारण इसे ''मध्य प्रदेश की जीवन रेखा'' भी कहा जाता है। यह उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक पारंपरिक सीमा की तरह कार्य करती है। मैकल पर्वत के अमरकण्टक नामक शिखर से नर्मदा नदी की उत्पत्ति हुई है। इसकी लम्बाई प्रायः 1312 किलोमीटर है। यह नदी पश्चिम की तरफ जाकर खम्बात की खाड़ी, अरब सागर में गिरती है।

विश्व में नर्मदा ही एक मात्र ऐसी नदी है जिसकी परिक्रमा की जाती है और पुराणों के अनुसार जहाँ गंगा में स्नान से जो–जो फल मिलता है, नर्मदा के दर्शन मात्र से ही उस फल की प्राप्ति हो जाती है। नर्मदा नदी पूरे भारत की प्रमुख नदियों में से एक है, जो पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। विश्व में हर शिव–मंदिर में इसी दिव्य नदी के नर्मदेश्वर शिवलिंग विराजमान है। कई लोग जो इस रहस्य को नहीं जानते वे दूसरे पाषाण से निर्मित शिवलिंग स्थापित करते हैं, ऐसे शिवलिंग भी स्थापित किए जा सकते हैं परन्तु उनकी प्राण–प्रतिष्ठा अनिवार्य है। जबकि श्री नर्मदेश्वर शिवलिंग बिना प्राण–प्रतिष्ठा के पूजित है।

कई मित्रों से चर्चा की, अन्तः 4 साथी इस यात्रा पर चलने को मिले। इस तरह हम पाँच मित्रों ने इस यात्रा पर निकलना तय किया। चूँकि हम सभी नौकरीपेशा थे इसलिए अधिक दिन अवकाश नहीं ले सकते थे। अतः हमने 5 दिनों की छोटी यात्रा को चुना जिसमें सघन जंगल एवं नर्मदा का उपरोक्त पूरा सौंदर्य आ सके। अतः औंकारेश्वर से पामाखेडी तक की साहस भरी यात्रा को चुना जिसमें लक्कडकोट का जंगली जानवरों वाला 22 किमी का सुरक्षित वन क्षेत्र आता है।

सभी साथियों को आवश्यक सामान की लिस्ट बना कर दी कि वे पाँच दिनों की नर्मदा यात्रा पर क्या–क्या लेकर चलें, बैग कैसे हों, जूते कैसे हों आदि। मगर फिर भी एक मित्र उचित बैग नहीं लाए तो एक मित्र सेंडिल पहन कर आए, दोनों को परेशानी आई। सामान भी सभी मित्र कुछ ना कुछ अतिरिक्त ले आए। अतः बैंगों में भारी बोझ लेकर हम 25 नवम्बर 2004 को इन्दौर से औंकारेश्वर आ गए। औंकारेश्वर में एक धर्मशाला में रात्रि विश्राम करके आवश्यक जानकारी प्राप्त की एवं सभी मित्रों की राय थी कि एक कुली कर लिया जाए मगर नहीं मिला। भोर की बेला में जल्दी उठ कर नर्मदा स्नान कर ज्योर्तिलिंग मंदिर में दर्शनकर पॉच दिनों की पामाखेडी तक की यात्रा का संकल्प लेकर चल दिए। ''नर्मदा पंचकोशी यात्रा'' आज समाप्त होने वाली थी। अतः रात से ही यात्रा से लौटे श्रद्धालुओं से सारे घाट पटे पड़े थे। उन्हीं के बीच से रास्ता बना कर सिद्धवरकूट के रास्ते चले, फिर नर्मदा के तट से औंकारेश्वर डेम के किनारे से चले। अब तो यह डेम बन चुका है उस समय निर्माणाधीन था।

सबसे पहले सलोनी गाँव आया। सुबह हो रही थी पक्षियों की मधुर आवाजें हमारा स्वागत कर रहीं थी। फिर धावडी गॉव आया। वजन बहुत था कंधों पर, इसलिए धीरे धीरे चल रहे थे। जंगल से होकर चल रहे थे नर्मदाजी के किनारे आ गए थे। बखतागढ़ का नाला पूरा घूम कर पार करके बखतगढ़ गाँव में घुस कर वहीं सुस्ताने लगे। एक ग्रामीण से अगले आने वाले गांव रामपुरा का पता पूछा तो इस बहाने उससे थोड़ी बातचीत हुई, उसने हमें जंगल में चलने हेतू दो डंडे दिए और कहा 10 मिनट रूको तो मैं जंगल में ढोर छोड़ कर आता हूँ फिर मेरे घर चल कर चाय पीना। 10 मिनट बाद हम गांव में अंदर गए। एक जगह भैंस का ताजा दूध निकलता देख रूके। वहॉ से दूध पीकर आगे बढे तो एक चरवाहे की बेटी से मुझे एक बांस की सुंदर बेंत उपहार में मिली जो पूरी यात्रा मेरे काम आई। बखतगढ से रामपुरा जंगल का रास्ता था एवं नदी के किनारे से सुंदर मार्ग था। पहला दिन था हम सब तरोताजा थे तो उत्साह में सोचा रामपुरा पहुँच कर वहाँ से तुरंत चल कर रात होते–होते धावडी कुंड पहुँच जाएंगे।

रामपुरा में कनाड नदी का नर्मदा में संगम है वहाँ अच्छा घाट था खूब देर तक लगभग 1 घंटे स्नान किया तैरने का आनंद लिया। फिर कनाड नदी को वहाँ के नाविक की बेटी ने हमें पार करवाया। उतराई में उसे 1.5 किलो आटा देकर वजन कम किया। कछार से उपर चढ़ कर गए तो देखा कि नदी किनारे एक सुंदर सी, बिना दीवाल की कुटिया परकंमावासियों के ठहरने आदि के लिए गांववालों ने बना रखी है, उसमें जाकर

सामान रखा एवं इस छोटे से रामपुरा गांव की सुंदरता देखकर, रात्रि इसी गांव में विश्राम करना तय किया। कुटिया के सामने 100 मीटर पर गाँव और मंदिर था। गाँव के निवासियों से मिले, बच्चों के साथ क्रिकेट खेली। गाँव का एकमात्र हेडपंप खराब था। इसलिए कगार से नीचे उतर कर नर्मदा से पानी लाना पडा। रामपुरा में हमने दिन में तरह–तरह की चिडियाएं देखी तो हम प्रकृति के निपुण रंग संयोजन की सुंदरता देख कर अभिभूत हो गए।

आज पूर्णिमा की रात है। शाम को बढ़िया खाना बना कर खाया, सुबह के नाश्ते लायक रोटियां बना कर रखी, सुबह सुबह चलने का तय हुआ। आज दिन भर नाश्ते से ही काम चलाया था। गाँव के नाववाले को बुलाकर कहा कि आज चांदनी रात में एक घंटे नर्मदा में एक मेडीटेशन करना है तो नाव ले आना। अभी तक शांत नर्मदा का बहाव, अब, आगे नर्मदासागर डेम से पानी छोडने से बहुत तेज हो गया था, नदी के बहने की आवाजें आ रही थीं। नाविक का 13–14 साल का बेटा नाव लेकर आया। पतली सी नांव थी उसे एक लंबा बांस गढा कर उसने एक जगह रोके रखा। चांदनी रात में एक घंटे नाव में बैठ कर नदी के बीच ध्यान किया।

आग जला रखी थी, थोडी देर ही ताप पाए, थके हुए थे, नींद आ गई। रात भर जंगल से जानवरों की तरह–तरह की आवाजें आती रही। गांव के लोग 4 बजे से ही उठ जाते हैं तो हमारी भी नींद खुल गई, तैयार हो कर गाँव वालों से रास्ता समझ कर चले। डैम से पानी छोड़ने से किनारे की पगडंडियां डूब गई थी इसलिए फिर कगार पर चढ़कर उपर आए और गाँववालों से दूसरा मार्ग पूछा और नर्मदा के किनारे–किनारे चले फिर एक सुंदर जगह आने पर रूक कर रात की बची रोटियों आदि का नाश्ता किया। एक दो छोटे नालों के बाद एक बडा नाला आया। यहाँ नाला पार करने को ना तो नांव थी ना ही कोई दूर दूर तक दिख रहा था कि रास्ता पूछें फिर याद आया कि लगभग एक घंटे से हमने किसी आदमी को नहीं देखा है। बगल में खडा पहाड़ था कोई चारा ना देख एक जगह से उस पहाड पर चढ गए और उपर आ कर देखा तो एक प्राकृतिक गुफा मिली, जिसके आसपास हडिडयां पड़ी थीं। निर्जनता एवं मलमूत्र से लगा कि यहाँ कोई मांसभक्षी जानवर रहता है। हम एक मनुष्यों के उपयोग में ना आने वाले क्षेत्र में थे। थक गए थे मगर सब जल्दी–जल्दी चले ताकि कोई पगडंडी मिल जाए। थोड़ी देर बाद जंगल में एक जगह से नाला पार करने की जगह दिखी। नीचे उतरे तो देखा कि नाला अब बहुत छोटी–छोटी धाराओं में बँट कर बह रहा है। यह जगह शांत एवं सुंदर थी सबने बैठ, हाथ पैर धोकर जंगल से आते मिनरल वाटर को पिया। इतना मीठा और स्वादिष्ट पानी था कि ऐसा पानी हमने कभी नही पिया था। थोड़ी देर आराम कर पुनः जंगल में चल पड़े।

हमने सोचा कि हम मार्ग तो ढूंढ ही लेते हैं तो सोचा कि नर्मदा के किनारे से जाने पर कोई नाला फिर ना आ जाए, अतः ऊपर कगार पर चढ कर जंगल से चले ओर कोई पगडंडी ढूंढने लगे। आगे एक पगडंडी मिली, मगर वह हमें नर्मदा के तट से दूर ले गयी तो हमें चिन्ता होने लगी क्योंकि रामपुरा में चलते वक्त गांववालों ने कहा था कि नर्मदा तट मत छोडना। आज सुबह से कोई आदमी नहीं दिखा था दोपहर एक बजने आ गई थी लगा कि दुनिया में सिर्फ हम ही इंसान बचे हैं। जंगल घना था आखिर में चलते–चलते एक आदमी मिला उसने सही रास्ता बताया और कहा कि आगे कोथमीर गांव आएगा वहाँ से फिर धाराजी को रास्ता है। एक घंटा चलने के बाद कोथमीर गांव आया वहाँ से नर्मदा के किनारे की तरफ इस जंगल की पगडंडी को छोडकर कर चले। एक घंटे बाद दो बच्चे एवं उनके पिता मिले उन्होंने उनके एक बेटे को साथ भेजा उसने हमारा एक बैग रखा और हमें धाराजी गांव के पास छोड़ गया। गांव के बाहर की पक्की धर्मशाला में रूके। गांव वालों ने एक कमरा हमें दे दिया। थक चुके थे, थोडा नाश्ता कर आराम करने के बाद नर्मदा स्नान को चले।

धर्मशाला से नीचे उतरे तो धारडीकुंड के कुंड दिखे। काफी लोग नीचे दिख रहे थे। पानी उतर चुका है, हम कुन्डों के समीप एक बढिया जगह नहाते हैं। यहां उँची नीची चटटानों के बीच जगह–जगह गोल चौकोर कुन्ड बनें हैं पानी से भरे कुन्ड ऐसे लगते है कि जैसे बाथटव हों एक दम चिकने रेतीले कुन्ड किसी में कम किसी में ज्यादा पानी, उसमें बाथटब जैसे सो कर बडी देर तक आनंद लिया। पत्थर गोल चौकोर बहुत सुन्दर हैं आठ दस पत्थर छांटे थे मगर लाना ही भूल गए। यहां लगता है मानो नर्मदा में कुन्डों की बेल लगी है। डेम बनना शुरू हो जाने से अब ये क्षेत्र डूब में आ गया है।

धर्मशाला पहुंच कर चाय बनाकर पी। शाम को दाल पंराठे

बनाकर खाए। जो सामान कम पड़ता है, गांव से मिल जाता है। लाइट बार–बार आ रही थी तुरन्त चली भी जाती थी। मोमबत्ती जो हम लाए थे वो बहुत काम आ रही थी। आटा भी यहां खरीदा। वैसे गांव में सदाव्रत मिलता है। रात गांव में लोगों से मिलने गए तो गांव में सर्वे वाले मिल गए बोले ''पर्यटन को आए है आप लोग, अच्छा है, दो वर्ष बाद यह गांव, ये सारे कुन्ड डूब जाएंगे, औंकारेश्वर डेम का पानी यहां भर जाएगा''।

शाम से ही नर्मदा में नर्मदासागर डेम से पानी छोडने से पानी बढने से गर्जन की आवाजें आने लगी हैं। रात नौ बजे तक धुंआधार आवाज से पानी कुन्डों से बहकर नीचे नर्मदा घाटी में प्रपात बनाता हुआ बह रहा था। चांदनी रात में नीचे कुन्डों के सामने चट्टान पर बैठे और कुन्डों से गर्जते पानी को जलधाराओं के रूप में नीचे बहते देखते रहे। पानी बढता ही जा रहा था। रामपुरा में रात बहुत ठंड लगी थी यहां भी थी। चांद बार–बार बादलों में छिप रहा था एकदम से कभी रौशनी कम हो जाती थी। भेडाघाट जैसा दृश्य था। हम सम्मोहित से चांदनी रात में नर्मदा का यह रूप देखते रहे। हम पांचों के अलावा कोई नहीं था। पुरी रात गर्जन की आवाजें आती रहीं। रात नींद अच्छी आई, यहां भी मच्छर नहीं थे।

सुबह 4.30 बजे बस वाले ने हार्न बजाना शुरू कर दिया। ये बस प्रातः 5.30 बजे धारा जी से हाटपीप्ल्या जाती है और शाम 6.00 बजे वापिस आती है। एक मात्र यही बस थी। हमारे एक साथी, पैर में मोच आ जाने के कारण इन्दौर चले गए और हमारा बहुत सारा गैर जरूरी सामान भी ले गए।

हम सभी स्नान चाय से निपटकर 8.00 बजे चले। आज आठ किलोमीटर चल कर, प्रेमगढ में ही रात्रि विश्राम करना तय किया है। अतः आराम से धीरे–धीरे चले। पहला गांव आधे घंटें मे आया, दूसरा भी जल्दी आ गया। यहां से रास्ता अब नर्मदा के किनारे–किनारे आ गया हैं। बडे सुन्दर प्राकृतिक घाट बने दिख रहें है जब प्यास लगती है रूककर नर्मदा का पानी पी लेते हैं। अब पगडडी जंगल में ले गई। ठीक बारह बजे आखिर प्रेमगढ आ ही गए। गांव के बाहर धर्मशाला का पक्का भवन है। सात–आठ झौपडों का आदिवासी गांव है। जंगल चारों तरफ है। एक नदी गांव के बाहर बहती है। उसके दूसरी तरफ भेंटखेडा गांव है। यह भवन एक महात्मा जी का आश्रम है, जो अब नही रहे हैं यहां सदाव्रत की व्यवस्था है। यहाँ की देखभाल के लिए एक आदिवासी परिवार नियुक्त है। उन्होंने गांव से दूध लाकर हमें चाय बना कर पिलाई एवं एक साथी को पीने को दूध दिया। तभी अचानक एक युवक जंगल से तेजी से आकर यहाँ प्रवेश करता है। पता चला कि वो इस परिवार का बेटा है, रेतू नाम है इसका। इसके साथ तुरंत ही मित्रता हो गई।

हम आज रात आराम करके कल 22 किमी का लक्कडकोट का जंगल पार करने वाले थे मगर रेतू ने हमें बताया कि जंगल में एक स्थान, हनुमान कुटी है वहाँ तक वह चारा लाने रोज पैदल जाता है 3 घंटे में खाली हाथ पहुँच जाता है और कहा कि आप लोग अगर जंगल में रात रूकना चाहते हैं तो अभी चलें, जंगल में हनुमान कुटी में रात रूक जाएंगे। वहाँ जंगल में एक जगह से पानी भी मिल जाएगा। यह प्रस्ताव हम सभी को बहुत अच्छा लगा। अतः हमने तय किया कि रात प्रेमगढ में ना रूक कर जंगल के मध्य रहेंगे। गांव के लोगों ने कहा कि वहाँ एक साधू भी रहता है। रेतू कुछ ना बोला वो खाना बनाने में लग गया। रेतू ने हमारे साथ चलने एवं हमें यह जंगल पार करने में साथ चलना मान लिया। पैरों में मालिश कर हम सब रेडी हो गए फिर भोजन कर, तुरंत चल दिए। रेतू ने हमारा भारी–भारी सामान पोटली बना कर रख लिया। इस बीच धाराजी में हमें मिले एक साधुबाबा भी आ गए वह भी हमारे साथ चल दिए। वे फलाहार पर परिक्रमा कर रहे थे। गांव से बाहर निकल कर नीचे उतर कर नदी में आए। यह जटाशंकरी नदी है इसका बहाव तेज है, जूते उतार कर एक जगह से इसे पैदल पार किया। फिर पीने का पानी भरा।

सामने 8–10 झोपडों का भेंटखेडा गांव है। रेतू ने बताया इस गाँव में जनरेटर एवं आटाचक्की है। इस गांव के लोगों ने शेर को मार चुके शिकारियों को बहादुरी से पकड़ा था। शासन से इन्हें उपहार में जनरेटर एवं आटा चक्की मिली है। एकदम घना जंगल है। जीप चल सके ऐसी पगडंडी है। उसी पर

चले, जगह जगह तिराहे आ रहे थे। नर्मदासागर डेम से पावर सप्लाय इसी जंगल से होकर इन्दौर की तरफ गई है, उस लाइन को बिछाने में आने जाने वाले ट्रकों की आवाजाही की वजह से जंगल में ऐसी कई रोड बन गई हैं। इसलिए नए व्यक्ति को इन पगडंडियों की पहिचान करना मुश्किल है।

रेतू ने बताया यहाँ चोरी छिपे शिकारी आते रहते हैं और भटक जाते हैं। चलते–चलते रेतू से बातचीत चल रही है। एक सूखा नाला बार–बार पार कर रहे हैं, बांस के झुरमुट बार–बार आ रहे हैं, उँचे–उँचे पेड भी थे। सबसे पहले रेतू ने हमें जंगली सुअर के पैरों के निशान बताए, दो जंगली सुअरों ने थोडी देर इस पगडंडी का उपयोग किया था। पगडंडी के इस रास्ते पर गांव के लोगों के पैरों के निशान एवं गाय के पैरों के निशान मिल रहे थे। रेतू ने मोर के पैर के निशान दिखाए फिर सांभर, नीलगाय के दिखाए। धीरे–धीरे जंगल सघन एवं भयावह होने लगा। 4 बजे एक जगह आई यहाँ प्राकृतिक झिर है, यहाँ रेतू रोज रूक कर खाना खाता है, हमने सुस्ताया एवं पीने का पानी भरा।

साधुबाबा भी साथ चल रहे थे हम जहाँ भी रूकते, वे वहीं अपनी चिलम भर कर पी लेते हैं। आज हमारी चाल बडी तेज थी क्योंकि रेतू ने सभी के भारी सामान को पोटली बना कर रख लिया था एवं घना जंगल हमें थकावट भूल कर रात होने से पहिले हनुमान कुटी पहुँचने के लिए प्रेरित कर रहा था। रेतू अपने हंसिये जैसे हथियार को लेकर चल रहा था उसने बताया शेर या अन्य जानवर अनावश्यक मनुष्य पर हमला नहीं करते मगर बच्चे वाली मादा से अचानक संकरे स्थान पर यदि आमना सामना हो जाए तो वह आक्रमण कर देती है। जरक आदि जानवरों के निशान एवं शिकारी जानवरों के गंध छोडने के निशान देखने को मिल रहे थे अब एकदम से शाम होती लग रही थी हमने रेतू से पूछा कि हनुमानकुटी अब ओर कितनी दूर है, तो उसने कहा बस 2–3 किमी. है।

ठीक 5 बजे हम हनुमानकुटी पहुँच गए। एक 2 फीट उँचे आठ बाय आठ के चबूतरे पर हनुमानजी की प्रतिमा स्थापित है, छत दीवार आदि कुछ नहीं है। बगल में एक घांस पूस की कुटिया बनी है जिसका छप्पर उपर से खुला है एवं दीवारे हल्की बांस एवं मिटटी की हैं। बाबा ने मंदिर में आसन जमाया हमने कुटिया में सामान रखा। 5 मिनट आराम किया, अंधेरा होने को है, खूब पक्षी बोल रहे थे। सामने 200 मीटर दूर प्राकृतिक जलकुंड था। रेतू सभी की बोतल में पानी भर लाया। उसने खूब सूखी घांस इकठठी कर ली, लकडियां आदि बीन कर दो अलाव जलाए हमने कुटिया में सभी के लिए बिस्तर बिछाए। यहाँ अभी से ठंड लगने लगी है। एकदम से अंधेरा हो गया, चांद निकल कर उपर आएगा तब ही उजाला होगा क्योंकि चारों तरफ पहाड हैं और वह उजाला भी हल्का हल्का ही होगा क्योंकि उँचे–उँचे पेड़ भी हैं।

जंगल में अंधेरा कैसा होता है, आज देखा। हम अपनी टार्चों का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। रात के पक्षियों की आवाजें आ रही हैं हम जानवरों को देखने की कोशिश टार्च से कर रहे हैं। चूल्हा जला कर दाल बनने रखी है तवा नहीं है अतः रेतू कंडे बीन लाया था अब बाटी बना कर उस पर रख रहा है आज खूब पैदल चले हैं अतः खूब भूख लगी है। नर्मदा यात्रा में पता चला कि असली भूख कैसी होती है। अंधेरा मिटाने को 2–3 मोमबत्ती जलाई हैं मगर वे तो 1 घंटे में ही खत्म हो जाएंगी तो फिर क्या करेंगे। अतः मंदिर में रखे दिए जला कर रखे हैं तब भी थोडा सा ही उजाला हो सका हैं क्योंकि कुटी में छत नहीं है। गरम–गरम दाल है सुबह की रोटियां भी गरम कर लीं है बाटी भी गरम–गरम हैं घी लगी गरम बाटियाँ इतनी स्वादिष्ट लगी की मुंह से निकला की अन्न ही ब्रह्म है। रात में एक ध्यान में सभी मंदिर में मौन बैठे।

भोजन करके अलाव तापते रहे। फिर रात में टार्च के सहारे रेतू के साथ जलस्त्रोत पर जाकर बर्तन धोकर पीने का पानी भर कर लाए। अब इसी जलस्त्रोत पर रात भर जानवर भी पानी पिएंगे। एक जानवर रात से ही हमारी कुटी के पीछे घूम रहा था वो सुबह तक हम पर नजर रखे रहा। हम अंधेरे की वजह से उसे देख नहीं सके। थकावट की वजह से बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद आ गई। रात बारह बजे मेरी नींद किसी आहट से खुली। रेतू को उठाया तो उसने कहा कि ये तो सांभर होंगे और बताया कि जंगल में कभी–कभी ही शेर के दहाड़ने की आवाजें आती है। साधू मंदिर में खुले में सोया। रात भर तरह तरह की आवाजों से नींद खुलती रही। हम सभी इस तरह के घनघोर जंगल में पहली बार रूके थे।

सुबह फ्रेश होकर 7 बजे चले। सबसे पहले भालू के पैरों के निशान रेतू ने दिखाए वो पानी पीने रात आया होगा। रेतू ने रात को बतलाया था कि पास में एक शेर की गुफा है, हम उसे देखने गए, गुफा के पास आने पर हम सामान रख कर धीरे–धीरे उसके पास गए। वहाँ हड्डियां आदि पडीं थी। हलकी बदबू दूर से भी आ रही थी, उपर चढ कर नहीं गए। थोड़ी देर बाद जंगल कम घना होने लगा। एक मैदान जैसी जगह आने पर बैठकर सुबह का नाश्ता किया, फिर चले। प्रातः 9 बजे नर्मदासागर डेम जाने वाली रोड पर आ गए। रेतू को धन्यवाद आदि दिया।

5वें दिन सडक देखी थी। यहाँ से 8 किलोमीटर दूर पामाखेडी है एवं दूसरी तरफ इसी रोड पर 8–10 किलोमीटर दूर नर्मदासागर डेम है। एक ट्रक में बैठ कर नर्मदानगर आए। डेम को देखा। यहाँ से बस से पुनासा आए। पुनासा से दूसरी बस से सनावद होते हुए सकुशल इन्दौर आ गए। एक दो दिन सभी को नर्मदा के तट, ताजी हवा, जंगल के स्वादिष्ट पानी और जंगल याद आता रहा। हमारी यह पहली नर्मदा यात्रा यहीं पूरी हुई। अगली यात्रा फिर पामाखेडी से शुरू करेंगे।

jkeLo#i oek
राजभाषा अधिकारी
नेशनल टेक्सटाइल कारपोरेश्न लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

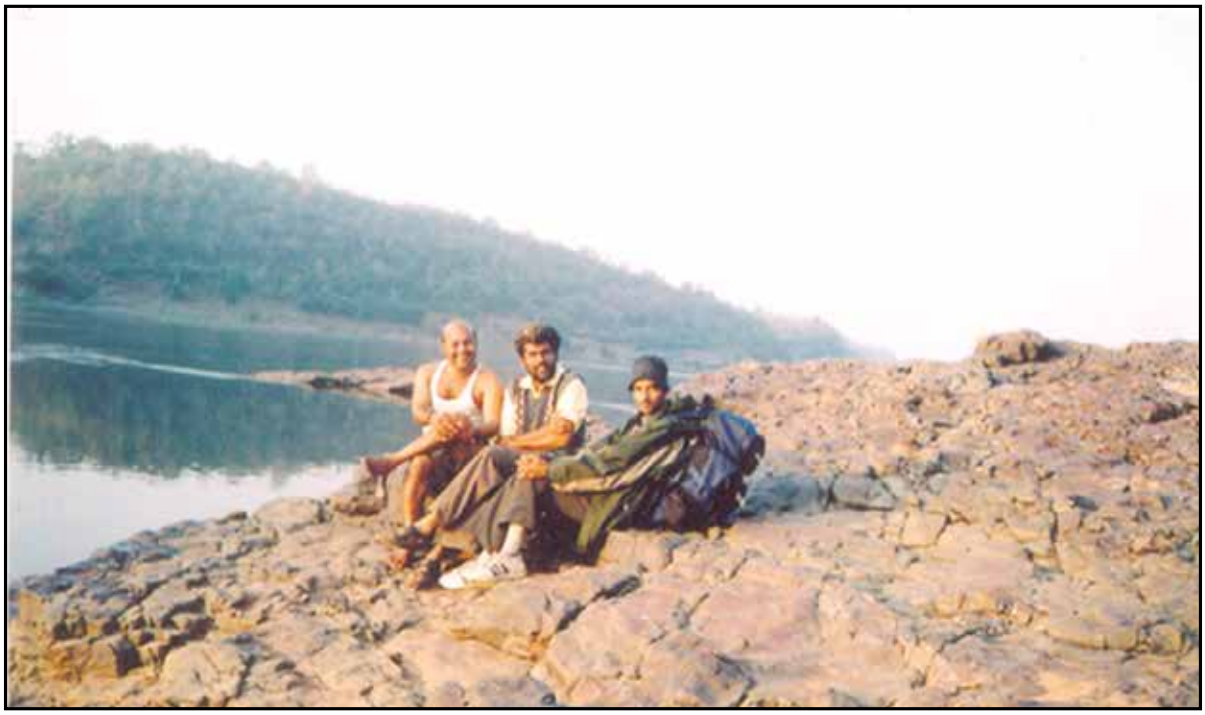

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स एंड शेड्यूल्ड ट्राइब्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स एंड शेड्यूल्ड ट्राइब्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन(एनएसएफडीसी) की स्थापना भारत सरकार द्वारा 08 फरवरी, 1989 को हुई थी। यह नए कंपनी अधिनियम, 2013 के अधीन धारा–8 के अंतर्गत 'लाभ–निरपेक्ष कंपनी' है। यह पात्र अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के माध्यम से व्यवस्थित प्रकार से गरीबी को कम करने के लिए चैनलाइजिंग एजेंसियों और अन्य विकास भागीदारों के साथ प्रभावी, उत्तरदायी और सहयोगात्मक तरीके से प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। इसका लक्ष्य वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार और कौशल विकास एवं अन्य नवीन पहलों के माध्यम से अनुसूचित जातियों की समृद्धि को बढ़ावा देना है।

एनएसएफडीसी मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति की आबादी के लिए ट्रेडों और अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलापों की पहचान करना, अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के कौशल और उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली प्रक्रियाओं को उन्नत बनाना, छोटे/कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देना, अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के उत्थान और आर्थिक कल्याण के लिए विशेष कार्यक्रमों को वित्तपोषित करना, अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के आर्थिक कल्याण के लिए उनके वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार करना, लक्ष्य समूह को अपनी परियोजना स्थापित करने के लिए परियोजना तैयार करने, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता के लिए सहयोग प्रदान करना, भारत और विदेश में पूर्णकालिक व्यावसायिक/तकनीकी पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनुसूचित जाति के पात्र छात्रों को ऋण प्रदान करना और पात्र युवाओं को भारत में वोकशनल (व्यावसायिक) शिक्षा और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययन करने के बाद कौशल और नियोजनीयता में वृद्धि करने के लिए ऋण प्रदान करना है। उक्त उद्देश्य के अनुसरण में एनएसएफडीसी राज्य/संघ शासित क्षेत्रों की चैनलाइजिंग एजेंसियों और अन्य चैनल भागीदारों के माध्यम से अनुसूचित जाति के लाभार्थियों को अपनी विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत रियायती ब्याज दरों पर वित्तीय सहायता देने और विभिन्न ऋणेत्तर योजनाओं के अंतर्गत सहायता उपलब्ध करा रहा है।

अनुसूचित जाति के व्यक्ति जिनकी वार्षिक पारिवारिक आय ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रु.3.00 लाख तक है, एनएसएफडीसी योजनाओं का लाभ पाने हेतु पात्र हैं। एनएसएफडीसी की योजनाएँ संबंधित राज्य/संघ शासित क्षेत्र द्वारा नामित चैनलाइजिंग एजेंसियों (एससीए), सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी), सहकारी बैंकों/समितियों और गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनी–माइक्रो वित्त संस्थान (एनबीएफसी–एमएफआई) के माध्यम से आय अर्जक गतिविधियों के लिए कार्यान्वित की जाती है। एनएसएफडीसी की अपने राज्य चैनलाइजिंग एजेंसियों/चैनल पार्टनरों के माध्यम से कार्यान्वित की जा रही विभिन्न योजनाएं निम्नानुसार हैं:–

,l lh,@lh, }kjk dk;kfUor _.k vk/kkfjr@Lo&jkt xkj _.k ;kstuk,a

;kstuk	;fuV ykxr	okf"kd C;kt nj		p|dkrh vof/k
		,l lh,@ lh,	ykHkkFkh	
मियादी ऋण (टीएल)	रु.5.00 लाख तक	3%	6%	10 वर्ष के अंदर
	रु.5.00 लाख से अधिक और रु.10.00 लाख तक	5%	8%	
	रु.10.00 लाख से अधिक और रु.50.00 लाख तक	6%	9%	
लघु–ऋण वित्त (एमसीएफ)	रु.1.40 लाख तक	2%	5%	3½ वर्ष के अंदर
महिला समृद्धि योजना (एमएसवाई)	रु.1.40 लाख तक	1%	4%	3½ वर्ष के अंदर

;kstuk	;fuV ykxr	okf"kd C;kt nj		p|dkrh vof/k
		,llh,@ lh,	ykHkkFkh	
महिला अधिकारिता योजना (एमएवाई)	रु.5.00 लाख तक	2.5%	5.5%	10 वर्ष के अंदर
लघु व्यवसाय योजना (एलवीवाई)	रु.5.00 लाख तक	3%	6%	6 वर्ष के अंदर
हरित व्यवसाय योजना (जीबीएस)	रु.7.50 लाख तक	2%	4%	10 वर्ष के अंदर
	रु.7.50 लाख से अधिक और रु.15.00 लाख तक	3%	6%	
	रु.15.00 लाख से अधिक और रु.30.00 लाख तक	4%	7%	
स्टैंड–अप योजना (एसआईएस)	रु.10.00 लाख से अधिक और रु.30.00 लाख तक	6–7%#	9–10%#	स्टैंड–अप इंडिया येजना के नॉर्म्स के अनुसार
स्वच्छता उद्यमी योजना (एसयूवाई)	रु.30.00 लाख तक	2% (पुरुष) 1% (महिला)	4%(पुरुष) 3%(महिला)	10 वर्ष के अंदर
शिक्षा ऋण योजना (ईएलएस)	रु.10.00 लाख अथवा 90%, जो भी कम हो (भारत में अध्ययन के लिए)	1.5% (पुरुष)	4%(पुरुष)	रु.7.50 लाख तक के लिए 10 वर्ष के अंदर
	रु.20.00 लाख अथवा 90%, जो भी कम हो (विदेश में अध्ययन के लिए)	1% (महिला)	3%(महिला)	रु.7.50 लाख से अधिक के लिए 15 वर्ष के अंदर
वोकेशनल शिक्षा और प्रशिक्षण ऋण योजना (वीईटीएलएस)	रु..4.00 लाख (100%)	1.5% (पुरुष) 1% (महिला)	4%(पुरुष) 3%(महिला)	7 वर्ष के अंदर
# ऋण की प्रमात्रा पर निर्भर करता है।				

*एनएसएफडीसी यूनिट लागत का 90% तक ऋण प्रदान करता है। यह मियादी ऋण और वीईटीएलएस को छोड़कर है, जहां क्रमशः 95% और 100% ऋण प्रदान करता है। बैंकों के माध्यम से पुनर्वित्त के मामले में, शेष ऋण का 100% एनएसएफडीसी योजनाओं के तहत कवर किया जाता है। बैंकों के माध्यम से पुनर्वित्त के मामले में, शेष ऋण का 100% एनएसएफडीसी योजनाओं के तहत कवर किया जाता है।

,uch,Qlh&,e,Qvkbl }kjk dk;kZUor ;kstuk

;kstuk	;fuV ykxr	_.k dh vf/kdre lhek ;fuV ykxr dk 90%	okf"kd C;kt nj		p|dkrh vof/k
			,uch,Qlh&,e,Qvkbl	ykHkkFkh	
आजीविका माइक्रो फाइनेंस योजना (एएमवाई)	रु.1.40 लाख तक	रु.1.25 लाख	3% (पुरुष) 2% (महिला)	11% (पुरुष) 10% (महिला)	3½ वर्ष के अंदर

lgdkjh cSd@lfefr;k }kjk dk;kfUor ;ktuk

;ktuk	;fuV ykxr	_.k dh vf/kdre lhek ;fuV ykxr dk 90%	okf"kd C;kt nj		pdkrh vof/k
			lgdkjh cd@lfefr	ykHkkFkh	
उद्यम निधि योजना (यूएनवाई)	रु.5.00 लाख तक	रु.4.50 लाख	4%	12%	6 वर्ष के अंदर

xSj&_.k vk/kkfjr ;ktuk ¼dk'ky fodkl çf'k{k.k dk;Øe½

- एनएसएफडीसी सरकारी/अर्ध–सरकारी/स्वायत्त प्रशिक्षण संस्थानों/विश्वविद्यालयों/डीम्ड विश्वविद्यालयों/सेक्टर स्किल काउंसिल/सेक्टर स्किल काउंसिल संबद्ध प्रशिक्षण प्रदाताओं के माध्यम से लक्ष्य समूह के बेरोजगार युवाओं के लिए अपैरल प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, मोबाइल मरम्मत और ऑटोमोबाइल मरम्मत आदि जैसे रोजगारोन्मुखी क्षेत्रों में लघु अवधि के कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम की सुविधा प्रदान करता है।
- सभी कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) के अनुरूप हैं और कौशल प्रशिक्षण और उद्यमिता मंत्रालय के कौशल प्रशिक्षण के लिए सामान्य मानदंडों के अनुरूप हैं।
- कौशल विकास उद्यमिता मंत्रालय द्वारा निर्धारित सामान्य लागत मानदंडों के अनुसार शतप्रतिशत पाठ्यक्रम शुल्क का भुगतान और गैर–आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए अनुदान के रूप में प्रतिमाह प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को रु.1,500/– की दर से वृत्तिका (Stipend) दी जाती है।

विस्तृत जानकारी के लिए एनएसएफडीसी की वेबसाइट https://www.nsfdc.nic.in/ पर उपलब्ध है।

पंचतत्व से सब हैं, जन्में ....!!

अग्नि, जल, वायु, धरती और आकाश ये सब पंच तत्व हैं जीवन के !!
पंच तत्व से सब हैं जन्में, सब है एक समान !!
खान–पान, पहनावा, धर्म और कर्म सब मनुज !!
को वातावरण और सहज ज्ञान का परिणाम !!
अग्नि सबको उष्मा देती, धर्म चाहे कोई सा हो !!
जल सबको जीवन देता, जाति चाहे कोई सी हो !!
वायु सबकी सांसे चलाती, वर्ण चाहे कोई सा हो !!
धरती सबका अन्न उपजाती चाहे, धनी हो या निर्धन !!
आकाश के विशाल साये, में हम सब पले पढ़े है !!

iprRo ls lc gS tUeas lc gS ,d leku !
iprRo ls lc gS tUeas lc gS ,d leku !!

M,- xkre dekj eh.kk
उप प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड

पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड

fuxe }kjk tu 2021 ls vä cj 2021 dh vof/k ds nkjku jktHkk"kk ds lc/k esa vk;kftr dh xbZ egRoiw.kZ xfrfof/k;k%

1. çfr;kfxrk dk vk;ktu% दिनांक 25-06-2021 को संस्मरण लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागी को अपने या किसी और व्यक्ति के जीवन में घटित कोई घटना या संस्मरण लिखना था।

2. dk;Z'kkyk dk vk;ktu% दिनांक 09–09–2021 को निगम के कार्मिकों के लिए 'हिंदी का सामर्थ्य एवं राजभाषा की शक्ति' विषय पर माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में डॉ.एस.एन.सिंह, निदेशक (सेवानिवृत्त), केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय ने व्याख्यान दिया।

3. fgUnh ekg dk vk;ktu: दिनांक 14 सितंबर, 2021 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार सभी कार्मिकों को ''राजभाषा शपथ'' भी दिलाई। दिनांक 14 सितंबर, 2021 से 13 अक्तूबर, 2021 तक हिंदी माह का आयोजन किया गया। इस दौरान 05 प्रतियोगिताओं (jktHkk"kk uhfr] dk;kZo;u ,oa lkekU; Kku fgUnh ç'ukÙkjh] नारा/ स्लोगन लेखन, orZuh 'kq/ku] dkO; ikB एवं Jqrys[ku) का आयोजन किया गया।

   हिंदी माह के दौरान दिनांक 21–09–2021 को राष्ट्रीय एकता, विकास एवं प्रशासनिक पारदर्शिता में हिंदी की भूमिका विषय पर माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में श्री के.पी.शर्मा, उप निदेशक (क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने व्याख्यान दिया।

   दिनांक 13.10.2021 को हिंदी माह के समापन एवं आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में निगम में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कवि सम्मेलन में देश के प्रतिष्ठित कवियों प्रो. वसीम बरेलवी, डॉ. सुनील जोगी, श्री विनीत चौहान, डॉ. कीर्ति काले एवं डॉ. प्रवीण शुक्ल को सादर आमंत्रित किया गया था।

4. jktHkk"kk lEesyu dk vk;ktu: निगम में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग में और अधिक वृद्धि करने के प्रयोजन से निगम के उच्चाधिकारियों के लिए जैसलमेर, राजस्थान में 15 अक्तूबर से 17 अक्तूबर 2021 तक राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन के विषय "राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एवं संवैधानिक प्रावधान" एवं "राजभाषा हिन्दी का उद्‌भव एवं विकास" थे। सम्मेलन में व्याख्यानदाता के रूप में श्री करनदान रत्नु, अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, जैसलमेर तथा प्रो. ममता शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी) एसबीके गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, जैसलमेर आमंत्रित थे।

शब्दों के शहर में

उस दिन रविवार था।
कार्यालय की छुट्टी थी।
तो छुट्टी का आनंद लेने
घूमते–घूमते मैं पहुँच गया।
शब्दों के शहर में।
वहाँ मैंने देखा,
बहुत से कवि, कहानीकार, अनुवादक बड़ी ही व्याकुलता के साथ
अपनी रचनाओं को सार्थक अर्थ देने के लिए
शब्दों के आगे–पीछे भाग रहें थे।
यह सब देख,
मेरे अन्दर भी कवि बनने की इच्छा जागी।
और फिर,
मैंने भी हथियार उठाया।
सुबह से लेकर शाम तक तलाशने के बाद
जब शहर में धुंध था,
चारों तरफ निःशब्दता थी।
कवि निराला की संध्या सुन्दरी
अपनी सखी नीरवता के साथ अम्बर पथ से आ रहीं थी।
शब्दों के शहर के सारे शब्द
दिन–भर
शब्द से वाक्य और
वाक्य से कविता की पंक्ती,
बनने के प्रयास में थक चुके थे।
ऐसे विकट समय में,
मैंने अपनी पहली कविता का शीर्षक,
शब्दों के शहर में उद्घोषित किया।
इसके बाद जो हुआ।
बस पूछिए मत
शब्दों के सैलाब ने मुझे घेर लिया
और धमकी देने लगे।
"उन्हें मेरी कविता की पंक्तियो में शामिल होना था।"
परन्तु मैं भी सचेत था,
क्योंकि कविता पहली थी।
शब्दों के शहर में कुछ शब्द मूर्द्ध थे, कुछ दन्त, कुछ ओष्ठ और कुछ नासिका थे।
परन्तु मैं उन परम शब्दों की तलाश में था।
जो मेरी कविता को सार्थक अर्थ दे सकें।
तभी शब्दों के शहर के महामहीम बादशाह
शब्दों में फैली अराजकता, अनुशासनहीनता और भगदड़ को देख
वहां पधारे
मेरे कविता के शीर्षक को देखते ही
गरगराहट भरी भारी स्वर में उन्होंने
अपने विकराल मुख से कहा
"तुम ने प्रयास तो अच्छा किया है।"
परन्तु तुम्हारी शीर्षक पर लिखी गई कविता
किसी ईश्वर के सम्पूर्ण वर्णन जैसा है।
हमारे शब्दों के शहर में इतने शब्द नहीं है।
जो तुम्हारी "माँ" शीर्षक की कविता को सार्थक कर सकें।
.....और इस तरह मैं
हर रविवार
अपनी पहली कविता
"माँ"
को पूरा करने निकल जाता हूँ।
शब्दों के शहर में।
शब्दों के शहर में।

çrhd lko
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एम एस टी सी (उ०क्षे०का०)

गेंद

फलाई ओवर से गाड़ी धीरे धीरे उतर रही थी। गाड़ी मे ज्यादा सवारियां होने के कारण ड्राईवर को गाड़ी सम्भालनी कुछ भारी पड़ रही थी। आदमी एक दूसरे पर चढ़ा जा रहा था। बस में जरा से ब्रेक लगने से सवारियां लगभग एक दूसरे से चिपक कर रह जाती थी। आज बस मे पहले से कुछ ज्यादा भीड़ होने की वजह एक दूसरी स्टाफ बस का रास्ते मे खराब हो जाना था।

भरी बस मे उदय भी एक तरफ अपने शरीर को समेटे बैठा था। दो आदमियों की छोटी–सी सीट पर तीन आदमी किसी तरह फंस कर बैठ ही जाते थे। तिरछा होकर बैठने में उसे ज्यादा तकलीफ हो रही थी। अगर इस सीट को तकलीफ समझकर छोड़ भी देता तो उसको खड़े होकर उससे भी ज्यादा तकलीफ का सामना करना पडेगा।

धीरे–धीरे बाहर शाम का धुन्धलका फैलने लगा था। नवम्बर का महीना चल रहा था। तीन घण्टे के लगातार उबाऊ सफर से उसका शरीर टूट जाता था। ऐसा क्रम पिछले सात आठ साल से चल रहा था। अब तो उसको इस सफर की आदत सी हो गई थी। सुबह शाम वही बस, वही सवारियां और वही रास्ता। छोटी मोटी लड़ाईया अक्सर इस बस में भी लड़ी जाती थी। जिसकी वजह से सफर इतना आसान हो जाता था कि मालूम ही नहीं हो पाता था कि कब बस का आखिरी स्टॉप आ गया है।

उसने घड़ी की तरफ देखा, सवा पांच बजने जा रहे थे। दफतर छोड़े अभी मुश्किल से पन्द्रह मिनट ही हुए थे। वह इस तरह बीच मे फंसा बैठा था कि न तो बाहर देख सकता था और न ही ऊपर ही देख सकता था। भीड़ ज्यादा होने से पहलू भी नही बदल सकता था। पहलू बदलने का साफ मतलब था, पास मे बैठी सवारी को कोटे से ज्यादा सीट आफर करना और आप खाई में गिरना। धीरे–धीरे चुपचाप बैठा हुआ अपने पुराने दिनों को याद करने लगा। चलचित्र की तरह एक–एक दृश्य उसके जहन मे उभरने लगे। इन आठ सालों मे उसके साथ क्या क्या न घटा। सारा परिवार बिखर कर रह गया। कितनी प्यारी बेटी थी शालू। चार साल की। मां–बाप तो अपनी पोती पर जान छिड़कते थे। जहां भी जाना हो, उसका साथ हुए बिना जाना नहीं बनता था।

बर्फ के गोले सी, बड़ी–बड़ी आखों वाली, बालों में रबड़ का छल्ला डाले। मस्त शावक शिशु की तरह हमेशा फुदकती रहती। मेरे जन्म के चौंतीस वर्ष बाद घर में इसी का जन्म हुआ था। उसे ढेर सारा प्यार मिला था मेरे माता पिता की तरफ से। उसके उभरे गालों पर पल भर मे आसूं फिसलने लगते तो दूसरे ही पल आंखों मे शरारत भरकर मुस्कुरा देती। कभी अपने दादा का बैंत छुपा देती तो कभी दादी की चप्पलें। जो भी उसके लपेटे में आता, उसी को घसीट डालती अपने शरारत से। घण्टों टी0 वी0 के सामने न जाने क्या–क्या चीख–चीख कर गाती रहती और उसी के मुताबिक नाच भी करती। बार–बार मना करने पर भी उसका नाचना जारी रहता। जब नांच कर थक जाती तो वही ठंडे फर्श पर बिखर जाती और सो जाती।

एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते हुए जब उसकी नजर आईने पर पड़ती तो आईने के पास जाकर उससे अपने गाल सटाकर न जाने अपनी आखों में घण्टों क्या तलाशती रहती। बार बार पानी के टब में हाथ रगड़–रगड़ कर धोती और दीवार से लगे पर्दे से हाथ सूखा कर अपनी मम्मी के पास दौड़ी जाती और कहती, मम्मी देखों तो मेरे कितने प्यारे–प्यारे हाथ हैं। गीता उसे खींच कर अपनी छाती से चिपका लेती और कहती, तू खराब कहां से है री, तूझे निमोनियां खा जाएगा। पानी में डूबी मत रहा कर।

एक बार कहीं से छोटा–सा बिल्ली का बच्चा उसके हाथ लग गया। मम्मी के डर से उसे फ्रिज में जा छिपाया शायद बेचारे की अभी जिन्दगी बाकी थी क्योकि इसी बीच पड़ोसन ममता बर्फ लेने आ गई। जैसे ही मां ने फ्रिज खोला, फ्रिज में रखा बच्चा उस पर कूद पड़ा। मां ने भी घबरा कर पूरे वेग से चीख मारी। पापा पास के कमरे में अपने किसी पुराने सहपाठी से गप–शप में मशगूल थे। बुढ़िया की चीख सुनते ही वे कमरे की ओर दौड़ पड़े। फ्रिज के पास मां अपना सिर थामे बैठी थी। सामने एक बिल्ली का बच्चा मरणासन में लेटा था। पापा को देखते ही मां चीखी। देखा अपनी शेरनी बेटी का शिकार, पता नहीं कितने दिन का बच्चा है। फ्रिज मे ठूंस कर चली गई। दोनों दादा पोती मीट की दुकान खोल लो, तुम दुकान में बैठे रहना और बेटी शिकार कर लाया करेगी। भला हो ममता का जो बर्फ लेने आ टपकी वरना इसका तो दम निकल गया होता।

दो तीन घण्टे बाद हाथों मे क्रिकेट की बॉल लिए दौड़ती हुई शालू घर में दाखिल हुई। जल्दी से बॉल को पास टंगे झूले में डाल हाथ झाड़ती हुई वापस लौट गई। कुछ समय बाद पार्क में खेल रहे बच्चे झुंड बनाकर घर में घुस आए। शालू की

दादी के पास जाकर बोले, दादी मां, शालू हमारी गेंद लेकर आई है, उसे दिला दो। शालू को दादी ने भी नहीं देखा था, सो कह दिया, आने दे बेटा, जाएगी कहां। बच्चे लौट गए। अभी कुछ ही समय गुजरा था, बच्चे शालू को जकडे हुए ले आए। गेंद के बिना बच्चे खेलते तो क्या, उसी को ढूंढने में लग गए थे। शालू ने साफ मना कर दिया, नही मां मैंने तो देखी भी नही, कैसी थी, सच मां, शालू बार–बार मना करती रही। दादी ने चिमटा गर्म कर उससे शालू के कान काटने की धमकी दी। शालू को पकड़े रखने का हुकूम देकर दादी रसोई की तरफ चली गई।

जब दादी रसोई से वापस आई तो उसके हाथ मे धुंआ छोड़ता हुआ सचमुच मे गर्म चिमटा था। दादी की अंन्तिम चेतावनी पर शालू टूट गई और झूले से गेंद लाकर उनके सामने पटक दी। बच्चों को गेंद मिल गई। अपने घर से इतने सारे बच्चों को निकलते देख गीता आश्चर्य से भर उठी। उसने अन्दर जाकर सासू मां से इसके बारे में पूछा, वह तो पहले ही जली भूनी बैठी थी। वह गीता पर बरस पड़ी बोली, इस चूडैल को साथ लेती जाया कर, नाक में दम कर दिया है। सास बहू में अच्छी बहस हो रही थी। बात मायके पर आकर खत्म हुई। इधर शालू जैसे कुछ हुआ ही न हो, दीवार पर चम्मच से चित्रकारी कर रही थी।

शाम को जैसे ही घर में कदम रखा, मां ने ऊंह करके मुंह दूसरी तरफ फेर लिया। सामने दरवाजे के पीछे से झांकती शालू नजर आई, पापा को आया देख, स्पीड से रसोई की तरफ दौड़ गई। अन्दर कदम रखते ही शालू बोली, पापा, हम मामा के जाएंगे। दादी मां ने मम्मी से खूब झगड़ा किया। मम्मी दोपहर से खूब रो रही है। रसोई से पत्नी की आवाज सुनाई दी जो शालू से पापा को पानी देने की कह रही थी। शालू अपने नन्हें–नन्हें पैंरो से धीरे–धीरे चलती हुई पानी का गिलास ले आई। कुल्ला करके पानी पीया और वापस गिलास को नल के नीचे रख कर मां के पास आया। मां अभी तक नाक फुलाए बैठी थी। छूटते ही बोली, बेटा उदय, शालू ज्यादा शरारती होती जा रही है। सारे दिन की करतूते उसने एक–एक करके उदय को सुना दी कि किस तरह दिन भर परेशान करती है। इसको किसी होस्टल में डाल दे। यहां किसी का सिर फुड़वा देगी किसी दिन, जन्म जली।

रात को पत्नी से सामना हुआ, उसकी रो रोकर आंखें सूज आई थी। बिस्तर पर करवट बदले लेटी रही। अचानक शालू चीखती हुई बिस्तर से उतर भागी। वह बिस्तर से दूर खड़ी होकर बिस्तर की तरफ ईशारा करके चीख रही थी, पापा मछली, पापा मछली, लगातार एक ही रट लगाए जा रही

थी। मैने पास जाकर देखा, एक छोटा सा छिपकली का बच्चा उसके तकिये पर रैंग रहा था। छत से गिर कर वह भागने की कोशिश मे सनील के चिकने तकिये पर फिसल कर रह जाता था। छिपकली के बच्चे को देख कर पत्नी की हँसी छूट गई। सारा बोझल वातावरण शालू की छोटी–सी बात से सुखद बन गया था। उदय ने तकिया पास की खिडकी के ऊपर लाकर झाड़ दिया। छिपकली का बच्चा पिछवाड़े उगी घास मे जा गिरा और तेजी से पलट कर फिर से दीवार पर चढ़ गया।

रविवार का दिन था। धूप खिलकर निकली हुई थी। इन दिनों शालू की बुआ भी आई हुई थी। पूरे परिवार की राय हुई कि क्यों न पिकनिक मनाई जाए। जोर शोर से पिकनिक की तैयारियां होने लगी। पत्नी भी खुश थी कि चलो आज बाहर की दुनियां देखने को मिलेगी। घर की चार दीवारी मे कैद कैदियों जैसी जिन्दगी से उसका जी ऊब आया था। नन्द भाभी ने मिलकर रसोई में काम संभाला। सवेरे से ही नए–नए पकवान बनाए जा रहे थे। उन्हें पैक करके टोकरी में रखा जा रहा था। पापा हाथ में पकड़ी लिस्ट से सामान की जांच कर रहे थे। कोई सामान रह न जाए। शालू के खेल का सामान रख लिया गया था। जूते चमकाए जा रहे थे। कपड़ो पर इस्त्री की जा रही थी। मयूर जग भर कर कार की डिग्गी में रखा जा चुका था। न जाने क्या–क्या सामान ला–लाकर उस कार में ठूँस दिया गया था।

कार धीमे–धीमे सरकने लगी थी। मेन रोड पर आकर उसने अपनी गति पकड़ ली। डेढ़ घण्टे की यात्रा करके वे चुने हुए पिकनिक स्थान पर आ पहुंचे। पापा ने कार से उतर कर चारो तरफ का जायजा लिया और एक साफ सुथरी जगह पर आकर खड़े हो गए। नीचे बिछी हुई हरी–हरी घास साफ सुथरी जगह होने के कारण यह जगह सबको पसन्द आई। पार्क के एक तरफ होने के कारण यह जगह लोगों की नजर से चूक जाती थी। उदय ने कार से सामान निकाल कर रखना शुरू कर दिया था। दीदी मीना भी उसका हाथ बंटा रही थी। शालू कार से उतर कर अपनी दादी के पास खडी थी किसी जापानी गुडियां की तरह।

मौसम खुशनुमा हो चला था। सूरज का ताप धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा था जो इस सर्दी के मौसम मे खुशगवार लग रहा था। कालीन बिछाया जा चुका था। परिवार के सदस्य पार्क की खुली और ताजी हवा का आनन्द लेने के लिए इधर – उधर टहल रहे थे। मीना अपनी भाभी के साथ टोकरियों से सामान निकाल कर बाहर रख रही थी। सारा सामान कार से उतारा जा रहा था। सामान को यथास्थान रखकर वे वहीं बैठ कर आनन्द लेने लगी। वे एक दूसरे को अपने–अपने पति व बच्चों के किस्से सुनाकर समय बीता रही थी। कभी उनका बात करने का स्वर इतना धीमा हो जाता, जैसे बहुत ही गोपनीय बात हो रही हो जो हवा के कानों में भी न लगे। कभी खिलखिलाकर हंस पड़ती और एक–दूसरी को धक्का देकर गिरा देती और फिर रखे हुए सामान को सजाने लगती जिससे दूसरी को प्रतीत हो कि उसकी बात का उस पर कोई असर नहीं हुआ है। ननद भाभी में चुहल बाजी बड़ी देर से चल रही थी।

उदय भी थके हुए कदमों पर चलता हुआ उनके पास लौट आया और आकर कालीन पर पसर गया। उसकी सांसे तेजी से चल रही थी। शालु पापा को अपने पीछे दौड़ा रही थी। आखिर शालू जीत गई। उदय ने लाख कोशिश की कि उसको पकड़ ले मगर चंचल हिरणी की भांति जब वह पकड़ मे आने वाली होती थी तो झटके से नीचे बैठ जाती और तेजी से उठकर विपरित दिशा में छूट पड़ती। इसी पकड़ा–पकड़ी में शालू ने उदय को नचा कर रख दिया था। पापा के चले जाने के बाद उसने पास उगी झाड़ियों की तरफ रूख किया। जिसमें तरह–तरह के फूल खिले हुए थे। कुछ तितलियां भी उन पर मंडरा रही थी। पास जाकर शालू खड़ी हो गई। बड़े प्यार से तितलियों की उड़ान को देखती रही फिर अपने हाथों को भी पंख के समान फैलाकर ऊपर नीचे करके उनकी तरह उड़ने की कोशिश करने लगी। बार–बार ऐसा करने पर जब उसने देखा कि वह वहीं की वहीं खड़ी है तो तितलियों की तरफ मुंह बनाकर उन्हें चिढ़ाकर वापस दौड़ पड़ी।

दूर बैंच पर उसने अपने दादा और दादी को बैठे देखा जो किसी बात पर उसकी दादी को हंसा रहे थे। दादी भी मुहँ में साड़ी का किनारा दिए अपनी हंसी रोकने की कोशिश कर रही थी। शायद अपनी जवानी की कुछ यादें कुछ घटनाएं एक–दूसरे को सुनाई जा रही थी। शालू ने देखा तो उसको शरारत सूझी। चुपके से वह उनके पीछे जा धमकी। दादा जी अब भी अपनी आंखें को बंद किए जवानी की किसी याद को ताजा करने की कोशिश कर रहे थे। कुछ समय बाद उनकी आंखे झटके से खुलती तो उनकी आंखों मे चमक भर आती और अपने उस किस्से को बड़े मजे से बखान कर रहे थे। शालू ने मौका अच्छा समझा और उछल कर बंदर की तरह चिल्लाती हुई बेखबर दादा पर पीछे से झपट पड़ी। एक बारकी उसके दादा जी इस अचानक हमले से घबरा गए। शीघ्र ही न संभल पाते तो पार्क की बैंच से नीचे जा गिरते। दादा जी समझ गए थे कि यह शालू की शरारत है। वे मुस्कुराते हुए बोले, भई, बन्दर नहीं, यह तो बंदरिया की चिल्लाहट है। मेरी शालू बन्दरिया की।

अपने आप को बंदरिया सुनकर शालू के गाल फूल गए थे। उसके चेहरे पर नाराजगी के भाग जाग उठे। चुपचाप वह वहां से चल दी। दादा जी ने दौड़कर शालू को अपनी बाहों में भर लिया। उसे गोद में उठाए हुए वे वापस बैंच पर आ बैठे। वे शालू को हंसाने की कोशिश कर रहे थे। मगर हंसने की बजाय उसकी नीली आँखों में मोती भर आए। दादी ने जब ऐसा देखा तो उन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए शालू को उनसे छीन लिया और अपनी गोद मे लिटा कर आंचल से ढाप लिया। समय काफी हो चुका था। सबके पेट मे चूहे दौड़ रहे थे। इधर मीना और गीता खाने पीने का इन्तजाम कर रही थी।

सभी कालीन पर बैठे बड़े मजे से खाना खा रहे थे। मीना व गीता उन्हें खाना परोस रही थी। अनेक प्रकार के पकवान परोसे गए। सब खाना खा चुके। मीना भी अपनी भाभी के साथ मिलकर खाना खा रही थी। सबके बाद ही उन्होंने खाना खाने का फैसला किया था। खान पान से निबट कर वे हरी घास पर लेट गए। कालीन पर जगह कम होने के कारण उदय पास पड़े बैंच की तरफ बढ़ गया था।

शालू अपनी गेंद उठाए दूर फैले खुले पार्क की तरफ चल दी। वह बार बार गेंद उछाल कर अपने पैर से उसे टकराने की कोशिश करती। गैंद उसके पैर लगने से पहले ही जमीन पर आ गिरती। जब कभी उसको इस खेल में सफलता मिलती तो गेंद के साथ खुद भी जमीन पर गिर पड़ती। उसने गेंद को जमीन पर रखा फिर थोड़ी दूर पर जाकर खड़ी हो गई। कुछ देर तक वह गेंद को ताकती रही फिर तेजी से दौड़ कर उसे ठोकर से उड़ा दिया। वह बार–बार गेंद रखती और ठोकर से उसे उड़ाती रही।

दूर बैंच पर बैठा हुआ उदय यह सब देखता रहा। शालू इस बात से बेखबर खेलती रही। गेंद पर तेज प्रहार से वह दूर तक उठी चली जाती थी। शालू दौड़कर वहां जाती और उसे वहीं से फिर आगे की तरफ धकेल देती। चारों तरफ शाम का धुंधलका छाने लगा था। सब लोग कार के पास आकर जमा होने लगे। सामान उठा कर कार में लादा जाने लगा। कुछ

समय बाद कार उनके घर की तरफ दौड़ रही थी। कार के अन्दर बैठी शालू अब भी कभी कभार गेंद उछाल रही थी। सामने सड़क पर लाल बत्ती हो चुकी थी।

कार रूक चुकी थी। ब्रेक लगने से शालू के हाथ से गेंद फिसल कर दूर सड़क पर जा गिरी थी। शालू ने कार का दरवाजा खोलना चाहा मगर दादी ने उसका हाथ पकड़ लिया। शालू गेंद के लिए बार–बार रोए जा रही थी। कार घर के नजदीक पहुंच कर रूक गई। कार से सामान उतार कर अन्दर ले जाया जाने लगा। शालू का बुरा हाल था। घर के सामने बिछी सड़क की ओर मुंह किए वह रोए जा रही थी। न जाने क्या सोच कर शालू उस फैली सड़क पर वापस दौड़ पड़ी। मीना के शोर मचाने पर उदय और शालू के दादा जो अन्दर सामान रखने गए थे। घबराए हुए बाहर आए। मीना ने शालू की तरफ इशारा किया जो सड़क पर वापस बेतहाशा दौडी जा रही थी। उसी लाल बत्ती की तरफ, जहां उसका गेंद गिर गया था। उदय नंगे पैर उसके पीछे दौड़ पड़ा। घर के अन्य सदस्य भी उसी दिशा में भागे। चौंक से पहले जहां सडक आकर बड़ी सड़क से आ मिलती थी, कुछ पोल्ट्री फार्म बन गए थे। उस सड़क का इस्तेमाल उसी ओर आने जाने वाले वाहन ही करते थे।

शालू थक कर सड़क पर बैठ जाती और वह फिर उठकर दौड़ पडती जब उसकी नजर पीछे की तरफ उठती तो उसकी गति में तेजी आ जाती। जैसे ही शालू मोड़ के नजदीक पहुँची अक्समात् मोड़ से एक मुर्गी अण्डा वैन मोड़ पर तेजी से घूमी। खाली सड़क होने के कारण फार्म से सडक का रास्ता बड़ी तेज गति से तय किया जाता था। शालू सड़क पर बैठ चूकी थी। जब तक ड्राईवर वैन को सम्भाल पाता, वैन उस नन्ही सी शालू को कुचलती निकल गई। शालू की हृद्वय विदारक मार्मिक चीख वातावरण मे फैल गई। उदय दौड़ता हुआ रूक गया और पूरी शक्ति लगाकर चीखा, शा.........लू.........

अचानक चीख की आवाज से ड्राईवर ने तेज गति से चल रही बस में ब्रेक लगा दिए। सारी सवारियां एक दूसरे पर गिर पड़ी। बस मे बैठा उदय अपनी सीट से खड़ा होकर कांप रहा था उसका सारा शरीर पसीने से भीग चुका था। सारी सवारियां उसकी तरफ अजीबोगरीब तरीके से देख रही थी। लोगों के थपथपाने से उदय को आभास हुआ कि वह तो बस में बैठा घर जा रहा है। उसने जेब से रूमाल निकाल कर पसीना पौछा और अपनी उखड़ी सांसों को संयत करता हुआ फिर अपनी सीट पर बैठ गया। बस में सभी सवारियां हैरान थी कि न जाने आगे क्या हुआ है। ड्राईवर की तरफ उदय ने हाथ से अपने सिर की तरफ इशारा किया और गाड़ी चलने को कहा। गाडी पुनः अपने गन्तव्य स्थान की ओर दौड़ने लगी थी।

l[kohj dekj Hkkj}kt
निजी सचिव

सब ठीक है

जब हमने पूछा किसी से क्या हाल है ?
बोल पड़े सब ठीक है, थोड़ा सा बुखार है,
नजला जुकाम है, वैसे सब ठीक है।

बीवी बीमार है, माताजी बेजार है,
पिताजी को बी पी है, खांसी ने ली जान है,
बच्चा चलते–चलते गिर गया,
थोड़ा सा खून बह गया,
बैठा है बिस्तर पर, नहीं शरीर में जान है,
वैसे सब ठीक है, मालिक मेहरबान है।

घर में मंदी है, पैसे की तंगी है।
सीलिंग का दंगा है, मार्केट भी मंदा है।
दुकान हुई बंद है, अब तो हम तंग है।
वैसे सब ठीक है, पर थोड़े से परेशान हैं।

हँसना नहीं सस्ता है, उसका भी तो पैसा है।
इसी पैसे के कारण, ही तो खो गई मुस्कान है।
वैसे सब ठीक है, बस हम ही परेशान हैं।।

t;Jh lcukuh
प्रबन्धक
मेकांन लिमिटेड

स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद देश की भाषा हिंदी की स्थिति।

इस बात को प्रत्येक देशवासी अच्छी तरह से जानता है कि हमारे संविधान निर्माता विद्वानों, विचारकों, जो अपने– अपने कार्यक्षेत्र में विशेषज्ञ थे तथा इनमें भारत के सभी प्रदेशों/क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व था, ने देश के अधिकांश भूभाग में बोली तथा समझी जाने वाली भाषा हिंदी को हमारे संविधान में देश/भारत सरकार के स्तर पर सरकारी कामकाज की भाषा अर्थात राजभाषा का दर्जा दिया है तथा राज्य में वहां बोली जाने वाली मातृभाषा अथवा हिंदी अथवा जैसा राज्य विधानमंडल निश्चित करें वह भाषा राज्य सरकारों के कामकाज की भाषा बनाने का प्रावधान किया है।

पत्रिका का यह मंच देश के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का है। देश के सरकारी विभाग/उपक्रम/संस्थान देश की अत्यंत महत्वपूर्ण संस्थाएं हैं, जिन पर सर्व साधारण जन के हित में सरकार और देश की नीतियों/कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने, राष्ट्रीय महत्व के उपक्रमों, सेवाओं को संचालित करने का बहुत बड़ा दायित्व है। सरकारी कार्यालयों में शुरू से ही अंग्रेजी में काम करने का वातावरण रहा है तथा देश की भाषा हिंदी में काम करने का संविधान और संबंधित प्रावधानों में जो आग्रह है और जोर दिया जाता है कि देश के अधिकारी/कर्मचारी देश की भाषा में कार्य करें, उसे ऐसा समझ लिया जाता है कि उसके पीछे कोई अनिवार्यता नहीं है और जैसे करना, न करना हमारे विवेक पर छोड़ दिया गया हो। यह सोच भी होती है कि मैं नहीं कर रहा या कर रही लेकिन दूसरे कर रहे हैं तो मेरे न करने से इतना क्या फर्क पड़ेगा लेकिन अधिकांश दूसरे लोग भी यही सोचते हैं। परिणाम होता है कि सरकारी कार्यालयों का अधिकतर कार्य अंग्रेजी में ही परिलक्षित (रिफ्लेक्ट) होता है।

माननीय राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री जी, पूरा मंत्रिमंडल देश–विदेश में हिंदी में बात करते हैं, अपना सरकारी कार्य करते हैं। एक पूरा राजभाषा विभाग देश में हिंदी को कार्यान्वित करवाने के लिए वर्षों से कार्यरत है, प्रत्येक विभाग/कार्यालय में सहायता/मार्गदर्शन के लिए राजभाषा हिंदी का विभाग होने और सारे प्रयासों के बावजूद भी सरकारी कार्यालय नियमों का उल्लंघन करते हुए अनिवार्यतः द्विभाषी तैयार किए जाने योग्य सूचनाओं आदि तक को भी केवल अंग्रेजी में जारी कर कर्तव्य पूर्ण हुआ मान लेते हैं।

विविधता में आदर्श एकता के हमारे देश में सैकड़ों भाषाएं हैं। संविधान ने प्रादेशिक मातृभाषाओं के स्तर पर प्रादेशिक भाषा तथा देश/भारत सरकार के स्तर पर हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा के तौर पर स्थापित किया है और यह कार्य स्वेच्छा, सद्भावना, प्रोत्साहन तथा तालमेल से करने पर बल दिया है। हिंदी से इतर प्रादेशिक भाषाओं से संपर्क के लिए जहाँ हिंदी बोलने, समझने, पढने में कठिनाई हो, वहाँ द्विभाषी (हिंदी–अंग्रेजी) प्रावधानों की व्यवस्था है। इसीलिए कुछ सरकारी कागजात जैसे सामान्य आदेश (अधि./कर्म. के नियुक्ति, स्थानांतरण आदेशों सहित सभी आदेश), सर्कुलर, सभी रिपोर्ट, विज्ञापन, अनुबंध, करार, टेंडर, प्रेस सूचनाएं, संसद के समक्ष रखे जाने वाले दस्तावेज आदि, इसी तरह नागरिकों, ग्राहकों के लिए कोई जानकारी, फॉर्म, सेवाओं/उत्पादों से संबंधित पुस्तिकाएं, ब्रॉशर आदि, साइनबोर्ड, नाम पट्टिका, मोहरें, पोस्टर, बैनर और एसएमएस संदेश, सामाजिक मीडिया इत्यादि ऑनलाइन कार्य, जो एक से अधिक लोगों के लिए हो, हिंदी–अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किया जाना अनिवार्य है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियां गूगल, फेसबुक आदि तथा कंप्यूटर, मोबाइल आदि सहित उत्पाद/सामान बनाने वाली कंपनियों की वेबसाइट, बुकलेट आदि पर सारी सूचनाएं अंग्रेजी–हिंदी में मिलेंगी। उन्होंने हिंदी के सॉफ्ट्वेयर, की– बोर्ड पहले बनाए हैं लेकिन सरकार के विभाग/उपक्रम/संस्थान देश की भाषा का ध्यान न रखते हुए आज भी अधिकांश कार्य अंग्रेजी में करते हैं।

सरकारी क्षेत्र तथा पूरे देश के स्तर पर यह मानसिकता की बात ही है कि देश के बच्चे– विद्यार्थी, युवा, वृद्ध अंग्रेजी के प्रयोग में श्रेष्ठता का भाव तथा हिंदी के प्रयोग में हीनता समझते हैं और स्थिति यहाँ तक हो गई है कि जिन्हें अंग्रेजी वर्णमाला यानि ए,बी,सी,डी आ जाती है, ऐसे सभी लोग हाजिरी रजिस्टरों में या कहीं भी अपना हस्ताक्षर करना, किसी को पर्ची पर अपना नाम, पता, टेलीफोन न0 लिखकर देना हो, किसी कार्यालय/आवासीय सोसायटी के गेट पर रखे रजिस्टर में अपना नाम, पता लिखना हो, बाजार से सामान लाने के लिए पर्चा बनाना हो, जैसे सभी कामों तक के लिए भी उनकी कलम से केवल अंग्रेजी के ही अक्षर निकलते हैं। निजी क्षेत्र में भी व्यक्तियों, व्यापार, व्यवसाय, कंपनियों, संस्थानों पर भी अंग्रेजी हावी है। निजी क्षेत्र भी सरकारी क्षेत्र से प्रेरणा लेता है। यद्यपि यहाँ मुख्य रूप से सरकारी कार्यालयों तथा अधिकारियों/कर्मचारियों की चर्चा की जा रही है लेकिन देश के प्रति निजी

क्षेत्र तथा एक नागरिक के रूप में प्रत्येक व्यक्ति का भी राष्ट्रीय कर्तव्य है वे अपने व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक व्यवहार में देश की भाषा का प्रयोग करें तथा जहाँ आवश्यकता हो, द्विभाषी रूप का प्रयोग करें।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा कुछ हिंदी समाचार पत्र भी तेजी से हिंगलिश (ऐसी हिंदी जिसमें हिंदी के शब्द कम और अंग्रेजी के अधिक हों) लोगों को परोस रहे हैं। अब पत्रकारिता की हिंदी यह हो गई है: एक उदाहरण– दिल्ली बिग ब्रेकिंग ....बडी घोषणा; टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट क्वालिफाइंग सर्टीफिकेट का वैलिडिटी पीरियड सात साल से बढाकर लाइफ टाइम। कुछ लोगों का तर्क होता है कि लोग इसी भाषा को समझते हैं लेकिन यह केवल महानगरों या कुछ बड़े शहरों के अंदर ही कुछ तथाकथित वर्ग में हो सकता है, देश की अधिकांश जनता को यह समझ में नहीं आता। यह एक तरह से तथाकथित पढ़े–लिखे लोगों द्वारा जबर्दस्ती अपना अंग्रेजी ज्ञान अन्य लोगों के सामने प्रदर्शित करना हुआ। निजी टीवी चैनलों, कुछ एक समाचार पत्रों के दिल्ली से प्रसारित समाचारों की यही भाषा गांव–गांव, शहर–शहर, कस्बे–कस्बे तक पहुंचती है और हम पूरे देश को ऐसी भाषा समझने के लिए मजबूर करते हैं। ठीक है कि भाषा बहता पानी होता है लेकिन हम जबर्दस्ती हिंदी में बेहिसाब अंग्रेजी क्यों डालते हैं जबकि अंग्रेजी में हम बिल्कुल भी हिंदी नहीं डालते। हिंदी को हिंदी ही रहने दीजिए। आज के विकसित सूचना–संचार युग में इतने साधन हैं कि हम भाषा का आदर्श मानक रूप बनाए रख सकते हैं। सार्वजनिक रूप से ऐसे शब्द बोलें और लिखें जो सबकी समझ में आ जाएं। कठिन हिंदी शब्दों की जगह भी आवश्यकता अनुसार सरल शब्दों का प्रयोग किया जाए।

पूरा काम हिंदी में होने की बात क्या की जाए, देश की राजधानी, जिसे पूरे देश, सभी प्रदेशों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए में ही सड़कों पर सरकारी एजेंसियों द्वारा करवाए जा रहे निर्माण कार्य के बोर्ड, कार्यालयों के साइनबोर्ड जैसी छोटी लेकिन बहुत महत्वपूर्ण बात और सूचनाएं कई जगह केवल अंग्रेजी में देखी जाती हैं। बसों के आगे लगे इलेक्ट्रॉनिक बोर्ड, शिक्षा संस्थानों जैसे स्कूल, कालेज आदि के साइनबोर्ड केवल अंग्रेजी में पाए जाते हैं। जब संबंधित विभाग का राजभाषा अनुभाग इस बात को उठाते हैं तब उन्हें द्विभाषी बनाया जाता है। कार्यालय, नागरिक तथा संस्थान ऐसी सांकेतिक छोटे–छोटे प्रतीकों तक का ध्यान नहीं रखते, बडे कामों की बात तो इसके बाद ही आती है। इसमें राष्ट्रीय कर्तव्य भावना की जागरूकता प्रत्येक स्तर पर पैदा की जानी जरूरी है।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम उपभोक्ताओं तक अपनी बात उनकी भाषा में रखें तो उन्हें बहुत अधिक व्यावसायिक लाभ है। कार्यालयों में प्रत्येक कंप्यूटर पर हिंदी यूनिकोड गूगल से खोजकर, राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.nic.in या माइक्रोसॉफ्ट की वेबसाइट www.bhashaindia.com से बहुत ही आसानी से डाउनलोड हो जाता है। उसके बाद फोनेटिक तरीके से अंग्रेजी रोमन में टाइप (जैसे टेलीफोन के लिए Teleefon) करके हिंदी बनती चली जाती है। कोई कठिनाई होने पर आईटी अनुभाग से सहायता ली जा सकती है। इससे फाइलों सहित ई–ऑफिस, इंटरनेट, इंटरानेट, वेबसाइट, ई–मेल, तात्कालिक सूचना के लिए कोई पोस्टर आदि लगाना, ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रत्येक गतिविधि में एक–एक अधि./कर्म. के स्तर पर दोनों भाषाओं में कार्य हो सकेगा। यह बहाना नहीं होना चाहिए कि हमारे कंप्यूटर पर हिंदी नहीं है या हम हिंदी नहीं बना सकते और हर छोटी–बड़ी बात के लिए हिंदी अनुभाग के पास कब जाएं।

यहां तो बात शुरुआती स्तर यानी साइन बोर्ड और नाम पट्टिका हिंदी में बनवाकर लगाने, अपने हस्ताक्षर हिंदी में करने की हो रही है लेकिन भाषा को उस स्तर तक ले जाने का लक्ष्य निहित कि अलग–अलग कार्य क्षेत्रों के अधिकारी/तकनीकी कार्मिक अपने कार्य क्षेत्र के तकनीकी आदि विषयों पर हिंदी में पुस्तकें तथा लेख लिखें या अंग्रेजी में भी लिखें तो उनका हिंदी में अनुवाद भी अवश्य करें/करवाएं और ज्ञान की प्रत्येक विधा में बहुत अधिक साहित्य आदि देश की भाषा में रचा जाए ताकि देश की भाषा में तकनीकी तथा विशिष्ट ज्ञान के विषय जनसाधारण तथा विद्यार्थियों के लिए अधिक उपलब्ध हों। राजभाषा विभाग इस कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार भी देता है।

देश की एकता, अखंडता तथा देश के स्तर पर संपर्क भाषा, देश के आम जन को सशक्त करना, देश के राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्रीय चिह्न अशोक चक्र आदि गौरव प्रतीकों के समान ही देश की भाषा भी देश की वाणी का प्रतीक है जिसमें देश बोलता है तथा वैश्विक स्तर पर वह देश की पहचान है। सरकारी विभाग, कार्यालय, उपक्रम अपने इस महान दायित्व को समझें तथा अपने विभागों/संस्थानों/उपक्रमों में 100% अनुपालन सुनिश्चित करवाएं।

y{eh çlkn] mi çc- ¼jk-Hkk-½] fuxfer dk;kZy;
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1)
दिल्ली सचिवालय

v/;{k	lnL;	ekxZn'kZd	lnL;&lfpo
Jh lathO dekj अध्यक्ष, भाविप्रा	Jh ,d ikBd सदस्य (मानव संसाधन), भाविप्रा	Jh lquhy nÙk कार्यपालक निदेशक (प्रशासन), भाविप्रा	lathO dekj lgk;d egkçca/kd ¼jktHkk"kk½

नराकास (उपक्रम-1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों का विवरण

Jh xqjthr flag f<Yyk
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
fgUnLrku çhQc fyfeVM
hplcmd@gmail.com

Jh tsih JhokLro
इकाई प्रमुख–उद्योग क्षेत्र
Hkkjr goh byfDVªdYl fyfeVsM

Jh oh-dY;k.k jkek
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Hkkjrh; dUVsuj fuxe fyfeVsM

Jh xqjnhi flag
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
,uVhihlh fyfeVsM
cmd@ntpc.co.in

M, cychj ryokj
कार्यपालक निदेशक (मा सं एवं सीसी)
Hkkjr goh byfDVªdYl fyfeVsM
btalwar@bhel.in

Jh v#.k dqekj JhokLro
प्रबंध निदेशक
dUæh; HkaMkj.k fuxe
mdcwc@cewacoe.nic.in

Jh jfoUæ flag f<Yyk
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
ikoj Qkbusal dkiksZjs'ku fyfeVsM
cmd@pfcindia.com

Jh Tkh deyk o/kZu jko] vkbZ,,l
प्रबंध निदेशक
Hkkjr i;ZVu fodkl fuxe fyfeVsM ¼vkbZVhMhlh½
cmd@itdc.co.in

Jh iquhr pkoyk
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
jsyVsy d,jiksjs'ku v,Q bafM;k

Jh Mh- d- dkejk
क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक, उत्तरी क्षेत्र
Hkkjrh; foekuiÙku çkf/kdj.k

Jh Mh-,l- jk.kk
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक
bathfu;fjax çkstsDV~l ¼bf.M;k½ fyfeVsM
cmd@engineeringprojects.com

Jh lat; xxZ
क्षेत्रीय प्रबन्धक(उत्तर)
jk"Vªh; bLikr fuxe fyfeVsM
sanjaygarg@vizagsteel.com

Jh tlor dqekj jktkjk
सहायक महाप्रबंधक
fgUnqLrku d‚ij fyfeVsM
jaswant_kr@hindustancopper.com

lqJh ofrZdk 'kDyk
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

Jh ,l ds nso oeZu
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
jk"Vªh; vYila[;d fodkl ,oa foÙk fuxe ¼,u,eMh,Q lh½

Jh lat; eYgks=k] vkbZ,-,l-
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, आरईसी लिमिटेड
vkjbZlh fyfeVsM ¼Hkkjr ljdkj dk m|e½
cmd@recl.in

Jh jtuh'k dqekj tSuo
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक
u'kuy 'kSM;wYM dkLV~l Qkbusal ,.M MoyiesaV d‚iksZjs'ku
cmd.nsfdc@gmail.com

M‚- ç|qEu dqekj ç/kku
समूह महाप्रबंधक (निगम कार्य व विपणन)
uky dks] mÙkj {ks=h; dk;kZy;] fnYyh
pradyumna.pradhan@nalcoindia.co.in

Jh jkts'k egrkuh
मुख्य महाप्रबंधक–रिटेल
fgUnqLrku isVªksfy;e d‚iksZjs'ku fyfeVsM
rmehtani@hpcl.in

Jh dsa lh lkgw
महाप्रबंधक
jk"Vªh; bLikr fuxe fyfeVsM] lEidZ dk;kZy;
kcsahoo@vizagsteel.com

Jh eukst tSu
अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक
xsy ¼bf.M;k½ fyfeVsM
manojjain@gail.co.in

Jh v'kksd dqekj xqIrk
बामर लारी एंड कंपनी लिमिटेड
सहा उपाध्यक्ष (मानव संसाधन)

Jh d- d- flag
कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)
LVhy vFkkWfjVh v‚Q bf.M;k fyfeVsM

Jh 'kkUrkuq j‚;
कार्यपालक निदेशक
ch-b-,e ,y fyfeVsM

Jh lat; pïk
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
एमएमटीसी

Jh çnhi dekj nkl
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
इरेडा

Jh ih d iJokj
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
एमटीएनएल

Jh fot; çdk'k
कार्यकारी निदेशक – प्रधान समन्वय, ओएनजीसी

Jh ;q d fo'odek
मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी
मेकॉन लिमिटेड

Jh vt; dekj of'k"B
कार्यकारी निदेशक एवं प्रभारी
ईपीआई उत्तरी क्षेत्र

Jh vk'krk"k xIrk
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक
नेशनल टेक्सटाइल कारपोरेशन लिमिटेड

Jh vfHkthr dekj
मुख्य महाप्रबंधक (विक्रय) एवं क्षेत्रीय प्रबंधक
केन्द्रीय विपणन संगठन सेल, उत्तरी क्षेत्र

Jherh fot;y{eh dkf'kd
कार्यपालक निदेशक
रेलटेल कार्पोरेशन ऑफ इंडिया

Jh ch ,e çlkn
क्षेत्रीय प्रबन्धक, एम एस टी सी

Jh ;kxs'k feJk
इरकॉन
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

lJh jtuh glhtk
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
vkbZ vkj lh Vh lh

Jh ,e uYykjlu
मुख्य महाप्रबंधक (प्रभारी)
mÙkjh {ks=h; Hkkj ç"k.k dæ

Jh ,e , [kku
कार्यपालक निदेशक
Hkkjr iVªkfy;e d,ikjs'ku ykfeVM

Jh lnhi lt; t,u
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)
fjQkbujht e[;ky;
bfM;u v,;y dkikjs'ku fyfeVM

नराकास(उपक्रम-1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों का विवरण

Jh je'k pn
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
fgUnLrku iVªksfy;e d,jiksjs'ku fyfeVsM&fjVsy dk;kZy;
8वीं मंजिल, नार्थ टावर, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर,, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092

lqJh dqeqn çlkn
राजभाषा अधिकारी
fgUnLrku çhQSc fyfeVsM
जंगपुरा (हाउसिंग फैक्टरी), नई दिल्ली
kumudprasadhpl@gmail.com

Jh egsUæ flag
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
,e-,e-Vh-lh- fyfeVsM
कोर–1, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली–1110003
mahinders@mmtclimited.com

Jh —ikjke ygdjk
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
Hkkjr gsoh byfDVªdYl fyfeVsM
उद्योग क्षेत्र, एकीकृत कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली,
krl@bhel.in

lqJh v#.kk xkikky—".ku
कार्यपालक निदेशक (निगमित कार्य)
,vj bafM;k fyfeVsM
एअर इंडिया लिमिटेड,एयरलाइन्स हाउस,113, गुरूद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली–110001
edca@airindia.in

lqJh ehuk jkuh uk;d
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
LVhy vFk‚fjVh v,Q bafM;k fyfeVsM mÙkjh {ks=
केन्द्रीय विपणन संगठन, उत्तरी क्षेत्र, स्कोप मीनार, मोर–2, 17वां तल, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092
meenarani@sail-steel.com

Jh lrks"k dqekj >k
मुख्य राजभाषा अधिकारी
Hkkjrh; dUVsuj fuxe fyfeVsM
कॉनकॉर भवन, सी–3, मथुरा रोड, अपोलो अस्पताल के सामने, नई दिल्ली
vinodrai@concorindia.com

Jherh jkds'k jkuh t;ar
राजभाषा अधिकारी
v,;y ,.M uspqjy xSl dkjiksjs'ku fyfeVsM
दीनदयाल ऊर्जा भवन, 5, नेल्सन मंडेला मार्ग, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110 070
rani_rakesh@ongc.co.in

Mk pUæd yk feJ
अपर महाप्रबंधक (मा0सं0 एवं राजभाषा)
Hkkjr gsoh byfDVªdYl fyfeVsM
बीएचईएल हाउस, कार्पोरेट कार्यालय, सीरी फोर्ट, नई दिल्ली
cmishra@bhel.in

lqJh laxhrk JhokLro
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)
bafM;u fjU;w,cy ,uthZ MoyiesaV ,tsalh fyfeVsM ¼bjMk½
भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा)
तीसरा तल, अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली – 110066, sangeeta@ireda.in

Jh lR;thr iaMk
अपर महाप्रबंधक (मा0सं0–राजभाषा)
,uVhihlh fyfeVsM
अभियांत्रिकी कार्यालय परिसर, प्लॉट नंबर–ए–8ए, सेक्टर–24, नोएडा–201301
satyajitpanda@ntpc.co.in

Jherh uerk ctkt
प्रबंधक (राजभाषा)
dUæh; HkMkj.k fuxe
4/1,सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, हौजखास, नई दिल्ली–110016
rajbhasha.cwc@cewacor.nic.in

Mk txnh'k çlkn
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
fn LVsV VsªfMax dkjiksjs'ku vkWQ bafM;k fyfeVsM
जवाहर व्यापार भवन, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली–110001
drjagdishpd@stclimited.co.in
rajbhasha.co@stclimited.co.in

Jh lq;Hkku xkSre
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)
Hkkjrh; foekuiÙku çkf/kdj.k
प्रचालन कार्यालय परिसर, रंगपुरी, गुड़गांव रोड,
नई दिल्ली–110037
hindinr@aai.aero, red_nr@aai.aero

Mk- jk?kosaæ dqekj 'kekZ
उप प्रबंधक (राजभाषा एवं प्रशासन)
ckej ykjh ,.M daiuh fyfeVsM
क्कोप कॉम्प्लेक्स, चौथी मंजिल, कोर–8,
7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003
sharma.ra@balmerlawrie.com

Jherh t;Jh lcukuh
वरि0 राजभाषा अधिकारी
esdu fyfeVsM
स्कोप मीनार, नार्थ टावर, 13वां एवं 15वां तल,
लक्ष्मी नगर व्यावसायिक केन्द्र, दिल्ली–110092
jsabhnani@meconlimited.co.in, gvwalimbe@mecon.co.in

lqJh vpZuk egjk
हिंदी अधिकारी
u'kuy 'kM;YM dkLVl Qkbusal ,.M MoyiesaV dkjiksjs'ku
स्कोप मीनार, 14वीं मंजिल, कोर–1 व 2, नार्थ टावर,
लक्ष्मी नगर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092
nsfdol1989@gmail.com

Mk- th tokgj
मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा)
ikoj Qkbusal dkiksjs'ku fyfeVsM
ऊर्जानिधि 1, बाराखंभा लेन, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001
g_jawahar@pfcindia.com

Jh fjrs'k
वरिष्ठ प्रबन्धक (मा सं)
lsaVªy jsy lkbM osjgkml daiuh fyfeVsM
भूतल, प्रगति मैदान, मैट्रो स्टेशन बिल्डिंग,
नई दिल्ली–110001
ritesh@crwc.in

Jh ,p ,l d';i
संयुक्त महाप्रबंधक (मासं/प्रशा) एवं सर्वकार्य प्रभारी राजभाषा
iou gal fyfeVsM
सी–14, सेक्टर–1, नोएडा
hs.kashyap@pawanhans.co.in

Jh 0;kses'k 'kekZ
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
vkjbZlh fyfeVsM
कोर–4, स्कोप कांप्लेक्स, 7 लोधी रोड, नई दिल्ली, 110003
vyomkesh21@gmail.com, vyomkesh@recl.nic.in

Jh ih ukxsaæ
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
xsy bafM;k fyfeVsM
16, भीकाजी कामा प्लेस, आर.के. पुरम, नई दिल्ली
nagendra@gail.co.in

M,euh"k 'kdjjko xobZ
प्रबंधक ग्रेड–II राजभाषा प्रभाग
bathfu;fjax çkstsDVl ¼bafM;k½ fyfeVsM
स्कोप कॉम्प्लेक्स, कोर–3, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003
manish.gawai@epi.gov.in

Jh bnj jkt
उप–प्रबंधक(प्रशासन)
fgUnqLrku dkij fyfeVsM
स्कोप मीनार, दूसरा तल, कोर–2, नार्थ टावर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर,
लक्ष्मी नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092
inder_r@hindustancopper.com

Jh jes'k pUæ 'kqDy
प्रबंधक
ch-b-,e ,y fyfeVsM

Jh Mh- ih- Mxoky
उप महाप्रबंधक (कार्मिक–राजभाषा)
LVhy vFkkfjVh vkWQ bafM;k fyfeVsM

Jh ,Q ,p flíhdh
प्रबन्धक ग्रेड–2 एवं राभा नोडल अधिकारी
इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स (इंडिया) लिमिटेड, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय

Jh l|uhy d|ekj fl|g
कार्यपालक निदेशक/प्रशासन एवं सुरक्षा
तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी
j|yVsy d,jik|js'ku v,Q bf.M;k
प्लेट–ए, द्वितीय ब्लॉक, छठा तल, एन बी सी सी ऑफिस कॉम्प्लेक्स, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली – 110023
sksrail@railtelindia.com

Jh jkeLo:i oek
राजभाषा अधिकारी
u'kuy VsDlVkby d,jik|js'ku fyfeVsM
कोर–4, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003

Jh miUnz feJk
उप महांप्रबंधक (विपणन)
uky dks fnYyh
upendra.mishra@nalcoindia.co.in

Jh vfHk"kd d|ekj
प्रबंधक
jk"Vh; bLikr fuxe fyfeVsM
abhishekicvl@gmail.com

Jh ih;w"k frokjh
निदेशक (सीएंडएम)
भारत पर्यटन विकास निगम लि.

Jh y{eh çlkn
उप प्रबंधक (राजभाषा)
एमटीएनएल

Jh çrhd lko
सहायक प्रबन्धक
एम.एस.टी.सी. लिमिटेड

Jh lfpnj d|ekj
उ म प्र (कार्मिक एवं राजभाषा)
रेलटेल कार्पोरेशन ऑफ इंडिया

Jh uxUæ d|ekj feJk
सहायक महा प्रबन्धक
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

Jh fot; d|ekj 'kek
मुख्य राजभाषा अधिकारी
bf.M;u v,;y d,jik|js'ku fyfeVsM
स्कोप कॉम्प्लेक्स–2, 7, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली
sharmavk2@indianoil.in, shuklavk@indianoil.in

Jh lkfe= ,e >k
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
jk"Vh; vYila[;d fodkl ,oa foÙk fuxe¼,u,eMh,Q1h½
प्रथम तल, कोर 1, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, दिल्ली–110092
somitram@gmail.com, puniamanoj0810@gmail.com

M, vkyksd cMksy
कार्यपालक निदेशक
Hkkjrh; dUVsuj fuxe fyfeVsM

Jh uhjt xIrk
मुख्य राजभाषा अधिकारी
bjd,u bUVju'kuy fyfeVsM

Jherh vuq dkf'kd
राजभाषा अधिकारी
ch,l,u,y

Jh vt; fQfyIi
राजभाषा नोडल अधिकारी
mÙkjh {ks=h; Hkkjr ç"k.k dæ

Jh jkt'k dekj
समूह महाप्रबन्धक
vkbvkjlhVhlh

Jh ch feJk
मुख्य महा प्रबन्धक
Hkkjr iVkfy;e d,ikj'ku ykfeVM

Jh t jktdekj
उपाध्यक्ष तकनीकी ईवीएम राजभाषा अधिकारी
Hkkjrh; gkVy fuxe

Jh nhid [kYyj
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
Hkkjrh; gkVy fuxe
¼dk;ky; çe[k½

नराकास(उपक्रम-1) दिल्ली के सदस्य कार्यालयों द्वारा नराकास के तत्वावधान में वर्ष 2021 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

1- fuca/k ifr;kfxrk¼14-10-2021½ vk;kstd dk;ky;% Hkkjrh; foekuiÙku ikf/kdj.k] mÙkjh {k=

Ø- l-	fotrk dk uke	inuke	dk;ky;	LFkku	iqjLdkj
1.	अभिषेक कुमार गुप्ता	प्रबन्धक(परियोजना)	केंद्रीय भंडारण निगम	प्रथम	3000/–
2.	भानवी महावर	सहायक प्रबन्धक(तकनीकी)	नेशनल टेक्सटाइल कॉर्पोरेशन लिमिटेड	द्वितीय	2500/–
3.	हिमांशु सोनी	उप–प्रबन्धक(कराधान)	पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन	तृतीय	2000/–

2- jktHkk"kk i'uep ¼06-12-2021½ vk;kstd dk;ky; % ,u ,Q Mh lh] fnYyh dk;ky;

Ø- l-	fotrk dk uke	inuke	dk;ky;	LFkku	iqjLdkj
1.	सौरभ ओझा	वरि. अधि (मार्केटिंग–ईटीआरएस)	गेल(इंडिया) लिमिटेड	प्रथम	3000/–
2.	रितेश यादव	वरि उप महाप्रबंधक	भारत हेवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड	द्वितीय	2500/–
3.	दिनेश कुमार शर्मा	उप अभियंता (मा. सां–प्रशासन)	बीएचईएल लोदी रोड	तृतीय	2000/–
4.	मयंक शर्मा	मुख्य प्रबन्धक	पीएफसी	प्रोत्साहन–1	1200/–
5.	पंकज सिंह	प्रबन्धक(कार्मिक विभाग)	केंद्रीय वेयरहाउसिंग कार्पोरेशन	प्रोत्साहन–2	1200/–
6.	प्रवीन कुमार झा	सहायक महाप्रबन्धक	भारत संचार निगम लिमिटेड, निगम कार्यालय	प्रोत्साहन–3	1200/–

3- fp= vfHk0;fDr¼14-12-2021½ vk;kstd dk;ky; % bjdkWu

Ø- l-	fotrk dk uke	inuke	dk;ky;	LFkku	iqjLdkj
1.	सुश्री वैशाली कंचन	–	बीईएचएल	प्रथम	3000/–
2.	श्री संतोष मण्डल	–	केंद्रीय भंडारण निगम	द्वितीय	2500/–
3.	सुश्री शालिनी सिंह	–	मेकॉन लिमिटेड	तृतीय	2000/–
4.	श्री कमल किशोर	–	रेलटेल कॉर्पोरेशन कारपोरेट कार्यालय	प्रोत्साहन–1	1200/–
5.	श्री दीपक बत्रा	–	दि ओरिएंटल इंश्योरेंश कंपनी लिमिटेड	प्रोत्साहन–2	1200/–

4- lLej.k ifr;kfxrk ¼14-12-2021½ vk;kstd dk;ky; % bihvkbl

Ø- l-	fotrk dk uke	inuke	dk;ky;	LFkku	iqjLdkj
1.	सुश्री इन्दु अरोड़ा	सहायक प्रबन्धक	दि–ओरिएंटल इंश्योरेंश कंपनी लि.	प्रथम	3000/–
2.	श्रीमती रेनू शर्मा	प्रशासनिक अधिकारी	दि न्यू इंडिया इंश्योरेंश कंपनी लि.	द्वितीय	2500/–
3.	सुश्री सपना भाटिया	सहायक कंप्यूटर	भारत पर्यटन विकास लि.	तृतीय	2000/–
4.	श्री ऋषि कुमार कार्तिकेय	उप महा प्रबन्धक	ईपीआई	प्रोत्साहन–1	1200/–
5.	श्रीमती ऊषा कैथवास	सहायक प्रबन्धक	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंश कंपनी लि.	प्रोत्साहन–2	1200/–

5- lekpkj okpu ¼10-12-2021½ vk;kstd dk;ky; % Hkkjrh; dUVuj fuxe fyfeVsM

Ø- l-	fotrk dk uke	inuke	dk;ky;	LFkku	iqjLdkj
1.	श्री संदीप कुमार वर्मा	वरिष्ठ प्रबन्धक	पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड	प्रथम	3000/–
2.	श्रीमती रश्मि सिंह	वरिष्ठ प्रबन्धक	रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	द्वितीय	2500/–
3.	श्री आलोक पाल	उप प्रबन्धक	बीएचईएल, उद्योग क्षेत्र	तृतीय	2000/–
4.	श्री गौरव अब्रोल	उप प्रबन्धक	बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय	प्रोत्साहन–1	1200/–
5.	श्रीमती प्रेमलता	अधीक्षक	केंद्रीय भंडारण निगम	प्रोत्साहन–2	1200/–

बेटी की पाती.....माँ के नाम

हम तो बाबुल तेरे खेत की चिडिया चुग्गा चुगत उडी जाँऊ
हम तो बाबुल तोरे खूँटे की गईया जित हाँको हक जाऊँ
काहे को ब्याही विदेश

बहुत याद आती है माँ
तेरे हाथ की मीठी रोटी
मैके के आँगन का झूला
बीता जिसमे बचपन सलोना
चाट पापड़ी के वो दोने कभी तेरी मैं मैना थी
रोते–रोते नयन भिगोने
इमली अमरक भुट्टे के दाने
दौड–दौड़ के जाते भुनाने
गली मोहल्ले लुक्का छिप्पी
छत आँगन में भागा दौड़ी
कूद कूद कर खटिया तोड़ी
घर में सबकी रेल बनाना
धमा चौकड़ी खूब मचाना बाबा की परियों की रानी
कितना तुझे सताती थी मैं
कितना तुझे रुलाती थी
फिर भी मुझ बिन चैन नहीं था
कितने लाड़ लड़ाती थी तू
रोज तू मेरी नजर उतारे
कितना मुझको समझाती थी तू
मुझको पहला कोर खिला कर
तेरे दिल को ठंडक मिलती

कभी तेरी मैं बुलबुल होती
अब मैके की सब गलियाँ छूटी
बाबुल छूटा सखियाँ छूटी
माँ तेरी नटखट सी बिटिया
मर्यादाएँ सब सीख गई है
तूने जो संस्कार दिए थे
उन संस्कारों के बंधन में
उसने जीना सीख लिया है
हो गई सचमुच बडी सयानी
कुलदीपक होता है बेटा
बेटी का आँगन भी छूटा
क्या वह तेरी नही हैं जाई.....?
फिर क्यों बेटी होती है पराई
मां किसने है ये रीत बनाई
किसने है ये रीत बनाई .....?

दिव्या भारद्वाज (उप प्रबंधक)
नेशनल इंश्योरेंस कं लि.

श्रद्धांजलि

कवि और लेखक "मन्नू भंडारी"

हिन्दी साहित्य जिन रचनाकारों का नाम लिए बिना अधूरा है। उनमें एक रचनाकार का मन्नू भंडारी है। इनका जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ। मन्नू भण्डारी हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख रचनाकार थी। उन्होंने एम. ए. तक शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। धर्मयुग में धारावाहिक रूप से प्रकाशित उपन्यास 'आपका बंटी' से लोकप्रियता प्राप्त करने वाली मन्नू भंडारी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। स्त्री मन और पारिवारिक भावना को उन्होंने अपने कलम से सबके माध्यम से प्रस्तुत किया। इनके द्वारा रचित प्रमुख कहानी : एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आंखों देखा झूठ, आदि है। कहानी 'यही सच है' पर हिन्दी चलचित्र "रजनीगंधा" बनाई गई है। इसके अलावा आपका बंटी, एक इंच मुस्कान, महाभोज आदि प्रमुख उपन्यास है। मन्नू भंडारी द्वारा रचित नाटक 'बिना दीवारों का घर' है। इनके उत्कृष्ठ साहित्य लेखन के लिए इन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर–प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया गया। नई कहानी अभियान और हिंदी साहित्यिक अभियान के समय में लेखक निर्मल वर्मा, राजेंद्र यादव, भीष्म साहनी, कमलेश्वर इत्यादि ने उन्हें अभियान की सबसे प्रसिद्ध लेखिका बताया था। 1950 में भारत को आजादी मिले कुछ ही साल हुए थे, और उस समय भारत सामाजिक बदलाव जैसी समस्याओं से जूझ रहा था। इसीलिए इसी समय लोग नई कहानी अभियान के चलते अपनी–अपनी राय देने लगे थे, जिनमे भंडारी भी शामिल थी। उनके लेख हमेशा लैंगिक असमानता और वर्गीय असमानता और आर्थिक असमानता पर आधारित होते थे। मानव मन के दो पहलुओं के बीच के कशमकश को इन्होंने अपने साहित्य लेखन में प्राथमिकता दी है। मन्नू भंडारी ने 15.11.2021 को इस संसार को अलविदा कह दिया। मन्नू भंडारी का योगदान हिन्दी साहित्य में हमेशा अविस्मरणीय रहेगा।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
निगमित मुख्यालय
राजीव गांधी भवन, सफदरजंग हवाईअड्डा नई दिल्ली – 110 003
वेबसाइट : www.airportsindia.org.in & www.aai.aero